अग्रगामी

अग्रगामी

लेखिका के उपन्यास O Pioneers ! का अनुवाद

विला कैथर

नई दिल्ली

आधुनिक साहित्य प्रकाशन

मूल्य एक रुपया चार आने

प्रकाशक :
आधुनिक साहित्य प्रकाशन
पोस्ट बक्स नं० ६६४, नई दिल्ली

मुद्रक
श्री गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली

सूची

१. वीरान प्रदेश - - - ६

२. पड़ोस के खेत - - - ४५

३. शीतकालीन स्मृतियाँ - - - ६८

४. शहतूत का सफेद पेड़ - - - १०८

५. अलैक्जेण्ड्रा - - - १३५

एक नये देश, नये समाज और नई संस्कृति के निर्माण की यह कहानी है और वह भी विला कैथर जैसी सिद्धहस्त लेखिका की कलम से। यूरोप के विभिन्न देशों से आकर अमेरिका में बसे प्रथम लोगों के अटूट साहस, पुरुषार्थ और मानवी गुणों की यह गाथा न केवल अमेरिकनों बल्कि समस्त नवनिर्माताओं के लिए सदा प्रेरणा का स्रोत रहेगी।

: १ :

वीरान प्रदेश

: १ :

तीस वर्ष पहले की बात है। जनवरी का महीना था। नेब्रास्का के तूफानी पठार पर बसा हुआ हैनोवर नामक छोटा सा कस्बा आँधी से अपने-आपको बचाने की कोशिश में लगा था। मटियाले आसमान के नीचे उजाड़, मटमैले मैदान में खड़े मकानों के चारों ओर रुई जैसी साफ-सफेद बरफ का धुंध भँवर की तरह बल खाता हुआ चक्कर काट रहा था। घास के उस सख्त मैदान पर तरतीबवार खड़े हुए वे मकान ऐसे लग रहे थे मानो रातों-रात वहाँ लाकर जमा दिए गये हों। उनमें स्थायित्व न दिखाई देता था और हहराती हुई हवा उन पर से उड़ी चली जा रही थी। गाड़ियों के पहियों की गहरी लीक पड़ी हुई कस्बे की खास सड़क पर उस वक्त सख्त बरफ जमी थी। सड़क के दोनों ओर लकड़ी की बनी हुई इमारतों की ऊँची-नीची दो कतारें लड़खड़ाती हुई-सी खड़ी थीं जिनमें तिजारतखाने की दुकानें, दो बैंक, दवा की दुकान, हलवाई की दुकान, एक शराबखाना और एक डाकघर था। दोपहर के दो बजे दुकानदार खाना खा-पीकर अपनी दुकानों की कोहर से ढकी खिड़कियों के पीछे इतमीनान से बैठे थे। बच्चे स्कूल गये हुए थे और घटिया कपड़े के ओवर कोट पहने हुए कुछ अनपढ़ देहातियों के अलावा सड़क पर कोई नहीं दिखाई दे रहा था। इनमें से कुछ अपने

साथ अपनी बीबियाँ लाए थे और कभी-कभी एक दुकान से दूसरी दुकान के बीच लाल या रंग-बिरंगा कोई दुशाला चमककर रह जाता था। गाड़ियों में जुते भारी-भरकम घोड़े कम्बलों से ढके होने पर भी सरदी के मारे थरथरा रहे थे।

एक दुकान के सामने पटरी पर बैठा एक बच्चा बड़े दुख के साथ रो रहा था। वह करीब पाँच साल का होगा। उसका काला कोट उसके लिए बहुत बड़ा था जिसे पहनकर वह एक बौना-सा बूढ़ा लगता था। उसकी टोपी कानों तक खिंची हुई थी; नाक और फूले हुए गाल सरदी से फटकर सुर्ख हो गए थे। वह धीरे-धीरे रो रहा था और आते-जाते लोगों ने उस पर ग़ौर न किया। किसी को रोकने में उसे डर लगता था और दुकान के अन्दर जाकर किसी से मदद माँगने में भी उसे संकोच होता था और इस-लिए टेलीग्राफ के खम्भे पर नज़र गड़ाए, अपनी लम्बी आस्तीनों को मरोड़ते हुए वह ठिनक-ठिनककर कह रहा था, "मेरी बिल्ली, हाय मेरी बिल्ली, सरदी के मारे मर जायगी।" खंभे के ऊपर एक कांपती हुई भूरी बिल्ली पेट के बल बैठी थी और उसने घबराहट के साथ लकड़ी को अपने पंजों से जकड़ रखा था। लड़के की बहन डॉक्टर के यहाँ जाते समय उसे एक दूसरी दुकान में छोड़ गई थी और उसकी नामौजूदगी में एक कुत्ता उस बिल्ली के पीछे ऐसा पड़ा कि बेचारी को खंभे पर चढ़ जाने के अलावा और कोई रास्ता न सूझा। वह कभी इतनी ऊँची न चढ़ी थी और अब उसे जरा भी हिलने-डुलने में डर लग रहा था। बिल्ली का मालिक निराशा में खो चुका था। गाँव का वह छोटा सा लड़का था और यह कस्बा उसके लिए एक बहुत ही अजीब और हैरानी पैदा करने वाली जगह थी, जहाँ के लोगों के वस्त्र सुन्दर और हृदय कठोर थे। उसे शरम आ रही थी और अटपटा-सा लग रहा था। वह कहीं छिप जाना चाहता था ताकि उसे देखकर कोई हँसे नहीं। लेकिन उस समय वह इतना दुखी था कि किसी के हँसने तक का उसे खयाल न था। अन्त में, उसे आशा की एक किरण दिखाई दी—उसकी बहन आ रही थी और वह अपने भारी जूतों में उसकी तरफ़ दौड़ पड़ा।

उसकी बहन एक लम्बी, तगड़ी लड़की थी और तेजी व मजबूती के साथ इस तरह आगे बढ़ी चली आ रही थी कि मानो अच्छी तरह जानती हो कि उसे कहाँ जाना है और आगे क्या करना है। वह एक लम्बा, मरदाना ओवरकोट एक जवान सिपाही की शान के साथ पहने हुई थी। उसके सिर पर एक गोल मखमली टोपी थी जिसमें एक मोटा नकाब बँधा था। उसका चेहरा गम्भीर और विचारमग्न था और उसकी निर्मल नीली आँखें प्रत्यक्षतः कुछ न देखते हुए भी सुदूर पर इस एकाग्रता के साथ टिकी थीं कि मानो उसे कोई व्यथा है। जब तक उसके भाई ने उसका कोट पकड़कर न खींचा वह उसे न देख पाई। एक साथ रुककर अपने भाई के भीगे चेहरे को पोंछने के लिए वह झुकी।

"क्यों, एमिल, मैंने तुम्हें दुकान के अन्दर रहने के लिए कहा था, न कि बाहर निकल आने के लिए ? क्या बात है ?"

"मेरी बिल्ली, दीदी, मेरी बिल्ली। एक आदमी ने उसे बाहर निकाल दिया और एक कुत्ते ने उसे वहाँ चढ़ा दिया।" उसकी तर्जनी उँगली कोट की आस्तीन में से निकलकर खंभे पर बैठी दुख की मारी बिल्ली की ओर इशारे में उठ गई।

"मैंने पहले ही कहा था कि अगर तुम इसे अपने साथ लाओगे तो कोई-न-कोई मुसीबत जरूर होगी। तुम मुझे इतना तंग क्यों करते हो, एमिल ? लेकिन नहीं, गलती मेरी ही थी।" खंभे के तले पहुँच, दोनों हाथ फैलाकर उसने पुकारा, "बिल्लो, बिल्लो," पर बिल्ली सिर्फ म्याऊँ कर और दुम हिलाकर रह गई।

"इस तरह यह न उतरेगी। किसी को ऊपर चढ़ना होगा। देखती हूँ शायद कार्ल मिल जाय। शायद वह कुछ कर सके। पर तुम्हें रोना बन्द करना होगा, नहीं तो मैं एक कदम भी न हिलूँगी। तुम्हारा गुलूबन्द कहाँ गया ? दुकान में ही छोड़ आए क्या ? खैर, कोई बात नहीं। लो, यह बाँधे देती हूँ।"

अपने सिर से भूरा रूमाल उतारकर उसने लड़के के गले से बाँध

दिया। उसी समय एक मैला-कुचैला सौदागर एक दुकान से निकलकर शराबखाने की ओर जा रहा था कि अलैक्जेण्ड्रा को अपने सिर से रूमाल उतारते देख रुक गया और बुद्धू की तरह उसके चमकते हुए बालों की ओर टकटकी बाँधकर देखने लगा। अपने मुँह से सिगार निकाल और उसके गीले हिस्से को अपने ऊनी दस्तानों की उँगलियों के बीच दबाकर निहायत भोलेपन और बेवकूफी के साथ वह बोल उठा, "वाह री लड़की, क्या सुन्दर बाल हैं तेरे!" अलैक्जेण्ड्रा ने शेरनी जैसी अपनी खौफनाक निगाह से उसे फेल कर दिया और जरूरत से ज्यादा सख्ती के साथ अपना निचला होंठ भींच लिया। सौदागर की ऐसी सिट्टी गुम हुई कि उसके हाथ से सिगार गिर पड़ा और आँधी के थपेड़े खाता हुआ दुम दबाकर वह शराबखाने की तरफ चल पड़ा। शराबफरोश से गिलास लेते वक्त भी उसका हाथ काँप रहा था। उसकी कमजोर इश्कमिजाजी पहले भी कुचली जा चुकी थी पर इस बेदर्दी से नहीं। उसने अपने-आपको गया-बीता और नाचीज समझा, मानो किसी ने उसे ठग लिया हो।

इधर सौदागर अपने आपे में आने की कोशिश में शराब पी रहा था, और उधर कार्ल लिन्सट्रम की तलाश में अलैक्जेण्ड्रा दवाफरोश के यहाँ पहुँची। कार्ल वहीं था। अलैक्जेण्ड्रा ने अपना हाल बताया और कार्ल उसके साथ उस ओर हो लिया जहाँ कि एमिल खंभे के नीचे अभी तक बैठा था।

"अगर मैं गिरूँ तो मुझे लपक लेना, एमिल," कहकर वह ऊपर चढ़ने लगा। वह लम्बा, दुबला-पतला और तंग सीने का करीब पन्द्रह बरस का लड़का था। अलैक्जेण्ड्रा ने उसे बेचैन नजरों से देखा। नीचे काफी कड़ाके की सरदी थी। बिल्ली तिल-भर भी न सरकी। कार्ल को खंभे के आखिरी सिरे तक चढ़ना पड़ा और फिर बिल्ली को छुड़ाने में भी काफी दिक्कत उठानी पड़ी। नीचे उतरकर उसने बिल्ली को उसके रुआंसे मालिक के हाथ में दे दिया। "अब दुकान में इसे ले जाकर, एमिल, गरमा लो," कहकर उसने एमिल के लिए दरवाजा खोल दिया। "एक मिनट ठहरो,

अलैक्जेण्ड्रा ! आओ, गाड़ी में तुम्हारे साथ मैं अपने घर तक चला चलूँ। क्या तुम डॉक्टर से मिल लीं ?"

"हां, वह कल घर आयेगा। पर कहता है कि पिताजी की हालत सुधर नहीं सकती; अब वह अच्छे नहीं हो सकते।" अलैक्जेण्ड्रा का होंठ थिरक-कर रह गया। सर्द सड़क पर वह नजर गड़ाए इस तरह देखती रही मानो किसी चीज का मुकाबला करने के लिए साहस बटोर रही हो, मानो किसी ऐसी परिस्थिति पर काबू पाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रही हो जिसका सामना करना बहुत मुश्किल होते हुए भी बेहद जरूरी था। हवा उसके भारी कोट के किनारे फड़फड़ाने लगी।

कार्ल कुछ न बोला पर अलैक्जेण्ड्रा ने उसकी हमदर्दी महसूस की। वह भी अकेला ही था। उसकी आँखों में विचारमग्नता और चेष्टाओं में निश्चलता थी। कुछ क्षणों तक वे दोनों भटके हुए मुसाफिरों की तरह हैरान उस सड़क के एक कोने में चुपचाप खड़े रहे।

एमिल उस समय मैरी टोवेस्की नामक एक छोटी लड़की से खेल रहा था। मैरी के लिए वह जगह नई थी क्योंकि वह अपने चाचा जो-टोवेस्की से मिलने अपनी माँ के साथ ओमेहा से आई हुई थी। गुड़िया जैसे भूरे घुँघराले बाल, लाल बुलबुले मुँह और गोल-गोल पीली-भूरी आँखों वाली वह लड़की थी। हरेक उसकी आँखें देखा करता था; भूरी पुतलियों में सुनहरी चमक के कारण वे सुनहरी पत्थर जैसी दिखाई देती थीं।

इतने सुन्दर साथी से एमिल को अलग कर देना अलैक्जेण्ड्रा को अच्छा न लगा और उसने उन्हें बिल्ली को छेड़ने दिया। इसी समय जो टोवेस्की शोर मचाता हुआ आया और उसने अपनी भतीजी को उठाकर अपने कन्धे पर बिठा लिया ताकि हरेक उसे देख सके। जो टोवेस्की के अपने बच्चे सब लड़के थे और उसे यह नन्हीं बच्ची बहुत प्यारी थी। उसके दोस्तों ने उसे घेर लिया और वे मैरी को प्यार से छेड़ने लगे। वे सब उसे देखकर बहुत खुश थे क्योंकि उन्होंने इतना प्यारा और इतने एतिहात से पाला-पोसा बच्चा न देखा था। जो के हर साथी ने उसे एक-एक मिठाई का लिफाफा दिया

और उसने बारी-बारी से सबको चूमा, हालांकि उसे गाँव की बनी मिठाई पसन्द न थी। शायद इसीलिए उसे एमिल का खयाल आया। "मुझे नीचे उतार दो, चाचा" वह बोली, "उस लड़के को मैं थोड़ी मिठाई दूँगी।" शान के साथ वह एमिल की ओर चल दी और उसके प्रशंसकों की टोली उसके पीछे थी। एक नया घेरा बनाकर वे एमिल को छोड़ने लगे। एमिल ने शरम से अपनी बहन की टाँगों में मुँह छिपा लिया और अलैक्जेण्ड्रा उसे झिड़कने लगी।

खेतिहर लोग घर जाने की तैयारी में लगे थे। औरतें अपना सामान सँभाल रही थीं और अपने लाल दुशालों को सिर से लपेटकर उनमें पिन लगा रही थीं। मर्द अपने बचे हुए पैसों से तम्बाकू और मिठाई खरीदने लगे थे और एक-दूसरे को अपने नये जूते, दस्ताने व नीली ऊनी कमीजें दिखा रहे थे। तीन फक्कड़ दालचीनी मिली हुई कोरी शराब पी रहे थे जो कहा जाता था कि सरदी से बचाने में कारगर है। हर घूँट के बाद वे तीनों चटाखे लेते थे। उनकी वाचालता ने उस जगह की हर आवाज को मन्द बना रखा था और जरूरत से ज्यादा गरम वह शराबखाना तम्बाकू के धुएँ, सीले ऊनी कपड़े और मिट्टी के तेल की गन्ध के साथ ही उन लोगों की जोशीली आवाजों से भरा हुआ था।

कार्ल ने कहा, "आओ, मैंने घोड़ों को पानी पिला दिया है और गाड़ी तैयार है।" उसने एमिल को बाहर लाकर गाड़ी में बिठा दिया। गरमी ने एमिल को उनींदा बना दिया था पर फिर भी वह अपनी बिल्ली को पकड़े रहा।

"कार्ल, तुम बहुत अच्छे आदमी हो। तुमने इतने ऊपर चढ़कर मेरी बिल्ली उतार दी। जब मैं बड़ा हो जाऊँगा मैं भी छोटे बच्चों की बिल्लियाँ उतार दिया करूँगा," उसने ऊँघते हुए कहा। घोड़े पहली पहाड़ी पार भी न कर पाए थे कि वह और उसकी बिल्ली गहरी नींद में खो गए।

यद्यपि उस समय चार ही बजे थे पर शीतकालीन दिन समाप्त हो

चला था। दक्षिण-पश्चिम की सड़क सुरमई आसमान में झलकते एक हल्के तरल प्रकाश की ओर चली जा रही थी। वह प्रकाश उन दो उदास मुखों पर पड़ रहा था जो उसी ओर मुँह किये चुपचाप बैठे थे। लड़की की आँखें एक व्यथापूर्ण जटिलता के साथ भविष्य को देखती और लड़के के मलिन नेत्र अतीत का पुनरावलोकन करते प्रतीत हो रहे थे। वह छोटा सा कस्बा वृक्षविहीन भूमि के उतार-चढ़ाव में ऐसा खो चुका था मानो उसका अस्तित्व ही न हो, और अब बरफ से जमी हुई सख्त धरती ने उन्हें अपनी छाती में समा लिया था। बीच-बीच में कहीं-कहीं एक-दो बाड़ी या आसमान से टक्कर-सी लेती हुई कोई पवन-चक्की या किसी गड्ढे में समाया हुआ कोई कच्चा मकान दिखाई दे जाता था। लेकिन सबसे बड़ी असलियत तो धरती ही थी जो अपनी उदास गोद में मानव-समाज की लड़खड़ाती चेष्टाओं को समाए हुई थी। उस भीषण कठोरता का सामना करते रहने से ही कार्ल के मुँह में कड़वाहट आ गई थी, क्योंकि उसने महसूस किया था कि वह धरती अछूती ही रहना चाहती है, अपनी भयानक शक्ति, अद्भुत बर्बर सौन्दर्य और अपनी अनवरत शोकाकुलता को सुरक्षित बनाए रखना चाहती है।

बरफ़ जमी सड़क पर गाड़ी हिचकोले खाती चली जा रही थी। आज दोनों साथी अन्य दिनों की निस्बत कम बोल रहे थे मानों सर्दी उनके हृदयों को भेदकर पैठ गई हो।

"क्या आज लू और ओस्कर लकड़ी काटने गये थे?" कार्ल ने पूछा।

"हाँ, लेकिन अफसोस है मैंने उन्हें इस ठण्ड में जाने दिया। पर अगर लकड़ी कम हो जाती हैं तो माँ हायतोबा मचाने लगती है।" अलैक्जेण्ड्रा ने अपने माथे पर आई हुई बालों की लट पीछे हटाते हुए कहा। "अगर पिताजी मर गए, कार्ल, तो हम लोगों का क्या होगा? मैं यह सोचने की हिम्मत तक नहीं कर पाती। अच्छा तो यही है कि हम सब भी उनके साथ मर जायँ और हमारी कब्रों पर घास उग आए।"

कार्ल ने उत्तर न दिया। सामने ही एक कब्रिस्तान था जहाँ सचमुच

कब्रों पर लाल खुरदरी घास उग आई थी और उस घास ने तार के बने अहाते तक को ढक रखा था।

अलैक्जेन्ड्रा ने अपनी आवाज में कुछ दृढ़ता लाते हुए कहा, "हालांकि मेरे भाई ताकतवर हैं और खूब मेहनत करते हैं, पर हम हमेशा से पिताजी पर इतने निर्भर रहते आए हैं समझ में नहीं आता कि हम क्या करेंगे। मुझे तो ऐसा लगता है कि अब आगे कुछ करने को है ही नहीं।"

"क्या तुम्हारे पिताजी इस बारे में जानते हैं?"

"मेरा खयाल है, जानते हैं। दिन-भर लेटे रहते हैं और उँगलियों पर कुछ गिना करते हैं। मैं समझती हूँ वह हिसाब लगाया करते हैं कि हम लोगों के लिए क्या छोड़े जा रहे हैं। उन्हें इस बात की खुशी है कि इस सरदी के मौसम में मेरी मुर्गियाँ ठीक तरह से अंडे दे रही हैं जिससे कुछ पैसा मिल जाता है। मैं चाहती हूँ कि वह इन बातों के बारे में न न सोचा करें, पर उनके पास बैठने का मुझे वक्त भी तो नहीं मिलता।"

"अगर मैं अपना बाइस्कोप किसी दिन शाम को ले आऊँ तो उन्हें पसंद आएगा?"

अलैक्जेण्ड्रा ने उसकी ओर मुड़कर देखा। "खूब कहा। तुम्हारे पास बाइस्कोप है क्या?"

"हाँ, पीछे गाड़ी में रखा हुआ है। आज दिन-भर मैंने उसे दवाइयों की दुकान के तहखाने में चलाया। खूब अच्छा चलता है, बड़ी-बड़ी तस्वीरें आती हैं।"

"कौनसी तस्वीरें हैं?"

"यही जर्मनी में शिकार और रॉबिन्सन क्रूसो और मनुष्यभक्षियों की अजीब तस्वीरें हैं।"

अलैक्जेण्ड्रा दरअसल खुश नजर आई। जिन लोगों को जल्दी बड़ा होना पड़ता है उनमें अक्सर काफी बचपन रह जाता है। "अपना बाइस्कोप जरूर लाना, कार्ल! मुझे उसे देखने की बहुत इच्छा है और मुझे यकीन है कि पिताजी भी खुश होंगे। क्या तस्वीरें रंगीन हैं? तब तो

पिताजी जरूर पसंद करेंगे। शहर से लाये हुए मेरे कलेण्डर उन्हें बहुत पसंद आते हैं, काश मुझे और मिल सकते। अच्छा, अब तुम मुझे यहीं छोड़ दो। तुम्हारा साथ बहुत अच्छा रहा।"

कार्ल ने घोड़े रोक दिए और काले आकाश की ओर संदिग्ध दृष्टि से देखा। "काफी अँधेरा हो चुका है। ये घोड़े तुम्हें घर तो ले ही जायँगे पर मैं लालटेन जला देता हूँ, हो सकता है तुम्हें जरूरत पड़े।"

अलेक्जेण्ड्रा को लगाम थमाकर वह गाड़ी के पिछले हिस्से में पहुँचा और अपने ओवरकोट का एक तम्बू-सा बनाकर बैठ गया। दस-बारह बार की कोशिश के बाद वह लालटेन जला पाया और उसे एक कम्बल से आधा ढककर उसने अलेक्जेण्ड्रा के सामने रख दिया ताकि उसकी आँखों पर रोशनी न पड़ सके। "ठहरो, मुझे अपना बक्स भी ढूँढ लेने दो। लो यह मिल गया। अच्छा अलेक्जेण्ड्रा, अब मैं चलूँ। चिंता न करना।"

कार्ल जमीन पर कूद पड़ा और खेतों में से दौड़ता हुआ अपने घर की ओर चल दिया। "हू···हू हू।" उसने एक टीले के पास वाले रेतीले नाले में गायब होते हुए आवाज दी। हवा ने एक गूंज की तरह प्रत्युत्तर दिया, "हू····हू हू।" अलेक्जेण्ड्रा अकेली गाड़ी चलाने लगी। उसकी गाड़ी की खड़खड़ाहट हवा की गर्जना में खो चुकी थी, पर उसके पैरों के बीच में रखी हुई लालटेन सड़क पर एक प्रकाश-बिन्दु बनाती हुई उसे उस अंधकारमय प्रदेश में गहराई के साथ लिये चली जा रही थी।

: २ :

पाला खाये हुए उस वीरान प्रदेश के एक टीले पर लकड़ी का बना हुआ वह नीचा मकान था जिसमें जॉन बर्गसां अंतिम साँसें ले रहा था। अन्य मकानों की अपेक्षा बर्गसां का मकान ढूँढ़ना आसान था क्योंकि उसके सामने ही एक छिछली, दलदली नदी थी जो कभी बहती थी और कभी स्थिर हो जाती थी। किसी भी नये प्रदेश की हैरान करने वाली चीजों में मानव-चिह्नों का अभाव सबसे अधिक निराश और निरुत्साह करता है।

नाले पर बने हुए मकान छोटे और निचले थे। अधिकांश मकान मिट्टी के बने हुए थे और वे धरती के ही दूसरे रूप थे। सड़कें घास पर बनी हुई हलकी रेखाएँ थीं और खेतों में हल के निशान इतने नगण्य थे कि मानव प्रयास का परिणाम न दिखाई देकर पत्थरों पर अंकित प्राग्-ऐतिहासिक जातियों के चिह्नों की तरह प्रकृति की खरोंच मालूम होते थे।

ग्यारह साल के लम्बे अरसे में जॉन बर्गसां जिस जंगली जमीन को उपजाऊ बनाने आया था उस पर कोई असर न डाल सका था। वह जमीन आज भी जंगली थी और उसका वहशीपन कभी भी फूट पड़ सकता था। ऐसा लगता था मानो दुर्भाग्य उस पर मंडरा रहा हो। वह मनुष्य के प्रतिकूल थी। जॉन बर्गसां अपने कमरे की खिड़की से बाहर देखते हुए यही सोच रहा था। सुरमई रंग की जमीन जो उसके मकान के दरवाजे से शुरू हुई थी मीलों तक उसी तरह चली गई थी। बर्गसां अपने और क्षितिज के बीच के हर टीले, हर नाले और हर ढाल को अच्छी तरह जानता था। दक्षिण में उसके जोते हुए खेत थे, पूरब में मिट्टी के बने हुए घोड़ों के अस्तबल, मवेशियों का बाड़ा, और तालाब—और फिर घास-ही-घास।

बर्गसां उन कठिनाइयों को सोच रहा था जिन्होंने उसे आगे बढ़ने से रोक लिया था। एक सरदी के बरफीले तूफान में उसके मवेशी बरबाद हो चुके थे। पिछली गरमी में उसके एक खेत जोतने वाले घोड़े ने एक गड्ढे में गिरकर अपनी टाँग तोड़ ली थी और बाद में उसे गोली मारनी पड़ी थी। एक दूसरी गरमी में उसके सूअर हैजे से मर गए थे और उसका एक कीमती घोड़ा साँप के जहर से जाता रहा था। न जाने कितनी बार उसकी फसलें बरबाद हो चुकी थीं। लू और एमिल के बीच के उसके दो लड़के जाते रहे थे और बीमारी व मौत की उसे कीमत अदा करनी पड़ी थी। अब जब कि वह ऋण से मुक्त हो चुका था, उसकी मौत सामने आ खड़ी हुई थी। वह अभी छियालीस वर्ष का ही था और इस उम्र में मरना उसने न सोचा था।

बर्गसां ने इस जमीन पर पहले पाँच साल कर्ज लेने में और पिछले छः साल कर्ज चुकाने में बिताए थे। वह रेहन की रकम अदा कर चुका था और फिर उसी हालत में आ गया था जहाँ से उसने शुरू किया था। अब सिर्फ जमीन उसकी अपनी थी।

जॉन बर्गसां का पुराने जमाने का खयाल था कि जमीन हर हालत में वांछनीय है। लेकिन यह जमीन तो एक पहेली थी। यह उस अड़ियल घोड़े की तरह थी जो हर चीज को तोड़-फोड़ डालता है और जिसे कोई काबू में नहीं कर पाता। बर्गसां का खयाल था कि अभी तक कोई उसे ठीक तरह से जोत नहीं पाया है, और इस बारे में वह अक्सर अलैक्जेण्ड्रा के साथ सलाह-मशविरा किया करता था। उनके पड़ोसी तो खेती के बारे में और भी कम जानते थे। ज्यादातर लोगों ने तो यहाँ आने से पहले खेती की ही नहीं थी। वे दर्जी, लुहार, सिगरेट बनाने वाले आदि थे और बर्गसां खुद भी जहाजों की मरम्मत का काम करता था।

कई हफ्तों से जॉन बर्गसां इन्हीं बातों के बारे में सोचा करता था। रसोई के पास ही उसकी बैठक थी और वहीं उसका बिस्तरा लगा हुआ था। वह अक्सर अलैक्जेण्ड्रा को बुलाकर ऐसी ही समस्याओं पर बातें किया करता था। अलैक्जेण्ड्रा बारह बरस की भी न हुई थी कि अपने पिता की मदद करने लगी थी, और जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई उसका पिता उसकी सूझबूझ और उसके फैसलों पर निर्भर रहने लगा था। उसके लड़के मेहनत करने में कभी पीछे न रहते थे पर उनसे बात करने में वह ज्यादातर चिढ़ जाता था। अलैक्जेण्ड्रा ही उसे अखबार पढ़कर सुनाती और बाजार के हाल-चाल बताती थी। वही अपने पड़ोसियों की गलतियों से सबक सीखना जानती थी। वही हमेशा यह बता सकती थी कि एक घोड़े पर कितना खर्च हुआ है और अमुक सूअर का वजन कांटे पर चढ़ते वक्त क्या होगा। लू और ऑस्कर मेहनती जरूर थे पर बर्गसां कभी उन्हें यह न समझा पाया था कि अपने काम में दिमाग किस तरह लगाया जाय।

अलैक्जेण्ड्रा का पिता अपने-आप अक्सर कहा करता था कि वह लड़की अपने दादा जैसी है, जिसका अर्थ दूसरे शब्दों में यह था कि वह बुद्धिमती है। जॉन बर्गसां का बाप जहाज बनाने का काम करता था और काफी ताक़तवर और कुछ पैसे वाला आदमी था। उसने अपनी जिन्दगी के पिछले वर्षों में एक संदिग्ध चरित्र की स्त्री से दूसरी शादी की थी। वह स्त्री उससे कहीं कम उम्र की थी और उसे हर तरह की ज़्यादती करने के लिए मजबूर करती थी। यह विवाह बूढ़े की काम-मूढ़ता का परिणाम था, उस ताकतवर आदमी की नादानी थी जो कि बूढ़ा बनना बरदाश्त न कर सकता था। उस अनाचारी पत्नी ने कुछ वर्षों में ही अपने पति के जीवन भर के सदाचार को पथभ्रष्ट बना दिया था। वह सट्टा खेलने लगा और अपनी सम्पत्ति व गरीब नाविकों की सौंपी हुई सम्पत्ति खो बैठा और अंत में अपनी संतान के लिए कुछ न छोड़कर अपमानित होकर मरा। लेकिन सब कुछ कहने-सुनने के बाद यह मानना पड़ेगा कि उसने सिर्फ अपने हुनर और अपनी दूरदर्शिता से बिना पूंजी अपना शानदार कारोबार खड़ा किया था और अपनी मर्दानगी साबित कर दी थी।

जॉन बर्गसां को अपनी बेटी में वही आत्मबल, चीजों को हल करने का वही सीधा-सच्चा तरीका नजर आता था जो कि उसने अपने पिता के खुशहाल दिनों में पाया था। चाहता तो वह यह था कि यह गुण उसके किसी बेटे में होता पर यह कोई अपनी मर्जी की चीज तो थी ही नहीं। दिन-प्रतिदिन अपने कमरे में पड़े रहकर उसने यह स्थिति स्वीकार कर ली थी और वह ईश्वर का आभारी था कि आखिर उसके परिवार में एक ऐसा व्यक्ति है जिसे वह अपने परिवार और मुश्किल से हासिल की हुई अपनी जमीन का भविष्य सौंप सकता था।

शीतकालीन संध्या समाप्त हो चली थी। रोगी ने रसोई में अपनी पत्नी की दियासलाई जलाने की आवाज सुनी और दरवाजे की दरारों में से लैम्प की रोशनी चमक उठी। ऐसा लगता था मानो वह रोशनी बहुत दूर से आ रही है। रोगी ने दर्द के साथ करवट बदली और अपने सफेद

हाथों को देखा जिनमें अब काम करने की ताकत न रही थी। अब वह इस दुनिया को छोड़ने के लिए तैयार था, उसने ऐसा महसूस किया। ऐसा कैसे हो गया, यह वह नहीं जानता था। पर अब वह अपने खेत की गहराई में, जहाँ कि कोई भी हल उसे कभी न छू सकता था, सदा के लिए आराम करना चाहता था। गलतियाँ करते-करते वह थक गया था। अब वह अपनी उलझनें दूसरों को सौंप देना चाहता था।

अलैक्जेण्ड्रा ने कमरे में आकर तकियों के सहारे उसे ठीक तरह से बिठा दिया।

"बेटी, लड़कों को बुलाओ। मैं उनसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

"वे घोड़ों को खिला रहे हैं। अभी हाल बाहर से आये हैं। कहिए तो मैं उन्हें बुला लूँ?"

पिता ने एक गहरी साँस ली। "नहीं, नहीं, उन्हें काम करने दो। अलैक्जेण्ड्रा, तुम्हें अपने भाइयों के लिए सब कुछ करना पड़ेगा। सारा भार तुम्हीं पर पड़ेगा।"

"मैं अपनी तरफ से कुछ न उठा रखूंगी, पिताजी!"

"उन्हें नाउम्मीद होकर अपने चाचा की तरह शहर मत भाग जाने देना। मैं चाहता हूँ कि वे इसी जमीन पर रहें।"

"हम यहीं रहेंगे, पिताजी! हम इस जमीन को कभी न छोड़ेंगे।"

रसोई में भारी पैरों की आहट सुनाई दी। अलैक्जेण्ड्रा ने दरवाजे में जाकर इशारे से अपने भाइयों को बुलाया। सत्रह और उन्नीस बरस के वे दो छरहरे लड़के थे। उनके पिता ने कुछ ढूँढती-सी निगाह से उन्हें देखा हालाँकि उस अँधेरे में उनके चेहरे अच्छी तरह नहीं दिखाई दे रहे थे। ये ही वे लड़के थे जिनके बारे में उसे कोई ग़लतफहमी न थी। चौड़ा सिर और भारी कंधे वाला बड़ा लड़का ओस्कर था। छोटा लड़का फुर्तीला पर डगमगाने वाला था।

"लड़को," पिता ने थकान के साथ कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम मिल कर अपनी जमीन को बनाए रखो और अपनी बहन का कहना मानो। जब से

मैं बीमार पड़ा हूँ अलैक्जेण्ड्रा से अपने मन की बातें कहता आया हूँ। वह मेरी सब इच्छाएँ जानती है। मैं नहीं चाहता कि तुम बच्चे आपस में लड़ो। जब तक एक घर है तब तक एक ही मुखिया होना चाहिए। अलैक्जेण्ड्रा सबसे बड़ी है और मेरी इच्छाएँ जानती है। हो सकता है वह गलती करे पर मुझसे ज्यादा गलतियाँ न करेगी। शादी करने के बाद अगर तुम अपना अलग घर बनाना चाहो तो इस जमीन का हिस्सा कानून के मुताबिक तुम्हें मिल जायगा। लेकिन अगले कुछ सालों तक तुम्हें सख्त मेहनत करनी पड़ेगी और सबको एक साथ मिलकर रहना होगा।"

ऑस्कर, जो आम तौर पर सबसे बाद में बोला करता था, उस दिन पहले बोला क्योंकि वह उम्र में बड़ा था। "पिताजी! आपके कुछ कहे बिना ही आपकी सब इच्छाएँ पूरी होंगी। हम सब मिलकर काम करेंगे।"

"और अलैक्जेण्ड्रा का कहना मानना, बेटो! इसे खेत में काम मत करने देना। अब इसकी कोई जरूरत नहीं। जब जरूरी समझो किसी आदमी को रख लेना। अण्डे और मक्खन बेचकर वह किसी भी आदमी की रोजी से ज़्यादा कमा सकती है। यह मेरी गलती थी कि मैंने पहले यह न जाना था। अपनी माँ की बातों का बुरा न मानना। अगर वह चाहे तो उसे अपने बगीचे में फलों के पेड़ लगाने देना, चाहे और काम कितने भी जरूरी क्यों न हों। वह हमेशा तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छी माँ रही है।"

जॉन बर्गसां ने अपने स्तर से नीचे किन्तु एक अच्छी गृहिणी से विवाह किया था। वह गौरवर्णा, स्थूल स्त्री अपने पुत्र ऑस्कर की तरह ही भारी और मुलायम थी। ग्यारह वर्ष तक वह उन परिस्थितियों में घर की व्यवस्था बनाने का प्रशंसनीय प्रयास करती रही थी जहाँ कि किसी भी प्रकार की व्यवस्था कायम करना बहुत कठिन था। श्रीमती बर्गसां की पुरानी आदतें छूटे नहीं छूटती थीं और अपने पुराने जीवन की दिनचर्या इस नये वातावरण में दोहराने के लिए किये गए उनके अथक परिश्रम के कारण ही परिवार का नैतिक गठन बना रहा और वे लोग लापरवाह न बन सके।

अलैक्जेण्ड्रा अक्सर कहा करती थी कि अगर उसकी माँ को रेगिस्तान

में छोड़ दिया जाय तो वह अपनी मुक्ति के लिए ईश्वर को धन्यवाद देकर एक बगीचा बनाती और फिर अचार-मुरब्बे बनाने में लग जाती। अचार-मुरब्बे बनाना श्रीमती बर्गसां का शौक था। लगड़ी तो वह थी ही और नदी के किनारे की झाड़ियों में शिकारी की तरह जङ्गली अंगूर और बेर की तलाश में घूमा करती थी। वह जङ्गली बेरों में नींबू के छिलके डालकर पीला खट-मिट्ठा मुरब्बा बनाती और कभी-कभी टमाटरों की गहरी गाढ़ी चटनी तैयार करती थी। जब अचार-मुरब्बा बनाने के लिए कोई फल न मिलता तो वह तरह-तरह की चटनी बनाने लगती थी। इन कामों में वह इतनी चीनी खर्च कर देती थी कि कई बार खल जाता था।

वह बहुत अच्छी माँ थी। जब उसके बच्चे बड़े हो गए और रसोई के उसके काम में कोई दखल न देने लगा तो वह खुश रहने लगी। उसने जॉन बर्गसां को दुनिया के इस छोर पर ला पटकने के लिए कभी माफ नहीं किया था, लेकिन चूँकि अब वह यहाँ आ चुकी थी अकेले ही अपने पुराने जीवन की पुनर्रचना करना चाहती थी। अगर उसे किसी गुफा में भी रहना होता और अगर वहाँ आलों में काँच के मर्तबान और मेजपोश रखे होते तो फिर उसे कोई ग़म न था। वह अपनी पड़ोसिनों के फ़ूहड़पन की आलोचना करती रहती थी और वे उसे घमण्डी औरत समझती थीं। एक बार वह अपनी पड़ोसिन श्रीमती ली से मिलने गई पर श्रीमती ली कहीं छिप गई ताकि वह उसे नंगे पैर न देख सके।

: ३ :

जॉन बर्गसां की मृत्यु के छः महीने बाद जुलाई मास के एक रविवार की दोपहर को कार्ल लिन्स्ट्रम अपनी रसोई में बैठा था। उसके हाथ में एक सचित्र पत्रिका थी और वह विचार में डूबा हुआ था कि पहाड़ी सड़क पर उसने एक गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनी। वह बर्गसांओं की गाड़ी थी और ऐसा लगता था कि वे कहीं सैर करने जा रहे हों। आगे की सीट पर ऑस्कर और लू अपने वे कोट और टोपियाँ पहने बैठे थे जिन्हें रविवार के

अलावा और कभी वे पहनते न थे। पिछली सीट पर एमिल अलैक्जेण्डा के साथ अपनी गुलाबी धारियों वाली कमीज़ और नई पतलून पहने शान के साथ बैठा था, जो कि उसके पिता की पुरानी पतलून में से बनी थी।

ऑस्कर ने घोड़े रोककर कार्ल की तरफ हाथ हिलाया। कार्ल अपनी टोपी उटाकर खरबूजों के खेत में से दौड़ता हुआ चला आया। "कहो, हमारे साथ चलोगे?" लू ने पूछा। "हम लोग ईवार पगले के यहाँ झूले वाला पलंग खरीदने जा रहे हैं।"

"जरूर चलूँगा," कार्ल ने हाँपते हुए जवाब दिया और पहिये पर पैर रखकर एमिल के पास आ बैठा। "ईवार का तालाब देखने की मेरी हमेशा से मर्जी थी, कहते हैं वह यहाँ सबसे बड़ा तालाब है। कहो एमिल, नई कमीज पहनकर ईवार के यहाँ जाने में तुमको डर नहीं लगता? अगर वह तुम्हारी कमीज़ उतार ले तो?"

"अगर तुम लोग मेरे साथ नहीं होते तो मुझे डर लगता।" एमिल ने मुस्कराकर कहा। "क्या कभी तुमने उसे गुर्राते हुए देखा है, कार्ल? लोग कहते हैं कि रात को वह गुर्राता हुआ फिरता है क्योंकि उसे डर है कि भगवान उसे मार डालेंगे। माँ कहती है कि उसने जरूर कोई बुरा काम किया है।"

"नहीं, एमिल, वह बुरा आदमी नहीं है," कार्ल ने समझाते हुए कहा। "वह हमारी घोड़ी का इलाज करने आया था। घोड़ी ने कच्ची मकई खा ली थी और उसका पेट फूलकर हौज बन गया था। उसने घोड़ी को उसी तरह थपथपाया जिस तरह तुम अपनी बिल्ली को थपथपाते हो। मैं उसकी बोली नहीं समझ सका क्योंकि वह अँग्रेजी नहीं बोल रहा था। वह उसे थपथपाता रहा और कराहता रहा जैसे खुद उसी के दर्द हो रहा हो।"

लू और ऑस्कर हँस पड़े और एमिल खिलखिलाकर अपनी बहन की ओर देखने लगा।

"वह डॉक्टरी बिलकुल नहीं जानता," ऑस्कर ने कहा। "सुना है, जब घोड़ों की तबियत खराब हो जाती है तो खुद दवा खा लेता है और

फिर घोड़ों के लिए प्रार्थना करता है।"

"और लोग भी यही कहते हैं पर वह घोड़ों को ठीक तो कर ही देता है", अलैक्जेण्ड्रा बोल उठी। "कई बार उसका दिमाग बिगड़ा रहता है, पर अगर किसी अच्छे दिन तुम उसके यहाँ पहुँचो तो बहुत कुछ सीख सकते हो। वह जानवरों को खूब अच्छी तरह समझता है।"

ईवार के घर का रास्ता बहुत खराब था। वह उस ऊबड़-खाबड़ इलाके में रहता था जहाँ कि सिर्फ छः-सात रूसी परिवार बारिकों की तरह बने हुए एक ही मकान में रहते थे। ईवार कहा करता था कि जितने कम पड़ोसी होंगे उतने ही कम प्रलोभन होंगे। फिर भी, इस बात को मद्दे-नज़र रखते हुए कि वह घोड़ों का डॉक्टर था, उसका ऐसी जगह रहना, जहाँ पहुँचना सबसे ज्यादा मुश्किल था, कोई खास अक्लमन्दी न थी। बर्गसों परिवार की गाड़ी ऊँचे टीलों पर लड़खड़ाती, घास के ढेलों से टकराती उन दलदली झीलों के किनारे-किनारे चली जा रही थी जहाँ कि सुनहरी फूल उग रहे थे और जंगली बतकें पंख फड़फड़ा रही थीं।

"काश, मैं अपनी बन्दूक ला सकता, अलैक्जेण्ड्रा," लू ने मजबूरी के साथ कहा। "मैं उसे गाड़ी में नीचे छिपा देता तो क्या बुराई थी।" लू के शब्दों से रोष प्रकट हो रहा था।

"तो हमें ईवार से झूठ बोलना पड़ता। इसके अलावा, सुना है, उसे मरी हुई चिड़ियों की गन्ध मिल जाती है। और अगर वह जान जाता तो हमें कुछ न मिलता; भूला तक न मिलता। मैं उससे बात करना चाहता हूँ, और अगर उसे गुस्सा आया होता तो बात न करता। गुस्से से उसका दिमाग बिगड़ जाता है।"

"कभी किसी ने उसे अक्लमन्दी की बातें करते भी सुना है। पगले ईवार की बातें सुनने से तो अच्छा रात के खाने के लिए बतक ले जाना था।"

एमिल डर गया। "लू, उसे गुस्सा मत करना, नहीं तो वह गुर्राने लगेगा।"

सब लोग हँस पड़े और ऑस्कर ने घास के एक किनारे पर गाड़ी चढ़ा

दी। दलदली झीलों और लाल घास का इलाका पीछे छूट चुका था। जंगली फूल भी अब दिखाई न दे रहे थे।

"वह देखो एमिल, वह रहा ईवार का तालाब!" अलैक्जेण्ड्रा ने उस चमकती हुई जलराशि की ओर इशारा किया जो कि एक नीचे गड्ढे में एकत्रित थी। तालाब के एक छोर पर मिट्टी का बना एक बाँध था जिस पर सरपत की हरी झाड़ियाँ उगी हुई थीं, और उससे ऊपर पहाड़ी पर एक दरवाजा और सिर्फ एक खिड़की दिखाई दे रही थी। यदि खिड़की के काँच पर सूर्य का प्रकाश न पड़ रहा होता तो आप उसे न देख सकते थे। न कोई छप्पर, न कोई बाड़ा, न कोई कुआँ और न घास के बीच कोई पगडण्डी ही दिखाई दे रही थी। अगर धुआँ निकलने का पाइप वहाँ न होता तो आप ईवार के मकान के पास पहुँचकर भी न जान पाते कि आप किसी मानव-आवास के निकट हैं। ईवार तीन साल से वहाँ रह रहा था पर उसने किसी भी प्रकार से प्रकृति को दूषित करने का प्रयत्न न किया था।

बर्गसां परिवार के आगमन के समय ईवार अपनी ड्योढ़ी में बैठा बाइबल पढ़ रहा था। भारी शक्तिशाली शरीर और छोटी, धनुषाकार टाँगों वाला वह एक अजीब बेढंगा बुड्ढा था। वह अपने लम्बे सफेद बालों के कारण अपनी उम्र से ज्यादा बूढ़ा नजर आता था। उस समय वह नंगे पैर था पर एक खुले कॉलर की साफ कोरी कमीज पहने था। हर इतवार को सुबह वह साफ कमीज पहनता था, हालाँकि वह चर्च कभी न जाता था। उसका अपना एक अजीब धर्म था और वह किसी अन्य धर्म का अनुसरण करने में असमर्थ था। अक्सर वह हफ्ते-भर तक किसी से न मिलता था। वह अनाज की भूसी हटाने का काम करता या बुलाए जाने पर बीमार जानवरों का इलाज किया करता था। घर में वह रस्सी के झूले बनाता और बाइबल के अध्याय कण्ठस्थ किया करता था।

ईवार को एकान्त में सुख मिलता था। उसे मानव-आवासों का कूड़ा-करकट जैसे कि जूठन और टूटे-फूटे चीनी के बर्तनों का घर के बाहर पड़ा रहना नापसन्द था। उसे जंगल की सफाई-सुथराई ज्यादा पसन्द थी।

अपने निर्जन आवास के प्रति उसके अनुराग की अभिव्यक्ति उसके इन शब्दों में सबसे अच्छी तरह होती थी। "यहाँ मुझे अपनी बाइबल ज्यादा सच्ची मालूम होती है।" यदि आप उसकी गुफा के द्वार पर खड़े होकर दूर तक फैली हुई ऊबड़खाबड़ जमीन, मुस्कान-भरे आसमान और तप-तपाती धूप में चमकती लच्छेदार घास देखते; यदि आप उस महान् नीरवता में लवा पक्षी का आनन्द-विभोर बना देने वाला गीत, बटेर की दुन्दुभी और टिड्डों का शोर सुनते तो ईवार का अर्थ समझ सकते थे।

उस इतवार की दोपहर को उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था। वह उस समय अपनी बाइबल में खोया हुआ था कि उसने बर्गसांओं की गाड़ी की आहट सुनी। एक साथ खड़े होकर वह उसी तरफ दौड़ पड़ा।

"बन्दूकें मत लाना, मत लाना," परेशानी से हाथ हिलाते हुए उसने आवाज लगाई।

"हमारे पास कोई बन्दूक नहीं है, ईवार," अलैक्जेण्ड्रा ने उसे आश्वा-सन दिलाया।

सुशीलतापूर्वक मुस्कराते हुए वह गाड़ी के पास चला आया और उनकी ओर चुपचाप देखने लगा।

"हम एक झूला खरीदना चाहते हैं," अलैक्जेण्ड्रा ने समझाया, "और यह मेरा छोटा भाई तुम्हारा वह तालाब देखना चाहता है जहाँ कि बहुत सी चिड़ियाँ आती हैं।"

ईवार मुस्कराकर घोड़ों की नाक मलने और उनके मुँह सहलाने लगा। "इस वक्त तो ज्यादा पक्षी नहीं हैं। आज सुबह कुछ बतक और चाहा पक्षी पानी पीने आये थे। लेकिन पिछले हफ्ते एक सारस भी आया था। रात-भर यहाँ रहा और फिर दूसरे दिन शाम को लौटकर गया। पता नहीं क्यों? यह उसका मौसम तो नहीं है। बहुत से पक्षी पतझड़ में आते हैं और तब हर रात तालाब से अजीब आवाजें उठती रहती हैं।"

"अलैक्जेण्ड्रा, इससे यह पूछो कि क्या कभी कोई समुद्री पक्षी भी यहाँ आया है?" कार्ल ने कहा।

बूढ़े ईवार को कार्ल की बात समझाने में अलैक्जेण्ड्रा को कुछ मुश्किल पड़ी।

पहले तो वह कुछ उलझा हुआ-सा नजर आया और फिर जब उसे याद आया तो ताली बजाकर बोला, "हाँ, हाँ, एक बार लम्बे-लम्बे पंखों और गुलाबी पैरों वाला एक बड़ा-सा सफेद पक्षी आया था। क्या गजब की आवाज थी उसकी! दोपहर को वह आया और शाम तक चीख-चीखकर तालाब का चक्कर काटता रहा। वह किसी-न-किसी तरह की परेशानी में जरूर था पर मैं उसकी बात न समझ सका। शायद वह समुद्र के पास पहुँचना चाहता था, पर यह न जानता था कि समुद्र कितनी दूर है। शायद उसे डर था कि वह कभी भी समुद्र तक न पहुँच पाएगा। वह बहुत ज़्यादा दुखी था, रात-भर चिल्लाता रहा। उसने मेरी खिड़की में रोशनी देखी और वह उधर ही दौड़ा चला आया। शायद उसने मेरे घर को नाव समझा हो। अगले दिन सुबह सूरज निकलने पर मैं उसके लिए खाना लेकर पहुँचा, पर वह आसमान में उड़कर अपने रास्ते चल दिया।" ईवार ने अपने घने बालों के बीच उँगली डालते हुए कहा। "यहाँ बड़ी अजीब-अजीब चिड़ियाँ दूर-दूर से आती हैं और उनकी सोहबत बहुत अच्छी लगती है। तुम लड़के जंगली चिड़ियों को तो नहीं मारते?"

लू और ऑस्कर दाँत निकालकर रह गए। "हाँ, मैं जानता हूँ लड़कों का कोई खयाल नहीं होता। लेकिन, भाई ये जंगली चिड़ियाँ भी तो ईश्वर की बनाई हुई हैं। जिस तरह हम अपने मवेशियों का खयाल रखते हैं उसी तरह वह भी उनका खयाल रखता है और गिनता रहता है। ईसा ने भी तो यही कहा है।"

ईवार अलैक्जेण्ड्रा और एमिल को अपनी छोटी-सी गुफा में ले गया। उसका सिर्फ एक ही कमरा था जिसकी दीवारें पलस्तर और सफेदी के कारण साफ-सुथरी दिखाई दे रही थीं; फर्श लकड़ी का बना हुआ था। कमरे के सामान में एक चूल्हा, मोमजामे से ढकी हुई एक मेज, दो कुरसियाँ, एक घड़ी, एक कलेण्डर और खिड़की में रखी हुई कुछ किताबों के अलावा और

वहाँ कुछ न था। लेकिन वह कमरा एक अलमारी की तरह साफ-सुथरा दिखाई दे रहा था।

"लेकिन तुम सोते कहाँ हो, ईवार?" एमिल ने पूछा।

ईवार ने एक कील से अटका हुआ अपना सोने वाला झूला खोल दिया। "यह है मेरी सोने की जगह, बेटे! यह बहुत अच्छा बिस्तर है। जहाँ कहीं भी मैं काम पर जाता हूँ इतना आरामदेह बिस्तर नहीं मिलता।

एमिल का डर दूर हो चुका था। उसे वह गुफा आम मकानों से ज्यादा अच्छी नजर आई। उसे ईवार और उसके घर का अजीबपन खुशगवार मालूम हुआ। "क्या चिड़ियाँ भी जानती हैं कि तुम उन पर दया करोगे? क्या इसलिए इतनी ज्यादा चिड़ियाँ यहाँ आती हैं?" एमिल ने पूछा।

ईवार फर्श पर पैर समेटकर बैठ गया। "बहुत दूर से ये चिड़ियाँ आती हैं और वे बहुत थकी होती हैं आसमान से उन्हें हमारी धरती अँधेरी और चौरस दिखाई देती है। उन्हें अपने सफर में पीने और नहाने के लिए पानी चाहिए। वे इधर-उधर देखती हैं और नीचे अँधेरी धरती पर उन्हें काँच की तरह चमकता हुआ यह तालाब दिखाई देता है। वे नीचे उतर आती हैं और यहाँ उन्हें कोई तंग नहीं करता। मैं उनके लिए कुछ दाना डाल देता हूँ। वे दूसरी चिड़ियों को इस तालाब के बारे में बता देती है और अगले साल और बहुत सी चिड़ियाँ आ जाती हैं। जिस तरह जमीन पर हमारी सड़कें हैं उसी तरह आसमान में इन चिड़ियों की सड़कें हैं।"

लू और ऑस्कर के तालाब से लौटने तक अलैक्जेण्ड्रा अपने लिए एक झूला चुन चुकी थी। वे लड़के अन्दर न आये, बाहर ही बैठे रहे। इधर अलैक्जेण्ड्रा और ईवार चिड़ियों और ईवार के घर के प्रबन्ध और वह क्यों मांस नहीं खाता आदि के बारे में बातें करते रहे।

अलैक्जेण्ड्रा एक कुरसी पर बैठी थी और उसकी बाँहें सामने मेज पर रखी थीं। ईवार उसके पैरों के पास फर्श पर बैठा था। मेजपोश पर

उँगली फेरते हुए अचानक वह बोली, "ईवार, मैं झूला खरीदने से ज़्यादा ज़रूरी बात करने तुम्हारे पास आज आई हूँ।"

"कहो," बूढ़े ईवार ने तख्ते के फर्श पर पैर खुजलाते हुए पूछा।

हमारे पास सूअरों का एक बड़ा झुण्ड है। सर्दी के बाद लोगों ने उन्हें बेच देने की मुझे सलाह दी पर मैंने न बेचे, और अब दूसरे लोगों के सूअर मरते देख मुझे डर हो रहा है। तुम बताओ क्या करना चाहिए ?"

ईवार की आँखों में चमक आ गई, उनका धूमिलपन जाता रहा।

"तुम उन्हें गन्दा पानी और फटा हुआ दूध देती होगी और गन्दी जगह रखती होगी। इसी तरह के गन्दे सूअरों का बाइबल में ज़िक्र हुआ है। अगर तुम इसी तरह अपनी मुर्गियाँ रखतीं तो क्या होता ? तुम्हारे यहाँ कहीं चरी भी होती होगी ? वहीं एक बाड़ा बनाकर सूअरों को रखो और उनके लिए एक छप्पर डाल दो। लड़कों से कहो कि वे साफ पानी पीपों में भरकर वहाँ पहुँचाया करें। उन्हें गन्दी जगह से हटा लो और फिर सर्दियों तक वहाँ न जाने दो। खाने को उन्हें साफ अनाज दो जैसा कि तुम घोड़ों और मवेशियों को देती हो। सूअरों को गन्दा रहना पसन्द नहीं है।"

बाहर बैठे लू और ऑस्कर सब बातें सुन रहे थे। "आओ, अब चलें। घोड़े खा चुके," लू ने कहा। "चलो, जल्दी चलें, नहीं तो यह बूढ़ा बहन के दिमाग में न जाने क्या-क्या भर देगा। अगली बार वह सूअरों को हमारे साथ सुलाएगी।"

ऑस्कर बड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ। कार्ल ईवार की भाषा न समझ सकता था, पर उसने दोनों भाइयों को नाखुश पाया। वे दोनों मेहनत से कभी न घबड़ाते थे पर प्रयोग करना और नाहक मुसीबत उठाना उन्हें पसन्द न था। यहाँ तक कि लू भी, जो अपने बड़े भाई से ज़्यादा लजीला था, अपने पड़ोसियों से भिन्न काम करना पसन्द न करता था। उसका खयाल था कि ऐसा करने से वे अपने पड़ोसियों से जाहिरा तौर पर अलग

नज़र आते हैं और लोग फिज़ूल ही उनकी चर्चा करने लगते हैं।

घर लौटते वक्त वे अपनी खिन्नता भूल चुके थे और ईवार व उसके पक्षियों के बारे में मज़ाक कर रहे थे। अलैक्जेण्ड्रा ने सूअरों की देखभाल सम्बन्धी किसी नये सुधार का प्रस्ताव नहीं रखा और लड़के समझे कि वह ईवार की बातें भूल चुकी है। वे दोनों सहमत थे कि ईवार पागल है और चूँकि वह बहुत कम काम करता था अपनी ज़मीन पर कभी कुछ न कर पाएगा। अलैक्जेण्ड्रा ने मन-ही-मन सोचा कि अगली बार वह इस बारे में ईवार से बातें कर उसे चेताएगी। लड़कों ने कार्ल को अँधेरा होने के बाद तालाब में तैरने के लिए रोक लिया।

उस दिन शाम को खाने के बर्तन साफ करने के बाद अलैक्जेण्ड्रा अपनी रसोई की ड्योढ़ी पर आ बैठी। गर्मी की निश्चल रात में खेतों की महक उठ रही थी। तालाब की ओर से पानी के थपथपाने और खिल-खिलाकर हँसने की आवाज़ सुनाई दे रही थी और जब चाँद निकल आया तो तालाब एक चमकीली धातु की तरह दिखाई देने लगा। अलैक्जेण्ड्रा तालाब के किनारे दौड़ते या पानी में कूदते लड़कों के गोरे बदन देख पा रही थी। अलैक्जेण्ड्रा स्वप्निल नेत्रों से तालाब की सिहरन निहार रही थी पर अन्त में उसकी दृष्टि उस ज़मीन के टुकड़े पर पड़ी जिसमें वह सूअरों का नया बाड़ा बनाने वाली थी।

: ४ :

जॉन बर्गसां की मृत्यु के बाद उसके परिवार के पहले तीन वर्ष खुशहाली में बीते और फिर ऐसा कठिन समय आया कि उस जगह के रहने वाले सभी लोग प्रायः निराशा के गर्त में डूब चुके थे। तीन साल तक सूखा पड़ता रहा मानो वह उच्छृङ्खल भूमि बढ़ते हुए हल की धार के विरुद्ध अन्तिम संघर्ष में रत हो। जॉन बर्गसां के पुत्रों ने प्रथम निष्फल ग्रीष्म का साहस के साथ सामना किया। मकई की फसल मर जाने से मज़दूरी सस्ती हो गई थी। लू और ऑस्कर ने अपने यहाँ दो आदमी लगा लिये और

पहले से भी अधिक फसल बोई। वे सब कुछ खो बैठे। सब लोग निरुत्साह हो चुके थे। करज़दार काश्तकारों को अपनी ज़मीनें बेचनी पड़ीं। उस छोटे से कस्बे की सड़क के दोनों ओर की पटरियों पर बैठे हुए लोग आपस में कहने लगे कि वह ज़मीन इन्सान के बसने के लिए नहीं बनी, अकलमन्दी इसी में है कि आयोवा या इलिनॉय या और किसी ऐसी जगह जाकर रहा जाय जो कि बसने लायक साबित हो चुकी हो। निस्सन्देह लू और ऑस्कर भी अपने चाचा ओटो के साथ शिकागो में कहीं ज़्यादा खुश होते। अपने अधिकांश पड़ोसियों की तरह वे भी एक तयशुदा रास्ते पर चलने के लिए बने थे, न कि एक नये प्रदेश में अपने चिह्न छोड़ने के लिए। एक पक्की नौकरी, कुछ छुट्टियाँ और बेफ़िक्री—यही वे चाहते थे। यह उनका अपना दोष न था कि बचपन में ही वे इस नीरवता में ले आये गए थे। अगुआ बनने के लिए कल्पना चाहिए, चीज़ों की निस्बत चीज़ों की कल्पना का रसास्वादन करने की क्षमता चाहिए।

वह दूसरा असफल वर्ष था। सितम्बर मास की एक दोपहर को अलैक्ज़ेण्ड्रा अपने बगीचे में शकरकन्द लेने पहुँची। शकरकन्द उस ऐसे मौसम में भी फल रही थी जो कि और हर चीज़ के लिए घातक सिद्ध हो चुका था। लेकिन जब कार्ल लिन्स्ट्रम उसे ढूँढ़ने बगीचे में आया तो वह चुपचाप विचारमग्न खड़ी थी। उस सूखे बगीचे में सूखी बेलों की गन्ध आ रही थी और इधर-उधर खीरे, कद्दू व चकोतरे के पीले बीज बिखरे पड़े थे। कार्ल अलैक्ज़ेण्ड्रा पर नज़र गड़ाए बगीचे की पगडण्डी पर धीरे-धीरे आगे बढ़ा चला आ रहा था। अलैक्ज़ेण्ड्रा ने उसकी आहट न सुनी। वह पूर्णतः निश्चल खड़ी थी। उसके सिर पर बँधी लाल बालों की चोटियाँ सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। शीतल बयार ने सूर्य की तप्त किरणों को रुचिकर बना दिया था और उस समय आकाश इतना निर्मल था कि उसकी नीली गहराइयों में ओझल होने वाले पक्षी को भी बहुत दूर तक देखा जा सकता था। यद्यपि कार्ल प्रसन्नचित्त व्यक्ति न था और गत दो वर्षों के कटु अनुभव ने उसे और भी म्लानचित्त बना दिया था, पर ऐसे

सुहावने दिन उसे भी वह प्रदेश प्रीतिकर प्रतीत होता था मानो उस भूमि से कोई ऐसी सबल, यौवनपूर्ण एवं उच्छृङ्खल वस्तु उपजती हो जो सब चिंताओं को भुला देती हो।

"अलैक्जेण्ड्रा, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ। आओ, वहाँ उन झाड़ियों के पास बैठें।" कहकर उसने अलैक्जेण्ड्रा की शकरकन्दियों का बोरा उठा लिया। "लड़के शहर गये हुए हैं क्या?" धूप से झुलसी गरम जमीन पर बैठते हुए उसने बोलना शुरू किया। "हमने भी तय कर लिया है अलैक्जेण्ड्रा, हम लोग सचमुच चले जायँगे।"

अलैक्जेण्ड्रा ने उसकी ओर इस प्रकार देखा मानो वह कुछ भयभीत हो उठी हो। "सचमुच कार्ल? क्या यह तय हो चुका?"

"हाँ, सेण्ट लुई से खबर मिली है कि पिताजी को सिगार फैक्टरी में उनकी पुरानी नौकरी मिल सकती है। पहली नवम्बर तक उन्हें वहाँ पहुँच जाना चाहिए। फैक्टरी में नये आदमी लिये जा रहे हैं। हम इस जगह को किसी भी कीमत पर बेचकर और अपने जानवर नीलाम करके चले जायँगे। मैं नक्काशी का काम सीखूँगा और फिर शिकागो में काम तलाश करने की कोशिश करूँगा।"

अलैक्जेण्ड्रा की आँखें स्वप्निल बन गईं और उनमें आँसू भर आए।

कार्ल का निचला होंठ फड़कने लगा। जमीन पर पड़ी हुई एक लकड़ी से वह अपने पास की मुलायम मिट्टी खुरचने लगा। "मुझे यह बिलकुल पसन्द नहीं है, अलैक्जेण्ड्रा," वह धीरे से बोला "तुमने हमारे साथ इतनी मुश्किलों का सामना किया है और पिताजी की इतनी बार मदद की है कि ऐसा लगता है अब हम तुम्हें सबसे बदतर मुश्किल का सामना करने के लिए अकेला छोड़कर भाग खड़े हो रहे हैं। लेकिन हम तुम्हारी मदद करने लायक भी तो नहीं हैं। हम तुम्हारे लिए हमेशा भार बनकर रहे हैं, तुम्हीं हमारे लिए अपने-आपको जिम्मेवार समझती आई हो। यह तुम भी जानती हो कि पिताजी खेती करने के लिए नहीं बने। मुझे भी इस काम से नफरत है। अगर हम यही काम करते रहे तो इस दलदल

में बुरी तरह फस जायँगे ।"

"हाँ, हाँ कार्ल, मैं जानती हूँ। तुम यहाँ अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे हो। तुम कहीं ज़्यादा अच्छा काम कर सकते हो। तुम अब करीब उन्नीस बरस के हो गए और मैं नहीं चाहती कि तुम यहाँ पड़े रहो। लेकिन यह सोचकर मैं घबरा उठती हूँ कि तुम यहाँ न रहोगे। तुम नहीं जानते कि मुझे तुम्हारी कितनी याद आएगी।" उसने अपने गालों पर लुढ़क आए आँसू पोंछ लिए, उन्हें छिपाने की कोशिश न की।

"लेकिन, अलैक्जेण्ड्रा," उसने दुखी और चिन्तित होते हुए कहा, "मैं दरअसल तुम्हारे कभी किसी काम नहीं आया हूँ, सिवा इसके कि कभी-कभी तुम्हारे भाइयों को खुश रख सका हूँ।"

अलैक्जेण्ड्रा मुस्कराकर सिर हिलाने लगी। "नहीं, ऐसी बात नहीं है। मुझे तथा लड़कों और हमारी मां को समझकर तुमने मेरी मदद की है। मैं समझती हूँ किसी की मदद करने का दरअसल यही एक तरीका है। मैं समझती हूँ तुम्हीं सिर्फ ऐसे आदमी हो जिसने कभी मेरी मदद की हो। यहाँ जो कुछ हुआ है उससे ज्यादा तुम्हारे चले जाने को बरदाश्त करना मेरे लिए कठिन है।"

कार्ल जमीन पर नजर गड़ाए रहा। "हम तो हमेशा तुम पर ही निर्भर रहते आए हैं। पिताजी को तो देखकर हँसी आती है। जब कोई नया सवाल उठ खड़ा होता है तो वह हमेशा यही कहते हैं, 'पता नहीं बर्गसां-परिवार इस बारे में क्या करेगा? मैं समझता हूँ अलैक्जेण्ड्रा के पास जाकर इस बारे में पूछ आऊँ।' मैं वह दिन कभी न भूलूँगा जब हम लोग यहाँ आये हुए ही थे और हमारे घोड़े के पेट में दर्द शुरू हो गया। मैं दौड़ा-दौड़ा तुम्हारे घर गया—तुम्हारे पिता घर पर न थे—और तुमने मेरे साथ आकर पिताजी को बताया कि घोड़े के पेट से किस तरह हवा निकाली जानी चाहिए। उन दिनों तुम बहुत छोटी थीं पर फिर भी तुम पिताजी से ज़्यादा इन कामों के बारे में जानती थीं। तुम्हें याद होगा कि मुझे अपने पुराने घर की कितनी याद आया करती थी और स्कूल से लौटते वक्त हम लोग कितनी देर-देर तक

बातें किया करते थे। न जाने क्यों हम लोग शुरू से ही एक सा सोचते आए हैं।"

"हाँ, बात तो यही है। हमें एकसी ही चीजें पसन्द आई हैं और वह भी साथ-साथ। हम दोनों का कभी कोई और घनिष्ठ मित्र भी नहीं रहा। और अब···" कहकर अलैक्जेण्ड्रा अपने आँसू पोंछने लगी, "और अब तुम ऐसी जगह जा रहे हो जहाँ तुम्हारे बहुत दोस्त होंगे और मन-पसन्द काम होगा। लेकिन, मुझे चिट्ठी लिखोगे न कार्ल ? तुम्हारी चिट्ठी मेरे लिए बहुत कीमती होगी।"

"जब तक जिंदा रहूँगा, तुम्हें लिखता रहूँगा," भावावेश में लड़का बोल उठा।

"इस खबर को सुनकर मेरे भाई कितने दुखी होंगे," अलैक्जेण्ड्रा ने आह भरते हुए कहा। "सभी लोग गाँव छोड़कर शहर जाने की तैयारी में लगे हुए हैं और जब वे लोग मेरे भाइयों से बातें करते हैं तो वे बेचारे दुखी और उदास हो जाते हैं। मेरा खयाल है कि शायद वे मुझसे नाराज हैं क्योंकि मैं गाँव छोड़ने की बात तक सुनना नहीं चाहती। पर मैं भी इस जमीन की हिमायत करते-करते थक गई हूँ।"

"अगर तुम्हारी राय हो तो मैं अभी लू और ऑस्कर से अपने चले जाने का जिक्र न करूँ।"

"मैं आज रात को खुद ही उनसे कह दूँगी। वे बड़बड़ाएँगे जरूर, पर बुरी खबर छिपाने से भी तो कोई फायदा नहीं। वे मुझसे ज्यादा परेशान हैं। लू शादी करना चाहता है पर जब तक अच्छा वक्त नहीं आता वह बेचारा शादी भी तो नहीं कर सकता। लो, शाम हो चली। अब मुझे लौटना चाहिए। मां शकरकन्दियों के इन्तजार में होगी। देखो न, साँझ होते ही एक साथ ठण्ड बढ़ गई है।"

अलैक्जेण्ड्रा उठ खड़ी हुई। पश्चिम में गोधूलि का सुनहरा प्रकाश दमक रहा था पर इतनी ही देर में वह भूमि रिक्त और विषादमयी बन चुकी थी। पश्चिमी पहाड़ी पर एक अन्धकारपुंज जमा होने लगा और

चरवाहा ढोर हाँकता हुआ घर लौटा। एमिल ने दौड़कर बाड़े का दर-वाजा खोल दिया। जानवर डकराने व रँभाने लगे। आकाश के पीतवर्ण अर्द्धचन्द्र पर क्रमशः चाँदी का रंग चढ़ने लगा। अलैक्जेण्ड्रा और कार्ल शकरकन्दियों की क्यारियों के पास से टहलते हुए चले आ रहे थे। "तुम्हें यहाँ रहते दस बरस हो गए और इस बीच मैंने कभी भी अकेलापन महसूस न किया," अलैक्जेण्ड्रा ने धीरे से कहा। "मुझे याद है तुम्हारे आने से पहले मैं कितनी अकेली थी। अब एमिल के अलावा मेरा और कोई साथी न रहेगा। पर एमिल तो मेरा प्यारा भैया है ही।"

उस रात जब लू और ऑस्कर खाने पर बैठे तो वे विचारमग्न नजर आ रहे थे। वे अब पूरे मरद बन चुके थे, और जैसा कि अलैक्जेण्ड्रा कहा करती थी, पिछले कुछ वर्षों में अपना-अपना असली रूप धारण करते जा रहे थे। लू ऑस्कर की निस्बत पतला, फुरतीला और ज़्यादा अक्लमन्द था। उसकी नीली आँखों में चमक थी और उसके पीत केशों में उच्छृङ्खलता, और उसे अपनी छोटी भूरी मूंछ का ग़रूर था। ऑस्कर मूंछ न बढ़ा पाया था, उसका पीतवर्ण मुख अण्डे की तरह सफेद-चट था और सफेद भौंह के कारण उसका चेहरा खाली-खाली-सा नजर आता था। वह शक्तिशाली व्यक्ति था और उसमें असाधारण सहनशीलता थी। वह इस तरह का आदमी था जिसे अगर आप कोल्हू में जोत देते तो न वह जल्दबाजी करता, न धीमा पड़ता और सारे दिन मशीन की तरह काम में जुता रहता। किन्तु जितना उसका शरीर कर्मठ था उतना ही उसका मस्तिष्क मन्द था। दिन-भर कार्य-रत रहना उसके लिए एक व्यसन बन गया था। वह एक कीड़े की तरह एक ही काम को बार-बार एक ही तरह करता था और कभी इस बात का खयाल न करता कि वह काम अच्छा भी हो रहा है या नहीं। उसका खयाल था कि शारीरिक श्रम में एक महानता है और इसलिए वह सख्त मेहनत के काम पसन्द करता था। अगर किसी खेत में एक बार मकई बोई जा चुकी है तो उसमें दुबारा गेहूँ बोना वह बरदाश्त न कर सकता था। वह हर साल एक ही वक्त पर मकई बोना पसन्द करता था, चाहे मौसम आगे

बढ़ गया हो या पीछे हट गया हो। उसका खयाल था कि वह अपनी अचूक नियमितता से स्वयं को निर्दोष सिद्ध कर प्रकृति या मौसम को दोषी ठहरा सकता था।

उसके विपरीत लू जल्दबाज और उतावला था। वह दो दिन का काम एक ही दिन में करना चाहता था और अक्सर ऐसे ही काम कर पाता जो सबसे कम जरूरी होते थे। जब गेहूँ की फसल पक चुकती और हरेक के लिए फसल काटने में व्यस्त रहना जरूरी होता, तब उसे खेत की मेड़ या घोड़े के साज-सामान सुधारने की सूझती; और उसके बाद इस जोर-शोर के साथ वह खेत के काम में जुटता कि बीमार हो जाता और हफ्ता-भर बिस्तरे पर पड़ा रहता। दोनों लड़के परस्पर सन्तुलन बनाए रखते थे और आपस में उन दोनों की दोस्ती खूब निभती थी। वे एक-दूसरे के बिना कभी शहर या और कहीं नहीं जाते थे।

उस रात जब वे खाने पर बैठे तो ऑस्कर लू की ओर इस तरह देख रहा था मानो उससे कोई बात सुनने की आशा में हो और लू मुँह बिगाड़-कर आँखें मिचका रहा था। आखिर अलैक्जेण्ड्रा ने ही बात शुरू की।

"लिंस्ट्रम परिवार," मेज पर गरम टिकियाओं की प्लेट रखते हुए उसने धीरे से कहा, "वापस सेण्ट लुई जा रहा है। बूढ़ा लिंस्ट्रम फिर सिगार-फैक्टरी में काम शुरू करेगा।"

लू को मौका मिल गया। "देखो न अलैक्जेण्ड्रा, सब इस जगह को छोड़कर चले जा रहे हैं। सिर्फ हठी बनकर यहाँ अड़े रहने से कोई फायदा नहीं।"

"तुम कहाँ जाना चाहते हो, लू?"

"जहाँ कहीं भी अच्छी पैदावार हो सके," ऑस्कर ने गम्भीरता के साथ कहा।

लू ने एक आलू उठाते हुए कहा, "क्रिस आर्नसन ने अपनी जमीन बेचकर नदी के किनारे एक जमीन ले ली है।"

"किसे बेची है?"

"शहर में रहने वाले चार्ली फुलर को।"

"जमीन-जायदाद के व्यापारी फुलर को ? तुम्हीं देखो कि फुलर कितना अक्लमन्द आदमी है। वह यहाँ की हर जमीन खरीदने में लगा हुआ है। किसी दिन वह बहुत धनी बन जायगा।"

"वह अभी भी धनी है और इसीलिए रुपया लगाकर किस्मत आजमा रहा है।"

"हम क्यों नहीं आजमा सकते ? हम उससे भी देर तक यहाँ टिके रहेंगे। किसी दिन यह ज़मीन इतनी कीमती हो जायगी कि तुम अन्दाज़ नहीं लगा सकते।"

लू हँस पड़ा। "अलैक्जेण्ड्रा, तुम खुद नहीं जानतीं तुम क्या कह रही हो। छः साल पहले इस जमीन की जो कीमत मिल रही थी, अब नहीं मिल सकती। यहाँ बसने वालों ने शुरू में ही गलती की। अब उनकी समझ में आ रहा है कि यह पठार की जमीन काश्त के लिए बनी ही नहीं है, और जो कोई भी ढोर चराने के अलावा कुछ और चाहता है वह यहाँ से निकलने की कोशिश में लगा है। इस ऊँची जमीन पर खेती नहीं हो सकती। पर्सी एडम्स ने मुझे बताया है कि चार सौ डॉलर और शिकागो का एक टिकिट लेकर वह फुलर को अपनी जमीन बेच रहा है।"

"फिर आया न, फुलर।" अलैक्जेण्ड्रा बोली। "अगर वह आदमी मुझे अपना साझीदार बना ले तो कितना अच्छा है! गरीबों को अमीरों से कुछ सीखना चाहिए। ये लोग जो यहाँ से भागे जा रहे हैं लिंस्ट्रम साहब की तरह नालायक किसान हैं। अच्छे सालों में भी इन्होंने कुछ कर न दिखाया। जब पिताजी कर्ज से निकल रहे थे ये लोग कर्ज में डूबे जा रहे थे। मैं समझती हूँ पिताजी की खातिर ही हम लोगों को यहीं टिका रहना चाहिए। वह यही चाहते थे। उन्होंने इससे भी बदतर दिन देखे थे। क्यों माँ, तुम्हीं बताओ न ?"

श्रीमती बर्गसां सुबक-सुबककर रो रही थीं। ऐसी बहस-मुबाहसों से वह हमेशा दुखी हो जाती थीं और उन्हें अपने उस विगत जीवन की याद आ

जाती थी जिससे वह विलग हो चुकी थीं। "समझ में नहीं आता ये लोग इस जगह को छोड़ने के लिए क्यों कहते रहते हैं," उन्होंने अपनी आँखों के आँसू पोंछते हुए कहा। "मैं किसी नई जगह नहीं जाना चाहती, जहाँ कि, हो सकता है, हमारा यहाँ से भी बुरा हाल हो। अगर तुम लोग जाना चाहते हो तो मैं किसी पड़ोसी के यहाँ रह लूँगी और अपने पति के पास ही दफनाया जाना पसन्द करूँगी। मैं अपने पति को चौपायों द्वारा रौंदे जाने के लिए अकेला नहीं छोड़ सकती," कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगीं।

लड़कों का मिजाज बिगड़ा हुआ नजर आया। अलैक्जेण्ड्रा ने अपनी मां का कन्धा सहलाते हुए कहा, "इस बात का सवाल ही नहीं पैदा होता, मां! अगर तुम नहीं चाहतीं तो तुम्हें यहाँ से जाने की कोई जरूरत नहीं। अमेरिकन कानून के मुताबिक इस जायदाद का एक-तिहाई हिस्सा तुम्हारा है, और तुम्हारी रजामन्दी बिना हम इसे बेच नहीं सकते। मैं तो सिर्फ यही जानना चाहती थी कि जब तुम और पिताजी यहाँ आकर बसे थे तो क्या हाल था? इतनी ही बुरी हालत थी या नहीं?"

"ओह, कहीं बदतर हालत थी," श्रीमती बर्गसां ने दुःख के साथ कहना शुरू किया। "यहाँ कहीं भी कुछ न था। लोगबाग पशु-पक्षियों की तरह रहते थे।"

ऑस्कर उठकर रसोई के बाहर चला आया। लू ने उसका अनुसरण किया। उन दोनों का खयाल था कि अलैक्जेण्ड्रा ने मां को उनके खिलाफ बनाकर बेजा फायदा उठाया है। अगले दिन सुबह भी वे दोनों गुमसुम बने रहे। सुबह का नाश्ता करने के बाद तुरन्त ही वे दोनों खलिहान में चले गए और दिन-भर वहीं रहे। जब कार्ल लिस्ट्रम दोपहर में उनके यहाँ आया तो अलैक्जेण्ड्रा ने इशारे से उसे खलिहान की तरफ भेज दिया।

सारी दोपहर बर्गसां-परिवार की बैठक शान्त पड़ी रही। एमिल रसोई के पास खरगोशों के जाल बना रहा था। मुर्गियाँ बांग दे रही थीं और फूलों की क्यारियाँ खुरचे डाल रही थीं।

उस शाम कार्ल भी उन लोगों के साथ खाने पर बैठा। जब सब बैठ

चुके तो अलैक्जेण्ड्रा ने एमिल को सम्बोधित कर कहा, "मेरे साथ सैर करने चलोगे? मैं एक दौरा करना चाहती हूँ और अगर तुम चाहो तो मेरे साथ चल सकते हो।"

सब लोग आश्चर्य के साथ देखने लगे; वे अलैक्जेण्ड्रा की योजनाओं से घबराते थे।

"मैं यह सोच रही थी," अलैक्जेण्ड्रा कहने लगी, "कि यहीं टिके रहने में मैं कहीं गलती तो नहीं कर रही। कल कुछ रोज के लिए दरियाई इलाके का दौरा करने मैं जा रही हूँ ताकि वहाँ की हालत जान सकूँ। अगर वह जगह अच्छी जँची तो तुम लोग वहाँ जाकर सौदा तय कर लेना।"

"वहाँ का कोई भी आदमी यहाँ की जमीन के बदले में अपनी जमीन बेचना न चाहेगा," ऑस्कर ने उदासी के साथ कहा।

"यही तो मैं पता लगाना चाहती हूँ। हो सकता है वे लोग भी हमारी तरह असन्तुष्ट हों। अपने घर से बाहर की चीज हमेशा अच्छी नजर आती है। तुमने तो वह कहानी पढ़ी है जिसमें दो देशों के लोग एक-दूसरे की रोटी खरीदना चाहते हैं क्योंकि उनका खयाल था कि पराई रोटी ज्यादा अच्छी होती है। मैंने दरियाई इलाके के खेतों के बारे में इतना कुछ सुन रखा है कि उन्हें अपनी आँखों से देखे बिना मुझे चैन नहीं मिल सकता।"

लू कुलबुलाने लगा। "होशियार रहना। कोई वायदा मत कर बैठना। कहीं ऐसा न हो कि वे लोग तुम्हें ठग लें।"

खाने के बाद लू नैकटाई पहनकर ऐनी ली से प्रेम करने चल दिया और कार्ल और ऑस्कर ताश खेलने बैठ गए। अलैक्जेण्ड्रा माँ और एमिल को एक कहानी की किताब पढ़कर सुनाने लगी। कुछ देर में ही कार्ल और ऑस्कर खेलना भूलकर कहानी सुनने में मगन हो गए। वे दरअसल सब-के-सब बच्चे ही थे और कहानी-किस्से सुनना उन्हें बहुत पसन्द था।

: ५ :

अलैक्जेण्ड्रा और एमिल ने दरियाई इलाके के खेतों में घूम-फिरकर

पाँच दिन बिता दिए। अलैक्जेण्ड्रा ने मर्दों से फसल और औरतों से मुर्गियों के बारे में पूछताछ की। वह सारे दिन एक ऐसे नौजवान किसान के साथ रही जो स्कूल में शिक्षा पा चुका था और अब तिनपतिया घास से एक नये प्रकार का प्रयोग कर रहा था। अलैक्जेण्ड्रा ने उससे बहुत-कुछ सीखा। अन्त में, छठे दिन अलैक्जेण्ड्रा और एमिल नदी पीछे छोड़कर उत्तर दिशा में अपने घर की ओर चल दिए।

"दरियाई इलाके में क्या रखा है, एमिल? कुछ अच्छे खेत जरूर हैं, लेकिन वे शहर के धनी लोगों के हाथ में हैं, इसलिए उन्हें खरीदा नहीं जा सकता। ज्यादातर जमीन ऊसर और पहाडी है। यहाँ ये लोग जिन्दा-भर रह सकते हैं पर कोई बड़ा काम नहीं कर सकते। इन लोगों को अपनी किस्मत का थोड़ा-बहुत भरोसा जरूर हो सकता है पर हमारे लिए तो किस्मत के दरवाजे खुले हैं। हमें अपनी पठार की जमीन में विश्वास रखना चाहिए। पठार की जमीनों को लेने के पक्ष में अब मैं पहले से कहीं ज्यादा हूँ।" घोड़े को आगे बढ़ाते हुए उसने कहा।

सड़क पर चढ़ाई आने लगी और अलैक्जेण्ड्रा स्वीडन की एक पुरानी लय गुनगुनाने लगी। एमिल चकित था कि उसकी बहन इतनी खुश क्यों है। अलैक्जेण्ड्रा के मुख पर इतनी अधिक प्रसन्नता झलक रही थी कि एमिल कारण पूछने में हिचकिचाने लगा। धरा के उस भूभाग के जन्म होने के उपरान्त सम्भवतः प्रथम बार एक मानव ने उस अभिशप्त भूमि की ओर प्रेम और ममता से निहारा था। अलैक्जेण्ड्रा को वह भूमि सुन्दर प्रतीत हुई—महान् शक्तिशाली और गौरवमयी। उसके नेत्र उस विस्तार में समा गए और उसका सौन्दर्यपान करते हुए उसकी आँखों की कोर तक भीग गई। हर देश का इतिहास किसी-न-किसी नर या नारी के हृदय से ही आरम्भ होता है।

दोपहर बाद अलैक्जेण्ड्रा घर पहुँची। उस शाम उसने अपने परिवार के बीच, जो कुछ देखा और सुना था, सब कह सुनाया।

"लड़को, मैं चाहती हूँ तुम दरियाई इलाके में जाकर खुद सब कुछ

देखो। अपनी आँखों से देखे बिना तुम्हें सन्तोष नहीं होगा। वहाँ नदी है इसलिए वे हमसे कुछ वर्ष आगे हैं और खेती के बारे में हमसे अधिक जानते हैं। इस जमीन से उस जमीन की तिगुनी कीमत है लेकिन पाँच साल में हम अपनी कीमत दोगुनी कर लेंगे। वहाँ की अच्छी जमीनों के मालिक धनी लोग हैं और जितनी भी उन्हें मिल सकती है वे खरीद रहे हैं। हमें अपने मवेशी और सारी पिछली फसल बेचकर लिंस्ट्रम-परिवार की जमीन खरीद लेनी चाहिए। फिर, इसके बाद दो कर्जों से पीटर क्राउन की जमीन भी ले लेनी चाहिए। हमें ज्यादा-से-ज्यादा रुपये इकट्ठे कर ज्यादा-से-ज्यादा जमीन खरीदनी चाहिए।"

"तो फिर, घर के बगीचे को गिरवी रख दो," लू चिल्ला पड़ा। एक साथ उठ खड़े होकर वह तेजी से घड़ी में चाबी भरने लगा। "मैं गुलाम नहीं जो गिरवी रखने दूँगा। मैं यह काम कभी न करूँगा। हम सबको मार डालो अलैक्जेण्ड्रा, और अपने खयालात पूरे कर लो।"

ऑस्कर ने अपने उन्नत पीत भाल को मलते हुए कहा, "गिरवी का रुपया कैसे चुकाओगी?"

अलैक्जेण्ड्रा एक सिरे से सबको देखकर अपने होंठ चबाने लगी। उन्होंने उसे इतना हताश पहले कभी न देखा था।

"अच्छा सुनो," अन्त में वह बोली। "छः साल के लिए हम रुपया उधार लेते हैं, और उस रुपये से लिंस्ट्रम की आधी, क्राउन की आधी और स्ट्रब की चौथाई जमीन खरीद लेते हैं। इस तरह हमारे पास चार हजार एकड़ जमीन हो जायगी। क्यों ठीक है न? छः साल तक हमें गिरवी की रकम चुकानी न पड़ेगी। तब तक इस जमीन का एक एकड़ तीस डॉलर का हो जायगा—वैसे होगा पचास डॉलर का, लेकिन हम तीस डॉलर ही लगाते हैं। तब बगीचे के किसी एक हिस्से को बेचकर हम सोलह सौ डॉलर कर्ज चुका सकते हैं। जिस मौके का पिताजी इन्तजार कर रहे थे अब वह आ गया है।"

लू इधर-उधर चक्कर लगाते हुए बोला, "लेकिन तुम कैसे कह सकती

हो कि जमीन के भाव इतने ऊँचे हो जायँगे कि हम गिरवी की रकम चुका सकेंगे। और···"

"यही नहीं हम धनी भी हो जायँगे," अलैक्जेण्ड्रा ने दृढ़ता से कहा। "यह सब कैसे होगा, मैं नहीं बता सकती, लू! इसके लिए तुम्हें मुझ पर विश्वास करना होगा। मेरा ऐसा खयाल है, बस यही मैं कह सकती हूँ।"

ऑस्कर मुँह लटकाए बैठा था, उसके हाथ घुटनों के बीच झूल रहे थे। "लेकिन हम इतनी ज़्यादा जमीन पर काम तो नहीं कर सकते," उसने अलिप्त भाव से कहा मानो वह स्वयं से बातें कर रहा हो। "सारी जमीन जैसी-की-तैसी पड़ी रहेगी और हम काम करते-करते मर जायँगे।" एक गहरी साँस लेकर उसने अपनी मुट्ठी मेज पर दे मारी।

अलैक्जेण्ड्रा की आँखों में आँसू उमड़ आए। ऑस्कर के कन्धे पर हाथ रखकर वह बोली, "भोले बच्चे, तुम्हें काम नहीं करना पड़ेगा। दूसरों की जमीनें खरीदने वाले शहरी लोग खुद काम नहीं करते। मैं नहीं चाहती कि तुम लोग अपने हाथ से काम करो। मैं तो चाहती हूँ कि तुम स्वतन्त्र हो और एमिल स्कूल जाने लगे।"

लू ने अपना सिर इस तरह पकड़ रखा था मानो फटा जा रहा हो। "सब कहेंगे हम पागल हो गए। अगर यह पागलपन न होता तो सभी ऐसा करते होते।"

"अगर सब करते तो हमारे लिए सुअवसर न आता। लू, मैं उस चुस्त नौजवान की बात कर रही थी जो नई तरह की तिनपतिया घास पैदा कर रहा है। उसका कहना है—अक्सर सही काम वही होता है जिसे सब नहीं करते। हम अपने पड़ोसियों से ज्यादा अच्छी हालत में क्यों हैं? क्योंकि पिताजी ज़्यादा अक्लमन्द थे, पुराने देशों के लोगों की निस्बत हम बेहतर लोग हैं। हमें उनसे ज़्यादा काम कर दिखाना चाहिए और हमेशा भविष्य पर दृष्टि रखनी चाहिए। हाँ, मां अब मैं अपनी बात कह चुकी।"

अलैक्जेण्ड्रा उठ खड़ी हुई। लड़के मवेशियों को देखने अस्पताल जा चुके थे और जब वे लौटे तो लू बाजा बजाता हुआ नजर आया। उन्होंने

अलैक्जेण्ड्रा की योजना के बारे में फिर कुछ न कहा, पर अलैक्जेण्ड्रा को विश्वास हो चुका था कि वे उसकी बात मान चुके हैं।

"जो तुम नहीं करना चाहते तो मत करो, ऑस्कर," उसने धीरे से कहा। वह कुछ देर चुप रही पर ऑस्कर ने फिर भी जवाब न दिया। "अगर तुम नहीं चाहते तो मैं इस बारे में कभी बात न करूँगी। तुम निराश क्यों होते हो ?"

"मैं कागज़ों पर दस्तखत करने से डरता हूँ," वह धीरे से बोला।

"तो दस्तखत मत करना। अगर तुम नहीं चाहते तो मैं भी नहीं चाहती।"

"नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है," ऑस्कर ने सिर हिलाकर कहा। "मैं समझता हूँ हमारे सामने एक अच्छा अवसर है जिसकी सम्भावनाओं के बारे में मैंने काफी सोचा है। लेकिन अभी भी हम पर काफी कर्ज़ है और फिर और बढ़ जायगा। कर्ज़ से छुटकारा पाना बड़ा मुश्किल काम है।"

"इस बारे में जितना मैं जानती हूँ उतना और कोई नहीं जानता, ऑस्कर! इसीलिए मैं एक आसान रास्ता आज़माना चाहती हूँ। मैं नहीं चाहती कि तुम एक-एक डॉलर पर गिला करो।"

"हां, मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूँ। हो सकता है तुम्हारी बात सही निकले।" ऑस्कर अपनी दोहनी उठा घर की ओर चल पड़ा।

अलैक्जेण्ड्रा ने अपना दुशाला अच्छी तरह लपेट लिया। वह चक्की के सामने झुकी खड़ी रही। शिशिर के कोहरे से आच्छादित आकाश में चमकते तारों की ओर उसकी दृष्टि थी।

: २ :

पड़ोस के खेत

: १ :

जॉन बर्गसां को मरे सोलह वर्ष हो चुके। उसकी कब्र के पास ही उसकी पत्नी की कब्र है और उन कब्रों के श्वेत चिह्न गेहूँ के खेतों के आरपार चमकते दिखाई देते हैं। यदि बर्गसां अपनी कब्र से पुनः जीवित हो उठ सकता तो शायद उस भूमि को न पहचान पाता जिसके नीचे वह इतने दिनों से शयन कर रहा था। पठार की खुरदरी मिट्टी से बनी कब्र अब हमेशा के लिए लुप्त हो चुकी थी। कब्रस्तान के पास किसानों के चमचमाते मकान और लाल-लाल खलियानों पर स्थित पवन-यन्त्र हरे, भूरे और पीले खेतों के आरपार एक-दूसरे की ओर निहारते नज़र आते थे।

अब वह कस्बा घना बसा हुआ था। उसकी उर्वरा भूमि में भरपूर फसलें होती थीं। शुष्क और स्वास्थ्यवर्धक जलवायु तथा इकसार ज़मीन के कारण खेती-बारी में अधिक श्रम नहीं लगाना पड़ता था। कभी-कभी गेहूँ काटने का काम दिन-रात चलता रहता और अच्छे मौसम में तो फसल काटने के लिए आदमी और घोड़े भी पूरे नहीं बैठते थे। अनाज के दाने इतने भारी होते कि झुक-झुककर मखमल की तरह बालों से कटने लगते।

गाँव के खुले वातावरण में एक विशेष स्वच्छन्दता, प्रफुल्लता और ताजगी व्याप्त रहती थी। मौसम की तबदीलियों पर गाँव का वातावरण

भी स्वयं को सहर्ष अर्पित कर देता था। पवन और धरा में एक ऐसा अद्-
भुत सहवास, ऐसा सरस आलिंगन दृष्टिगोचर होता मानो वे एक-दूसरे से
अनुप्राणित हों। आप उस वातावरण में वही शक्ति, वही पुष्टि, वही
संकल्प पाते जो कि कृषि-कार्य में समाहित है।

जून मास की एक सुबह कब्रस्तान के निकट ही एक युवक अपने उस
हँसिये पर धार चढ़ा रहा था जिसकी आहट का अनजाने में ही उसकी
गुनगुनाहट से ताल-सम जैसा मेल बैठ गया था। वह फलालीन की टोपी
और पतलून पहने हुए था और उसकी सफेद फलालीन की कमीज़ की
आस्तीनें कुहनियों तक चढ़ी हुई थीं। हँसिये पर धार चढ़ाकर उसने सिल्ली
को पतलून की पिछली जेब में डाल लिया और हँसिये को झुलाने लगा।
वह अभी तक सीटी बजाकर गा रहा था, पर धीरे-धीरे शायद आसपास के
शान्तिप्रिय लोगों के खयाल से। शायद वह अचेतन आदर था क्योंकि
वह अपने विचारों में डूबा हुआ था और वे लोग उससे काफी दूर थे।
भव्य कपाल वाला वह सुन्दर युवक था—देवदार के वृक्ष की भाँति सीधा
और तना हुआ। घनी भवों के नीचे उसकी सुडौल भूरी आँखें बहुत अच्छी
लगती थीं। उसके सामने के दोनों दाँतों के बीच बहुत काफी खाली जगह
थी जिसके कारण उसे सीटी बजाने में निपुणता प्राप्त थी। सीटी बजाने के
लिए वह अपने कालेज में भी प्रसिद्ध हो चुका था।

घास काटते वक्त जब कभी उसे गौर से देखना होता या किसी ढेले
को तोड़ने के लिए रुकना पड़ता तो वह अपनी संगीत-धारा रोक देता और
फिर जहाँ से छोड़ा था वहीं से गाना शुरू कर देता। तब उसका हँसिया
भी फिर से हवा में झूलने लगता। वह उस समय उन थककर सोये हुए
अगुआओं के बारे में नहीं सोच रहा था जो पहले इस इलाके में आये थे
और जिनकी कब्रों के ऊपर अब उसका हँसिया लहरा रहा था। न वह
पुराने बियावान देश के बारे में या अपनी बहन के उस संघर्ष के बारे में
ही सोच रहा था जिसमें उसकी सफलता निश्चित थी जब कि दूसरे लोगों
की हिम्मत टूट चुकी थी और वे चल बसे थे। वे सब बचपन की धुँधली

बातें थीं जो आज जीवन की उज्ज्वल तरंगों में एक टीम के कैप्टन होने, अनेक राज्यों में हाई जम्प का रिकार्ड तोड़ने तथा इक्कीस वर्ष की जवानी की चकाचौंध में खो चुकी थीं। लेकिन कभी-कभी काम करते-करते वह रुक जाता और ज़मीन की ओर इस झल्लाहट से देखता मानो वह कह रही हो कि इक्कीस वर्ष की आयु के व्यक्ति की भी अपनी समस्याएँ होती हैं।

जब वह लगभग घण्टे-भर तक घास काट चुका उसे अपने पीछे सड़क पर किसी गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनाई दी। यह समझकर कि उसकी बहन खेतों से लौट रही होगी वह अपने काम में जुटा रहा। गाड़ी रुकी और एक स्त्री-सुलभ कोमल वाणी सुनाई दी, "काम हो चुका, एमिल?" हँसिये को वहीं डालकर और अपने रूमाल से मुँह व गरदन पोंछते हुए वह खेत की मेड़ की ओर चल पड़ा। गाड़ी में एक युवती बैठी थी—हाथों में दस्ताने और धूप से बचने के लिए टोप पहने हुए। उसका मुँह गोल और गंदमी था; उसके गाल और होठों पर गुलाल जैसी लाली बिखरी हुई थी और उसकी नाचती हुई भूरी आँखों से खुशी छलक रही थी। हवा उसका टोप फड़फड़ाकर उसके भूरे बालों में बल डाल-डालकर उसे चिढ़ा रही थी। सिर हिलाकर उस लम्बे नौजवान का उसने अभिवादन किया।

"तुम्हें कब फ़ुरसत मिलेगी? पहलवान के लिए तो यह कोई खास काम नहीं है। देखो, शहर जाकर मैं तो लौट भी आई। अलैक्जेण्ड्रा तुम्हें बहुत देर तक सोने देती है। लू की बीवी बता रही थी कि उसने तुम्हें कितना बिगाड़ दिया है। अच्छा, अगर काम पूरा हो चुका हो तो आओ गाड़ी में बैठ जाओ," लगाम सँभालते हुए वह बोली।

"अभी हुआ जाता है। ज़रा ठहरो, मेरी," एमिल बहलाने लगा। अलैक्जेण्ड्रा ने तो मुझसे सिर्फ अपने हिस्से का ही खेत काटने के लिए कहा था। लेकिन, देखती हो, मैंने दूसरों का भी काफी खेत काट डाला। थोड़ी देर और रुको।"

मेरी शैब्रेटा अपनी जगह बैठी नौजवान के सबल हाथों के हिलने-डुलने में संगीत अनुभव कर रही थी और अपने मन में उठती हुई किसी

धुन के अनुरूप पैर डुला रही थी। इसी तरह कुछ समय बीत गया। एमिल खेत काटने में जोर-शोर से लगा था और मेरी घास का कटकर गिरना देख रही थी। वह इतमीनान से बैठी झूम रही थी। वही लोग इस तरह से बैठ सकते हैं जो खुशमिजाज हों, लचीले हों और परिस्थितियों के अनु-रूप अपने-आपको ढाल सकने में समर्थ हों। घास काट चुकने पर एमिल खेत के अहाते का दरवाजा बन्दकर गाड़ी में आ धमका। हँसिया अभी भी उसके हाथ में था।

मेरी घोड़ा हाँकते हुए बोली, "एनी को तो तुम जानते हो न?" उसकी नजर युवक की नंगी बाँहों पर थी। "जब से घर लौटे हो कितने सांवले हो गए हो। काश, मेरे बगीचे में काम करने वाला भी कोई पहल-वान होता! चैरी चुनते-चुनते मैं तो घुटनों तक भीग जाती हूँ।"

"जब चाहो तब पहलवान रख सकती हो। बरसात तक रुको तो अच्छा है," एमिल ने गरदन घुमाकर क्षितिज की ओर देखा मानो वह बादलों की प्रतीक्षा कर रहा हो।

"तो तुम करोगे मेरा काम? बड़े अच्छे लड़के हो!" मेरी ने एमिल की ओर तिरछी निगाह से देखा और एक हल्की मुस्कान बिखेर दी। एमिल ने जाहिरा तौर पर न देखते हुए भी मेरी की इस हरकत को देख लिया था। सच तो यह था कि मेरी की नजर से बचने के लिए ही उसने आस-मान की ओर देखा था। मेरी बोलती रही, "मैं एंजिलिक की शादी की पोशाक देख रही थी। उसे देखकर मैं इतनी बेताब हो उठी कि मुश्किल से ही अब इतवार तक इन्तजार कर सकती हूँ। एमिडी भी बहुत खूबसूरत दूल्हा लगेगा।" मेरी ने एमिल की ओर मसखरी से देखा और एमिल झेंप गया। घोड़े में चाबुक लगाते हुए मेरी बोलती रही, "फ्रैंक मुझसे नाराज है क्योंकि मैंने उसके घोड़े की जीन जेन स्मिरका को दे दी। हो सकता है आज शाम को वह मुझे अपने साथ नाच में न ले जाय। पर दावत का लालच तो उसे होगा ही। अच्छा सुनो, एमिल, तुम मेरे साथ एक-दो बार से ज्यादा मत नाचना। फ्रैंच लड़कियों के साथ खूब नाचना। अगर तुम उनके

साथ नहीं नाचोगे तो उनके दिलों को चोट पहुँचेगी। उनके खयाल में तुम घमण्डी हो क्योंकि तुम स्कूल में पढ़ चुके हो।"

एमिल की नाक-भौंह सिकुड़ गईं। "तुम्हें कैसे मालूम, मेरे बारे में उनका यह खयाल है।"

"राइल मार्सेल की पार्टी में तुम उनके साथ ज़्यादा नहीं नाचे और जिन निगाहों से उन्होंने तुम्हारी और मेरी तरफ देखा, उससे मैं सब समझ गई।"

"अच्छा, तो ठीक है," एमिल ने अपने हँसिये की तेज़ धार देखते हुए कहा।

खेतों से बहुत दूर एक पहाड़ी पर स्थित एक सफेद बड़े मकान की ओर गाड़ी चली जा रही थी। बहुत से छप्पर और अहातों से वह एक छोटा-सा गांव लगता था। अगर कोई अजनबी वहाँ पहुँचता तो खेतों की खूबसूरती और हरियाली देख प्रभावित हुए बिना न रहता। उस बड़े खेत में कुछ खास अपनापन था—एक असाधारण सफाई-सुथराई थी और हर बारीकी पर गौर किया गया था। पहाड़ी के तले में पहुँचने से मील-भर पहले ही सड़क के दोनों ओर नारंगियों के पेड़ खड़े दिखाई देंगे। पहाड़ी के दक्षिण में, एक छोटी-सी सुरक्षित घाटी में एक हरा-भरा और फलों से लदा बाग है। गांव का कोई भी आदमी बता सकता है कि वही गांव का सबसे अच्छा बाग है और उसकी मालकिन है अलैक्ज़ेण्ड्रा बर्गसां।

अगर आप पहाड़ी पर चढ़कर अलैक्ज़ेण्ड्रा के मकान में प्रवेश करें तो आप उसकी सजावट में एक अजीब अपूर्णता और असमानता पाएँगे। एक कमरा ज़रूरत से ज़्यादा सजा हुआ है तो दूसरा प्रायः बिलकुल खाली है। मकान का सबसे अच्छा भाग रसोईघर या बैठकखाना है।

मकान के बाहर अगर आप फूलों के बाग में जायँ तो वहाँ भी आपको वही सुव्यवस्था और सुचारुता मिलेगी जो कि खेतों में, झाड़ियों और अहातों में, समभुज चरागाहों में और छायादार सरपत के पेड़ों में प्रदर्शित होती है। आप ठीक ही महसूस करेंगे कि अलैक्ज़ेण्ड्रा का मकान एक बड़ी

खुली जगह है और धरती के रूप-रंग में ही उसकी अपनी सर्वोत्तम अभि-व्यक्ति है।

: ७ :

एमिल दोपहर बाद घर पहुँचा और जब वह रसोईघर में दाखिल हुआ तो अलैक्जेण्ड्रा लम्बी मेज के एक सिरे पर बैठी अपने यहाँ काम करने वाले लोगों के साथ खाना खा रही थी। वह हमेशा इन लोगों के साथ खाना खाया करती थी—अगर कभी मेहमान आ जाते तो बात दूसरी होती। एमिल अपनी बहन की दाहिनी ओर एक खाली कुरसी पर बैठ गया। अलैक्जेण्ड्रा के घर का काम करने वाली तीन सुन्दर लड़कियाँ खाना परोसने में व्यस्त थीं। वे एक-दूसरे के बीच में आ जाती थीं और खिल-खिलाकर एक-दूसरे की नुक्ताचीनी करती थीं। लेकिन, जैसा कि अलैक्जेण्ड्रा ने अपनी भाभियों को कई बार बताया था, उसने इन तीनों लड़कियों को उनकी खिलखिलाहट के लिए ही रख छोड़ा था; जरूरत पड़ने पर सारा काम वह खुद भी कर सकती थी। इन लड़कियों के घरों से आये हुए लम्बे-लम्बे पत्र, उनका प्रणय और उनकी सजावट से अलैक्जेण्ड्रा को मनोरंजन प्राप्त होता था।

सिगना सबसे छोटी और सबसे सुन्दर लड़की थी। अलैक्जेण्ड्रा को उसके गुलाबी गाल और पीले सुनहरी बाल बहुत अच्छे लगते थे। अलै-क्जेण्ड्रा उसे बहुत प्यार करती थी पर हमेशा उसे अपनी नजर के नीचे रखती थी। खाने के वक्त सिगना बहुत चुलबुली हो जाती और जब साथ में मर्द होते उससे कॉफी या मक्खन जरूर बिखर जाता। एक साथ बैठकर खाना खाने वाले छः मर्दों में नेल्स जेन्सन के बारे में सोचा जाता था कि वह सिगना से प्रेम करता है, हालांकि नेल्स ने कभी अपना प्रेम जाहिर न होने दिया था। सिगना तक भी यह नहीं कह सकती थी कि उनकी मोहब्बत किस मंजिल तक पहुँच चुकी है। जब अलैक्जेण्ड्रा उससे इस बारे में पूछती तो अपने दोनों हाथों से अपना मुँह छिपाकर धीरे से वह कहती, "मैं क्या

जानूँ ? लेकिन नेल्स हर बात में मुझे झिड़कता रहता है, मानो मुझे अपनाना चाहता हो।"

अलैक्जेण्ड्रा की बाईं ओर नंगे सिर, लम्बी कमीज पहने एक बुड्ढा बैठा था। सोलह साल पहले भी उसका खुरदरा सिर इतना ही सफेद था। लेकिन अब उसकी छोटी नीली आँखें ज्यादा पीली हो गई हैं और पेड़ से पककर गिरे हुए सेब की तरह उसके चेहरे पर झुर्रियाँ भी पड़ गई हैं। कुछ वर्ष पूर्व ईवार की सारी जमीन कुप्रबन्ध के कारण उसके हाथ से निकल गई थी। अलैक्जेण्ड्रा ने उसे अपने साथ लाकर रख लिया और तभी से वह उस परिवार का सदस्य बनकर रहता आया है। बुढ़ापे के कारण वह खेत में काम नहीं कर सकता लेकिन खेतों और मवेशियों की देखभाल करता है। सरदियों में शाम के वक्त कभी-कभी अलैक्जेण्ड्रा उसे अपनी बैठक में बुलाकर बाइबल सुन लेती है। वह अभी तक बाइबल अच्छी तरह पढ़ लेता है। ईवार को लोगों के बीच रहना पसन्द नहीं, अतः अलैक्जेण्ड्रा ने उसे नौहरे में एक कमरा दे रखा है जहाँ वह आराम से रहता है और जैसा कि कहा करता है, उसका नौहरा सांसारिक प्रलोभनों से बहुत दूर है। लेकिन यह कोई भी नहीं जानता कि ईवार को कौनसा प्रलोभन हो सकता है ?

अलैक्जेण्ड्रा में भी कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है। उसके भरे हुए शरीर पर अधिक चमक आ गई है; उसका रूप पहले से ज्यादा निखर आया है और अब उसमें शक्ति भी पहले से अधिक है। लेकिन उसकी चाल-ढाल में वही शान्ति और शीलता, वही चमकदार आँखें और गुथे हुए बालों की वही दो चोटियाँ दिखाई देती हैं। उसके घुँघराले उच्छृङ्खल बाल चोटियों से बाहर निकले रहते हैं और उसका सारा सिर एक ताजा सूरजमुखी के फूल जैसा दिखाई देता है। गरमियों में अलैक्जेण्ड्रा का चेहरा कुम्हला जाता था क्योंकि धूप के टोप को वह सिर पर न ओढ़कर अक्सर कन्धे पर लटकाए रहती थी। जब कभी उसके ब्लाउज का कॉलर गरदन से नीचे आ जाता या जब आस्तीनें कुहनियों तक चढ़ जातीं तो उसकी त्वचा

इतनी कोमल और इतनी ताजा—बर्फ की तरह ताजा—नजर आती जितनी कि सिर्फ स्वीडन की स्त्रियों की ही हो सकती है।

खाने की मेज़ पर अलैक्जेण्ड्रा अक्सर स्वयं चुप रहती पर मर्दों को बातें करने के लिए प्रोत्साहित करती रहती थी। स्वयं दत्तचित होकर बातें सुनती रहती और अगर वे मूर्खतापूर्ण बातें करते तो भी अपना धैर्य न खोती थी।

बार्ने स्लिन अलैक्जेण्ड्रा के साथ पाँच साल से रहता है और वास्तव में अलैक्जेण्ड्रा का दाहिना हाथ है। उस रोज बार्ने स्लिन अनाज इकट्ठा करने के लिए बनाये गए नये तहखाने पर बुड़बुड़ा रहा था। अलैक्जेण्ड्रा द्वारा बनवाया हुआ वह गाँव का सबसे पहला तहखाना था और सब पड़ोसी, यहाँ तक कि अलैक्जेण्ड्रा के अपने आदमी भी उस तहखाने के बारे में दुविधा में थे। "अगर तहखाने से काम नहीं चलेगा तो भी हमारे पास काफी अनाज बाकी रह जायगा," बार्ने ने कहा।

सिगना का दिलगीर आशिक बोल उठा, "लू कहता है कि वह अपने यहाँ तहखाना नहीं बनने देगा। उसका कहना है कि तहखाने से निकले अनाजको खाने से मवेशी अफरा जाते हैं। उसने सुना है कि ऐसे अनाज के खाने से एक आदमी के चार घोड़े मारे गए।"

अलैक्जेण्ड्रा ने मेज़ पर बैठे सब लोगों की ओर देखा। "अच्छा, तो फिर यही रास्ता है कि हम इसे आज़माकर देखें। मवेशियों को चारा देने के सम्बन्ध में मेरे और लू के विचारों में मतभेद है और यह ठीक ही है क्योंकि परिवार के सभी लोगों का एक-जैसा सोचना अच्छा नहीं होता। ऐसा परिवार उन्नति नहीं कर सकता। लू मेरी गलतियों से और मैं उसकी गलतियों से बहुत कुछ सीख सकती हूँ। क्यों, ठीक है न, बार्ने ?"

बार्ने हँसा। उसे लू पसन्द न था। लू उससे हमेशा अकड़ा रहता था क्योंकि लू का खयाल था कि अलैक्जेण्ड्रा अपने नौकरों को बहुत ज्यादा तनखा देती है। "मैं नहीं जानता," वह बोला, "लेकिन किसी भी चीज़ को ईमानदारी से परखकर देखना चाहिए। इतना सब खर्च करने पर

उसे आजमाकर देखना ही चाहिए। आओ, एमिल उसे देख आएँ," बार्ने कुरसी खींचकर उठ खड़ा हुआ और अपना टोप उठाकर एमिल के साथ बाहर निकल पड़ा। लोगों का खयाल था कि एमिल ने अपने कालेज के विचारों के कारण उस तहखाने को बनाने में काफी योग दिया था। बूढ़े ईवार को छोड़कर बाकी सब लोग एमिल और बार्ने के साथ हो लिए। खाना खाते वक्त ईवार काफी उदास था और उन लोगों की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा था, यहाँ तक कि जब मवेशियों के अफरा जाने की बात चली तो भी वह चुप रहा यद्यपि इस सम्बन्ध में उसके अपने विचार अवश्य थे। मेज़ से उठते हुए अलैक्जेण्ड्रा ने ईवार से पूछा, "कुछ कहना है, ईवार? आओ चलो, बैठक में चलें।"

बूढ़ा ईवार अलैक्जेण्ड्रा के पीछे-पीछे चलने लगा। बैठक में पहुँचकर अलैक्जेण्ड्रा ने उससे बैठने के लिए कहा। ईवार सिर हिलाकर बैठ गया और अलैक्जेण्ड्रा उसके बोलने का इन्तजार करती रही।

"मालकिन," आँखें नीची कर ईवार ने धीरे से कहा, "मैं अब यहाँ के लोगों की आँखों में खटकने लगा हूँ। जानती हो, क्या बातें होती हैं?"

"कैसी बातें, ईवार?"

"मुझे यहाँ से बाहर भेजने—पागलखाने भेजने—के बारे में।"

अलैक्जेण्ड्रा ने सिलाई की टोकरी नीचे रख दी। "मैंने तो नहीं सुना," उसने मज़बूती के साथ कहा। "तुम्हें इन बातों को सुनने की क्या जरूरत? तुम तो जानते हो, मैं ऐसा करने के लिए कभी राजी न होऊँगी।"

ईवार अपना रूखा सिर उठाकर छोटी-छोटी आँखों से अलैक्जेण्ड्रा की ओर देखने लगा। "उनका कहना है कि अगर वे शिकायत करें तो तुम भी मुझे पागलखाने में जाने से नहीं रोक सकतीं। लोग कहते हैं कि तुम्हारे भाइयों को डर है कि मुझ पर बुरे दिनों का दौरा आने पर मैं तुम्हारा नुकसान कर सकता हूँ। भगवान् न करे कि जिस हाँडी में मैं खाऊँ उसी में छेद करूँ," बूढ़े की दाढ़ी पर आँसुओं की धार बह चली।

अलैक्जेण्ड्रा झुँझला उठी। "ईवार, ताज्जुब है, तुम ऐसी बातें कह-

कर मुझे परेशान करते हो ! अभी तक मैं ही इस घर की मालकिन हूँ, दूसरों को क्या लेना-देना ? जब तक मैं तुमसे खुश हूँ, कोई कुछ नहीं कह सकता।"

ईवार अपनी जेब से लाल रूमाल निकालकर आँसू पोंछने लगा। "मैं नहीं चाहता कि मेरे रहने से तुम्हारा नुकसान हो, जैसा कि और लोगों का खयाल है। और मेरे यहाँ रहने से तुम दूसरे आदमी भी नहीं रख सकतीं।"

अलैक्जेण्ड्रा फिर झुँझला उठी पर बूढ़े ने उसे बोलने नहीं दिया और तत्परता के साथ कहता रहा :

"सुनो मालकिन, तुम्हें इन बातों पर गौर करना ही चाहिए। तुम जानती हो ईश्वर ही मेरे दौरे भेजता है और मैं अपनी ओर से किसी प्राणी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता। तुम्हारा तो विश्वास है कि जिसे जिस रूप में ईश्वर दिखाई दे उसी रूप में उसकी पूजा करनी चाहिए। लेकिन इस देश का यह रिवाज नहीं है। यहाँ सबके लिए एक ही रास्ता है। लोग मुझसे नफ़रत करते हैं क्योंकि मैं जूते नहीं पहनता अपने बाल नहीं काटता और मुझे ईश्वर के दर्शन होते हैं। हमारे पुराने देश में मेरे जैसे बहुत से लोग थे जिन्हें ईश्वर का साक्षात्कार होता था या कब्रस्तान में कुछ ऐसा दिखाई देता था जिससे वे बिलकुल बदल जाते थे। हम ऐसे लोगों का खयाल न करते थे और उन्हें मनमानी करने देते थे। लेकिन यहाँ अगर कोई जूते नहीं पहनता, बाल नहीं काटता तो उसे पागलखाने भेज दिया जाता है। अभी तक तुम्हारे सौभाग्य ने ही मेरी रक्षा की है, अगर तुम्हारे दिन खराब होते तो इन लोगों ने मुझे कभी का पागलखाने में भेज दिया होता।"

जैसे-जैसे ईवार अपने हृदय के उद्गार प्रकट करता रहा उसकी उदासी कम होती गई। अलैक्जेण्ड्रा जानती थी कि वह ईवार के लम्बे उपवासों और प्रायश्चितों को बातें करके ही समाप्त करा देती थी। वह उसे उन विचारों को व्यक्त करने देती थी जो उसे परेशान किया करते थे। ईवार के लिए संवेदना अमृत और उपहास विष-तुल्य था।

"तुमने जो कुछ कहा उसमें बहुत कुछ सच्चाई है ईवार ! वे मुझसे भी जलते हैं क्योंकि मैंने एक नये तरीके का तहखाना बनवाया है। लेकिन मुझे तुम्हारी जरूरत है। दूसरे लोग जो कुछ कहते हैं उस बारे में अब मुझसे फिर कभी कुछ न कहना। लोग जो चाहें बकते फिरें, हम जैसा मन में आएगा वही करेंगे। तुम बारह साल से मेरे साथ हो और जानते हो कि मैं और लोगों से राय लेने की बजाय अक्सर तुमसे ही राय लेती हूँ। इस बात से तुम्हें सन्तोष होना चाहिए।"

ईवार ने विनम्रतापूर्वक सिर झुकाकर कहा, "हाँ मालकिन, अब मैं उनकी बातें कहकर तुम्हें परेशान न करूँगा। इतने वर्षों से मैं तुम्हारी मरजी के मुताबिक काम करता आया हूँ हालाँकि तुमने मुझसे कभी कुछ नहीं कहा कि क्यों मैं हर रात, चाहे कितनी ही सरदी क्यों न हो, अपने पैरों को धोता हूँ।"

अलैक्जेण्ड्रा हँस पड़ी। "ओह, पैरों की चिन्ता क्यों करते हो, ईवार ?"

ईवार ने रहस्य-भरी दृष्टि से इधर-उधर देखकर बहुत धीमी आवाज़ में कहा, "जानती हो, लू के घर क्या है ? नहाने के लिए एक बहुत बड़ा सफेद टब ! जब तुमने मुझे उनके यहाँ झरबेर लेकर भेजा था तो बूढ़ी ली और बच्ची के सिवाय बाकी सब लोग शहर गये हुए थे। ली ने मुझे अन्दर ले जाकर टब दिखलाया और कहा कि उसमें अच्छी तरह से नहाना असम्भव है क्योंकि इतने ज्यादा पानी में झाग नहीं बन पाते। जब वे लोग उसे भरकर ली को उससे नहाने भेजते हैं तो वह पानी छलकाकर नहाने का बहाना करती है और जब सब सो जाते हैं तो पलंग के नीचे रखे लकड़ी के अपने पुराने टब में नहाती है।

अलैक्जेण्ड्रा हँसी से लोटपोट होने लगी। "वाह री बूढ़ी ली, चिन्ता मत करो ईवार, जब वह यहाँ आयेगी तो सब बातें अपने पुराने ढंग से कर सकेगी, और जितनी चाहे बीयर पी सकेगी। हम बूढ़ों के लिए एक लंगर-खाना खोल लेंगे।"

ईवार अपने बड़े रूमाल को कमीज में ठूँसता हुआ बोला, "हमेशा यही होता है मालकिन, कि मैं तुम्हारे पास दुखी दिल लेकर आता हूँ और हलका होकर लौटता हूँ।"

"अच्छा, अब जाओ और एमिल की घोड़ी गाड़ी में जोत दो।"

: ३ :

अलैक्जेण्ड्रा को ईवार के बारे में अभी और भी सुनना बाकी था। इतवार को उसने अपने शादीशुदा भाइयों को खाने पर बुलाया। खाने के कमरे में चमकदार फरनीचर, रंगीन काँच और बेकार चीनी के बरतन नई समृद्धि का बोध करा रहे थे। अलैक्जेण्ड्रा मानती थी कि उसे इन चीजों का कोई ज्ञान नहीं और इसीलिए उसने यह सामान्य धारणा अपना रखी थी कि जितनी ज्यादा फालतू चीजें इकट्ठी की जायँ उतनी ही ज्यादा सजावट बढ़ती है। बात भी बहुत कुछ ठीक ही थी। चूँकि उसे खुद सादगी पसन्द थी, इसलिए यह और भी ज्यादा जरूरी था कि बाहर के लोगों के बैठने वाले कमरों में वे चीजें इकट्ठी की जायँ जिन्हें लोग आमतौर पर पसन्द करते हैं। अलैक्जेण्ड्रा के मेहमान समृद्धि के इन विश्वासदायक प्रतीकों को देखकर प्रसन्न होते थे।

एमिल और ऑस्कर की बीवी के अलावा, जो कि गर्भवती थी, सारा परिवार खाने की मेज पर मौजूद था।

पाँच बरस से बारह बरस तक की उम्र वाले अपने चार बच्चों के साथ ऑस्कर एक कोने में बैठा था। ऑस्कर और लू दोनों में कोई खास तबदीली न हुई थी, और जैसा कि अलैक्जेण्ड्रा बहुत पहले कहा करती थी, वे दोनों अधिकाधिक अपना असली रूप प्राप्त करते जा रहे थे। लू अब ऑस्कर से ज्यादा बड़ा लगता था; उसके पतले चेहरे से चालाकी टपकती थी और आँखों के नीचे झुर्रियाँ नजर आती थीं, जब कि ऑस्कर के चेहरे में भारीपन और शिथिलता थी। ऑस्कर चाहे कितना ही शिथिल दिखाई देता हो, वह अपने भाई से ज्यादा कमाता था जिसकी वजह से लू में बेचैनी

और तीखापन पैदा हो गया था और वह दिखावटी बातें करता था। लू के साथ मुश्किल यह थी कि वह चालाक था, और जैसा कि ईवार कहा करता था, सब पड़ोसी जान गए थे कि उसका लोमड़ी जैसा चेहरा बेमतलब न था। इस प्रकार के लोगों के लिए राजनीति ही स्वाभाविक क्षेत्र है, और लू भी अपनी खेतीबाड़ी छोड़कर सम्मेलनों में भाग लेता और स्थानीय राजनीतिक पदों के लिए खड़ा होता।

लू की पत्नी, भूतपूर्व एनी ली, भी, ताज्जुब की बात थी कि अपने पति जैसी ही लगने लगी थी। उसका चेहरा अधिक लम्बा और तीखा हो गया था। वह अपने पिंगल केशों को अति आडम्बर के साथ सजाती और उँगलियों में अंगूठियाँ और गले में जंजीर तथा सौंदर्यवर्धक पिनों से सदा अलंकृत रहती थी। चुस्त, ऊँची एड़ी के जूतों की वजह से उसकी चाल बेढंगी लगती थी और वह सदा अपने कपड़ों में ही खोई रहती थी। खाने की मेज़ पर बैठते समय वह अपनी सबसे छोटी लड़की से बार-बार कह रही थी, "सँभलकर खाओ; देखो, अपनी माँ पर कुछ न गिरा देना।"

"जब मैं राजनीतिक सम्मेलन में भाग लेने हेस्टिंग्स गया हुआ था," लू कह रहा था, "मैं पागलखाने के सुपरिण्टेण्डेण्ट से मिला और मैंने उसे ईवार के लक्षण बताए। उसका कहना है कि ईवार बहुत खतरनाक साबित हो सकता है और उसे तो ताज्जुब है कि अभी तक ईवार ने कोई गड़बड़ क्यों नहीं की।"

अलैक्जेण्ड्रा मज़ाक में हँस दी। "ये सब बेकार बातें हैं, लू! अगर डाक्टरों की चले तो हम सबको पागल करार दें। ईवार में कुछ अजीबपन ज़रूर है पर हमारे यहाँ काम करने वाले आधे से ज़्यादा लोगों से वह अक्लमन्द है।"

लू का गुस्सा अपनी प्लेट में रखे गोश्त पर उतरा। "डाक्टर अपना काम खूब समझता है, अलैक्जेण्ड्रा! जब मैंने उसे बताया कि तुम किस तरह उसे अपने यहाँ रखे हुए हो तो उसे बहुत ताज्जुब हुआ। उसका कहना है कि किसी भी दिन वह खलिहान में आग लगा सकता है या

तुम्हारे और लड़कियों के पीछे कुल्हाड़ी लेकर दौड़ पड़ सकता है।"

बचकानी सिगना, जो कि उस समय खाना परोस रही थी, खिलखिला-कर रसोई की तरफ दौड़ पड़ी। अलैक्जेण्ड्रा की आँखें जगमगा उठीं। "देखा लू, सिगना भी यह बरदाश्त नहीं कर सकती। सब जानते हैं कि ईवार से कतई कोई खतरा नहीं।"

लू का चेहरा लाल हो उठा और उसने अपनी बीवी को इशारा करते हुए कहा, "खैर, कुछ भी हो, इस बारे में पड़ोसियों की बात भी सुनी जायगी। वह किसी के भी खलिहान में आग लगा सकता है। अगर कस्बे का कोई भी जमींदार उसकी शिकायत कर दे तो उसे ज़बरदस्ती पकड़कर ले जाया जायगा, इसलिए बेहतर यही है कि तुम उसे खुद अपने-आप भेज दो ताकि पड़ोसियों से मनमुटाव न बढ़े।"

अलैक्जेण्ड्रा अपने एक भतीजे को शोरबा देती हुई बोली, "अगर कोई भी पड़ोसी ऐसा करेगा तो मैं खुद ईवार की सरपरस्त बनकर मुकद्मा लड़ूँगी। मैं ईवार से पूरी तरह संतुष्ट हूँ।"

लू की बीवी, ऐनी न चाहती थी कि उसका पति अलैक्जेण्ड्रा की खुल्लमखुल्ला मुखालफत करे। उसने अनुरोधपूर्वक कहा, "लेकिन अलैक्जेण्ड्रा, क्या और लोगों के सामने उसे घूमता देखकर तुम्हें बुरा नहीं लगता ? वह हमारे लिए एक कलंक है, और तुमने उसे इतना चढ़ा रखा है। उसी के कारण लोग तुमसे दूर-दूर रहते हैं। मेरी बच्चियों को तो वह मौत जैसा खौफनाक नज़र आता है। क्यों, ठीक है न, मिली ?"

मिली मोटी-ताज़ी, मक्खन जैसे रंग की, पन्द्रह बरस की खुशमिजाज लड़की थी। वह अपनी दीदी जैसी लगती थी और उसी की तरह आराम-तलब थी। वह अपनी बुआ की ओर देखकर हँस पड़ी; उसके साथ वह अपनी माँ की निस्बत ज़्यादा अपनापन महसूस करती थी।

"मिली को ईवार से डरने की कोई ज़रूरत नहीं। ईवार को तो मिली खासतौर पर प्यारी है। मेरे खयाल में ईवार को अपने तरीके से सोचने और कपड़े पहनने का उतना ही हक है जितना कि हम सबका है। लेकिन,

अब मैं उसे दूसरे लोगों को तंग न करने दूँगी। मैं उसे घर से बाहर न निकलने दूँगी, लिहाजा तुम्हें परेशान होने की अब जरूरत न पड़ेगी। लू! मैं तुम्हारे नये बाथटब के बारे में पूछना चाहती थी। कैसा काम देता है?"

लू को अपनी बदहवासी दूर करने का मौका देने के लिए ऐनी ने आगे बढ़कर बोलना शुरू किया, "बहुत अच्छा काम दे रहा है। लू तो अब हफ्ते में तीन बार नहाता है और सारा गरम पानी खर्च कर देता है। मेरा खयाल है पानी में इतनी ज़्यादा देर रहने से कमजोरी आती है। अलैक्जेण्ड्रा, तुम्हें भी एक बाथटब जरूर लेना चाहिए।"

"मैं भी सोच रही हूँ कि एक बाथटब खरीदकर खलिहान में ईवार के लिए रखवा दूँ ताकि बाहर वालों को कुछ चैन पड़े। लेकिन बाथटब खरीदने से पहले मैं मिली के लिए एक पियानो खरीदना चाहती हूँ।"

मेज के एक कोने में बैठे ऑस्कर ने नजर उठाई। "मिली को पियानो की क्या जरूरत है? उसके अपने बाजे को क्या हुआ? अपने बाजे से काम ले सकती है और चर्च में जाकर भी तो बजा सकती है।"

ऐनी व्याकुल प्रतीत हुई। उसने अलैक्जेण्ड्रा से कह रखा था कि अपने इस इरादे के बारे में ऑस्कर के सामने कुछ न कहे। लू के बच्चों के लिए अलैक्जेण्ड्रा जो कुछ करती थी उससे ऑस्कर को ईर्ष्या थी। अलैक्जेण्ड्रा और ऑस्कर की बीवी की आपस में बिलकुल नहीं पटती थी।

"मेरा खयाल है, मिली को पियानो मिलना चाहिए," अलैक्जेण्ड्रा ने दृढ़ता के साथ कहा, "यहाँ की सब लड़कियाँ बरसों से संगीत सीख रही हैं, पर मिली ही ऐसी है जो सब-कुछ बजाकर सुना सकती है। जानती हो मिली, मैंने तुम्हें पियानो देना तब सोचा जब कि तुम उन पुराने गीतों को सीख गईं जो कि तुम्हारे बाबा गाया करते थे। मुझे खूब याद है कि *किस तरह वह बन्दरगाह में दूसरे मल्लाहों के साथ यह गीत* गाया करते थे। मैं तब स्टेला से बड़ी न थी," अलैक्जेण्ड्रा ने ऐनी की सबसे छोटी लड़की की ओर इशारा करते हुए कहा।

मिली और स्टेला दोनों ने दरवाजे में से बैठकखाने की दीवार पर टँगे

जॉन बर्गसां के चित्र की ओर देखा। अलैक्जेण्ड्रा ने उस चित्र को एक पुरानी फोटो से बनवाया था, जो कि जॉन बर्गसां ने स्वीडन से आते समय अपने मित्रों के लिए उतरवाई थी। वह पैंतीस वर्ष के एक इकहरे बदन के आदमी का चित्र था जिसके उन्नत ललाट पर मुलायम घुँघराले बाल थे, झुकी हुई मूँछें थीं और सुदूर में दृष्टि गड़ाए आँखें थीं मानो वे पहले से ही इस नई दुनिया को देख रही हों।

खाने के बाद लू और ऑस्कर बगीचे में आलूवालू तोड़ने चल दिए—उन दोनों में से किसी में भी अपना निजी बगीचा बनाने का धैर्य न था—और ऐनी रसोई में काम करने वाली अलैक्जेण्ड्रा की लड़कियों से गप लड़ाने चल दी। ऐनी अलैक्जेण्ड्रा की घरेलू व्यवस्था के बारे में अलैक्जेण्ड्रा की अपेक्षा इन लड़कियों से ज्यादा जानकारी प्राप्त कर लेती थी, और जो कुछ वह पता लगाती उससे अपने घर में फायदा उठाती थी। इस इलाके में अब किसानों की लड़कियाँ नौकरियाँ न करती थीं और इसलिए अलैक्जेण्ड्रा को किराया देकर स्वीडन से लड़कियाँ मँगवानी पड़ती थीं। जब वे शादी कर लेतीं तो उनकी बहनें या भानजी-भतीजियाँ उनकी जगह काम करने आ जाती थीं।

अलैक्जेण्ड्रा अपनी तीनों भतीजियों को लेकर फूलों के बाग में पहुँची। वे फूलों की क्यारियों के बीच से गुजर रही थीं कि एक बग्घी उनके दरवाजे के सामने आकर रुकी। बग्घी में से एक आदमी उतरकर सईस से बातें करने लगा। लड़कियाँ एक ऐसे अजनबी को देखकर बहुत खुश थीं जिसके लिबास और नुकीली दाढ़ी से मालूम पड़ता था कि वह कहीं बहुत दूर से आया है। तीनों लड़कियाँ अपनी बुआ के पीछे हो गईं और झाड़ियों में से झाँककर देखने लगीं। अजनबी दरवाजे में आकर, एक हाथ में अपना टोप लेकर, मुस्कराने लगा और अलैक्जेण्ड्रा उससे मिलने धीरे-धीरे आगे बढ़ी।

"मुझे नहीं पहचानतीं, अलैक्जेण्ड्रा ? मैं तो तुम्हें कहीं भी पहचान सकता था।"

अलैक्जेण्ड्रा ने अपने हाथ की आड़ लगाकर गौर से देखा और यका-यक उसने एक तेज कदम उठाया। "क्या तुम हो कार्ल लिंस्ट्रम?" और दोनों हाथ आगे बढ़ाकर उसने कार्ल के हाथ पकड़ लिये। "सैडी, मिली, दौड़कर जाओ और अपने पापा व चाचा ऑस्कर को खबर करो कि हमारा पुराना दोस्त कार्ल लिंस्ट्रम आया हुआ है। जल्दी जाओ, तुम कैसे आ गए कार्ल? मुझे यकीन नहीं हो रहा है!" अलैक्जेण्ड्रा अपनी आँखों के आँसू पोंछकर हँसने लगी।

"तो तुम मुझे देखकर खुश हो न और मुझे रातभर ठहरने दोगी न? मैं तुमसे मिले बिना यहाँ से गुजर नहीं सकता था। तुम तो बिलकुल भी नहीं बदलीं, अलैक्जेण्ड्रा! मैं जानता था तुम बदल नहीं सकतीं। तुम कितनी अच्छी लगती हो!" एक कदम पीछे हटकर वह अलैक्जेण्डा को निहारने लगा।

अलैक्जेण्ड्रा शरमाकर हँसने लगी, "लेकिन कार्ल—तुमने दाढ़ी रख ली—मैं तुम्हें कैसे पहचानती? जब तुम यहाँ से गये थे, लड़के ही थे। अच्छा, तुम्हारा सन्दूक कहाँ है?"

"हैनोवर में है। यहाँ मैं सिर्फ कुछ दिन ही ठहर सकता हूँ। मुझे समुद्र-तट तक जाना है।"

वे दोनों साथ-साथ चलने लगे। "इतने साल बाद भी सिर्फ कुछ दिन!" अलैक्जेण्ड्रा उँगली दिखाकर बोली। "अब तुम फंदे में फँस गए हो, निकलना इतना आसान नहीं है," कार्ल के कन्धे पर हाथ रखकर वह प्रेमपूर्वक बोली। "पुरानी याद की खातिर ही तुम्हें यहाँ आना था। अच्छा, समुद्र-तट पर क्यों जा रहे हो?"

"जाना ही पड़ेगा। मैं बहुत बड़ी दौलत की तलाश में हूँ। सीटेल से अलास्का जाना है।"

"अलास्का?" आश्चर्य से देखते हुए उसने पूछा, "अलास्का में क्या चित्र बनाओगे?

"चित्र?" भौंह सिकोड़ते हुए युवक ने कहा। "मैं चित्रकार नहीं

हूँ, अलैक्जेण्ड्रा ! मैं शिल्पकार हूँ।"

"लेकिन मेरे पास तुम्हारे चित्र रखे हैं···"

"ओ, वे जल-चित्र तो मैंने शौकिया बनाये थे। वे मैंने तुम्हें इस-लिए नहीं भेजे थे कि वे अच्छे थे, बल्कि इसलिए कि तुम्हें मेरी याद बनी रहे।"

इसी वक्त लू और ऑस्कर बगीचे से आते दिखाई दिए। कार्ल को देखकर उन्होंने अपने कदम नहीं बढ़ाए और न उन्होंने कार्ल की तरफ देखा ही।

अलैक्जेण्ड्रा ने उन्हें इशारे से बुलाया। "उनका खयाल है कि मैं उन्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रही हूँ। आओ लड़को, कार्ल लिंस्ट्रम आया है—अपना पुराना कार्ल।"

लू ने जल्दी से एक तिरछी नज़र डालकर अपना हाथ आगे बढ़ा दिया, "तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई।" ऑस्कर ने भी, "कहो, कैसे हो ?" कहकर उसका अनुसरण किया। कार्ल समझ न सका कि उनका यह रवैया अमैत्री या अकुलाहट के कारण है। वह और अलैक्जेण्ड्रा आगे बढ़ने लगे।

अलैक्जेण्ड्रा ने बताया, "कार्ल अलास्का जा रहा है।"

ऑस्कर ने कार्ल के पीले जूते देखते हुए कहा, "वहाँ कोई काम है क्या ?"

कार्ल हँस पड़ा। "हाँ, सख्त जरूरी काम है। मैं वहाँ दौलतमन्द बनने जा रहा हूँ। शिल्पकला बहुत अच्छा पेशा है, पर उससे आदमी पैसा नहीं कमा सकता। इसीलिए मैं सोने की खान की तलाश में जा रहा हूँ।"

अलैक्जेण्ड्रा समझी, कार्ल चालाकी से पेश आ रहा है। लू ने कुछ दिलचस्पी के साथ पूछा, "इस काम में पहले भी कुछ कर चुके हो ?"

"नहीं, लेकिन मैं अपने एक ऐसे दोस्त के साथ यह काम करने जा रहा हूँ जो इस काम में कामयाब रह चुका है। उसने मुझे भरोसा दिलाया है।"

"सुना है अलास्का में बहुत सरदी पड़ती है," ऑस्कर ने कहा, "मेरा खयाल था वहाँ लोग सरदियों के बाद जाते हैं।"

"ठीक है, लेकिन मेरा दोस्त सरदियाँ सीटेल में बिताएगा और मैं भी उसके साथ रहकर अगले साल काम शुरू करने से पहले इस बारे में कुछ सीखूँगा।"

लू को यकीन न हुआ। "अच्छा, यह बताओ यह जगह छोड़े तुम्हें कितने साल हो गए।"

"सोलह साल। तुम्हें तो यह याद रखना चाहिए था, लू, क्योंकि हमारे जाने के ठीक बाद ही तो तुम्हारी शादी हुई थी।"

"कुछ दिनों हमारे साथ ठहरोगे?" ऑस्कर ने पूछा।

"कुछ दिन, अगर अलैक्जेण्ड्रा इजाजत देगी तो।"

"मेरा खयाल है तुम अपनी पुरानी जगह देखना चाहोगे?" लू ने अधिक हार्दिकता से पूछा। "तुम उसे पहचान भी न सकोगे पर तुम्हारे पुराने मिट्टी के मकान का कुछ अंश बाकी बचा है जिस पर अलैक्जेण्ड्रा हल नहीं चलाने देती।"

ऐनी ली सामने आई और उसने अपनी तीनों लड़कियों का परिचय कराया। वह कार्ल की शहरी साजसज्जा से बहुत प्रभावित थी और जोश में आकर अपना सिर हिला-हिलाकर बहुत जोर से बोलने लगी। "अभी तक आपकी शादी नहीं हुई! इस उम्र में भी! जरा देखो तो! कभी हमारे यहाँ आकर मिली का बाजा बजाना सुनियेगा। वह हमारे परिवार की संगीतज्ञ है। स्कूल भी जाती है और अपनी क्लास में सबसे कम उम्र की लड़की है।"

मिली कुछ परेशान नजर आई और कार्ल ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। कार्ल को वह मक्खन जैसा मुलायम हाथ और वे प्रसन्न, निर्विकार आँखें पसन्द थीं। वह जान गया था कि मिली अपनी माँ की बातचीत करने के तरीके से नाखुश है। "जरूर ही मिली अक्लमन्द लड़की है," उसने मिली की ओर गम्भीरता से देखते हुए कहा। "अलैक्जेण्ड्रा,

यह तो तुम्हारी माँ की तरह लगती है। श्रीमती बर्गसां भी इस उम्र में ठीक ऐसी ही लगती होंगी। अच्छा ऐनी, क्या मिली भी तुम्हारी और अलैक्जेण्ड्रा की तरह गाँव में दौड़ती फिरती है?"

मिली की माँ ने तुरन्त विरोध किया। "नहीं, नहीं, अब जमाना बदल गया है। मिली वैसी लड़की नहीं है। जैसे ही ये लड़कियाँ शादी के लायक हो जायँगी, हम इस जगह को किराये पर देकर शहर चले जायँगे। आजकल बहुत से लोग यही कर रहे हैं। लू व्यापार शुरू करने वाला है।"

लू ने खिसियाकर दाँत निपोट दिए। "यह हमेशा यही कहा करती है। चलो तुम अपनी चीजें सँभालो," ऐनी की तरफ मुखातिब होते हुए उसने कहा।

नौजवान किसान अपनी बीवियों को उनका नाम लेकर सम्बोधित नहीं करते। हमेशा 'तुम' या 'वह' कहकर ही सम्बोधित किया जाता है।

जैसे ही ईवार दो घोड़ों की बग्घी लेकर दरवाजे पर आया, ऐनी जंगी जहाज जैसी शक्ल का टोप पहने हुए बाहर निकली। कार्ल उठकर उसे गाड़ी तक पहुँचाने गया। लू अपनी बहन से कुछ बात करने के लिए रुका रहा।

"क्या खयाल है, यह क्यों आया है?" लू ने दरवाजे की तरफ सिर से इशारा करते हुए पूछा।

"हमसे मिलने आया है, और क्यों? मैं बरसों से उसे यहाँ आने के लिए लिख रही थी।"

ऑस्कर ने अलैक्जेण्ड्रा की ओर एक नजर देखा। "उसने आने की खबर तो नहीं दी?"

"खबर देने की क्या जरूरत थी? मैंने उसे जब जी चाहे आने के लिए कह रखा था।"

लू कन्धे उचकाकर बोला, "मालूम पड़ता है इसे अभी तक कोई खास कामयाबी नहीं मिली, यों ही मारा-मारा फिर रहा है।"

ऑस्कर ने गम्भीरता से कहा, मानो किसी गुफा में से गूँज उठी हो,

"यह तो कभी किसी मसरफ का न था।"

अलैक्जेण्ड्रा दोनों भाइयों को छोड़कर दरवाजे की ओर से चल दी जहाँ कि ऐनी अपने नये फरनीचर की कार्ल से बड़ाई बघार रही थी। "मिस्टर लिंस्ट्रम को हमारे यहाँ जल्दी ही लाना, पहले टेलीफोन कर लेना," गाड़ी में चढ़ते हुए उसने कहा। बूढ़ा ईवार, नंगे सिर, घोड़े पकड़े खड़ा था। लू भी आकर गाड़ी की अगली सीट पर बैठ गया और किसी से कुछ कहे बिना, लगाम पकड़कर गाड़ी हाँकने लगा। ऑस्कर भी अपने सबसे छोटे बच्चे को गोद में लेकर चल पड़ा, बाकी तीनों बच्चे उसके पीछे थे। अलैक्जेण्ड्रा के लिए दरवाजा खोलकर कार्ल हँसने लगा।

: ४ :

कार्ल में, अलैक्जेण्ड्रा ने महसूस किया, बहुत कम तबदीली हुई थी। वह उन चुस्त, शहरियों में न था जो अपने-आपसे सदा सन्तुष्ट नजर आते हैं। अभी भी उसमें घरेलूपन, हठीपन और अपनापन नजर आता था। ऐसा नजर आता था कि वह अपने-आपमें सिमट जाता है, बाहरी चीजों से अपने-आपको अलग रखता है मानो उसे डर है कि कहीं उसे चोट न लग जाय। संक्षेप में, उसे अपने बारे में इतना भय था कि जितना पैंतीस वर्ष की आयु के व्यक्ति में नहीं होना चाहिए। वह अपनी उम्र से ज़्यादा बड़ा और कुछ कमजोर नजर आता था। उसके काले बाल, जो उसके पीत मस्तक पर एक त्रिकोण बनाए रखते थे, हल्के पड़ते जा रहे थे और उसकी आँखों के नीचे कुछ झुर्रियाँ भी पड़ने लगी थी। उसकी पीठ और ऊँचे कन्धे एक थके हुए प्रोफेसर के जैसे लगते थे। उसके चेहरे से बुद्धिमानी और विषाद टपकता था।

उस शाम, कार्ल और अलैक्जेण्ड्रा फूलों के बगीचे के बीच बैठे थे। चाँद निकल आया था और बगीचे की पथरीली पगडण्डी पर चाँदनी चमक रही थी और नीचे शुभ्र एवं शान्त खेत दिखाई दे रहे थे।

"जानती हो, अलैक्जेण्ड्रा, मैं सोच रहा था कि इस दुनिया में कैसी

अद्भुत बातें हो जाती हैं। मैं इतने दिनों तक दूसरों के चित्र बनाने में लगा था और तुमने अपने घर में रहकर अपना स्वयं चित्र निर्मित किया है।" उसने सुप्तप्राय खेतों की ओर इशारा करते हुए कहा, "लेकिन तुमने यह सब कर कैसे डाला? तुम्हारे पड़ोसियों ने भी यह सब कैसे किया?"

"हम लोगों ने तो ज्यादा कुछ नहीं किया, कार्ल; जमीन ने अपने आप ही सब-कुछ कर डाला। जमीन ने हमारे साथ खूब मजाक किया। चूँकि लोग उससे काम लेना नहीं जानते थे वह गरीब बनी रही और फिर अचानक खुल पड़ी। नींद से वह उठ खड़ी हुई और वह इतनी बड़ी और इतनी खुशहाल थी कि हम बैठे-बैठे ही धनी हो गए। तुम्हें याद होगा मैंने तुम्हारे सामने ही जमीन खरीदना शुरू कर दिया था। बरसों तक मेरा हाथ कसा रहा और मैं कर्ज लेते-लेते इतनी शर्मिन्दा हो चुकी थी कि बैंक में अपना मुँह तक न दिखाना चाहती थी। और फिर, एक साथ, लोग-बाग मुझे खुद-बखुद कर्ज देने आने लगे जब कि मुझे कर्ज की जरूरत भी न थी। फिर मैंने यह मकान बनवाया। दरअसल मैंने यह मकान एमिल के लिए बनवाया है। तुम एमिल को जरूर देखना। वह हम लोगों से बहुत भिन्न है।"

"भिन्न कैसे है?"

"तुम खुद ही देख लेना। पिताजी एमिल जैसे बेटों के लिए ही, और उन्हें मौका देने के लिए ही यहाँ आकर बसे थे, ऐसा मेरा विश्वास है। ऊपर से एमिल किसी भी अमरीकन लड़के-जैसा लगता है—तुम्हें मालूम होना चाहिए वह ग्रेजुएट हो गया है—पर अन्दर से वह हम सब लोगों से कहीं ज्यादा स्वीडिश है। कई बार वह बिलकुल पिताजी-जैसा लगता है और मैं घबरा जाती हूँ—उन्हीं की तरह प्रबल और साहसी।"

"क्या वह भी तुम्हारे साथ यहाँ खेती करेगा?"

"उसकी जो मरजी होगी करेगा," अलैक्जेण्ड्रा ने उत्साह के साथ कहा। "मैं उसे मौका देना चाहती हूँ—पूरा मौका; और इसीलिए मैंने यह सब किया है। कई बार वह कानून पढ़ने के लिए कहता है और

कभी और जमीन खरीदकर खेती करने के लिए। कभी-कभी वह भी पिता-जी की तरह उदास हो उठता है। पर मैं समझती हूँ अब उसे उदास होने की जरूरत न पड़ेगी—हमारे पास इतनी सारी जमीन जो है," कहकर अलैक्जेण्ड्रा हँस पड़ी।

"लू और ऑस्कर का क्या हाल है? क्यों, उन्होंने भी तो काफी तरक्की की है?"

"हाँ, की है; लेकिन वे भिन्न हैं, और अब चूँकि उनके अपने अलग खेत हैं मैं उनके बारे में ज्यादा नहीं जानती। लू की शादी होने पर हमने अपनी जमीन का बँटवारा कर लिया। उनके काम करने के अपने अलग तरीके हैं और मेरा खयाल है उन्हें मेरा तरीका कोई खास पसन्द नहीं। शायद वे मुझे बहुत ज्यादा स्वतन्त्र समझते हैं। लेकिन इतने बरसों से मुझे खुद अपने-आप सोच-विचारकर सारा काम करना पड़ा है, इसलिए अब मेरा बदलना मुश्किल है। कुछ भी हो, हम भाई-बहनों की तरह एक-दूसरे से खुश रहते हैं और मुझे लू की सबसे बड़ी लड़की बहुत प्यारी है।"

"मेरा खयाल है मुझे लू और ऑस्कर बहुत पसन्द थे और शायद उनका भी मेरे बारे में यही खयाल हो। सच पूछो तो," कार्ल ने आगे झुककर और अलैक्जेण्ड्रा की बाँह छूते हुए कहा, "सच पूछो तो मुझे यह जगह बहुत पसन्द थी। आज यह जगह बहुत सुन्दर है लेकिन जब यह एक जंगली जानवर की तरह थी तब की याद मुझे हमेशा बनी रही है। क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा हुआ है?"

"हाँ, कई बार माँ और पिताजी तथा अपने पुराने पड़ोसियों के बारे में सोचते हुए मैंने भी ऐसा महसूस किया है," अलैक्जेण्ड्रा रुककर आकाश के तारों की ओर देखने लगी। "जब यह वीरान पठार था तब का कब्रस्तान याद आता है और अब…"

"और अब पुरानी कहानी फिर लिखी जाने वाली है," कार्ल ने धीरे-से कहा। "क्या अजीब बात है कि मानव-इतिहास में सिर्फ दो-तीन ही

कहानियाँ हैं जो बार-बार नये सिरे से लिखी जाती हैं मानो घटी ही न हों जैसे कि लावा पक्षी हज़ारों बरसों से बार-बार एक ही गीत गाते आए हैं।"

कार्ल ने अपने सिगार के बचे हुए भाग को धीरे-से झाड़ी में डालते हुए गहरी साँस ली। "मेरा खयाल है मुझे अपनी पुरानी जगह देखनी ही चाहिए। मैं उन चीज़ों से डरता हूँ जो मुझे अपने बारे में याद दिलाती हैं। यहाँ आने में भी मुझे साहस बटोरना पड़ा। अगर तुमसे मिलना मेरे लिए बहुत ज़रूरी न बन गया होता तो मैं यहाँ भी न आता।"

अलैक्ज़ेण्ड्रा ने उसकी ओर अपनी शान्त, सीधी निगाह से देखा। "तुम्हें इस तरह का डर क्यों लगता है ?" उसने गम्भीरतापूर्वक पूछा, "तुम अपने-आपसे असन्तुष्ट क्यों हो ?"

"तुम कितनी सीधी बात पूछती हो, अलैक्ज़ेण्ड्रा ! तुम हमेशा से ही ऐसी हो। मेरे असन्तोष का एक कारण यह भी है कि मेरे पेशे में अब कुछ नहीं रहा। लकड़ी की नक्काशी का ही मुझे शौक है और यह काम मेरे शुरू करने से पहले ही खत्म हो चुका था। आजकल सब सस्ता काम होता है। मैं इस सबसे तंग आ गया हूँ," कार्ल ने खीझते हुए कहा। न्यूयॉर्क से यहाँ तक मैं यही सोचता आया था, अलैक्ज़ेण्ड्रा, कि तुम्हें किस तरह धोखा दूँगा ताकि मुझे देखकर तुम्हें ईर्ष्या हो सके, और आज पहली रात ही मैं तुम्हें सब सच बताए दे रहा हूँ। मैं बनने में, लोगों को धोखा देने में, बहुत वक्त बरबाद करता हूँ, और मज़ाक यह है कि मैं किसी को भी धोखा नहीं दे पाता। मेरे जैसे और भी बहुत-से आदमी हैं जिन्हें लोग-बाग देखते ही पहचान जाते हैं।"

कार्ल चुप हो गया। अलैक्ज़ेण्ड्रा व्यग्र और विचारमग्न हो गई और अपनी भौंह पर पड़ी बालों की लट हटाने लगी। "जो-कुछ यहाँ तुमने किया है, अलैक्ज़ेण्ड्रा," कार्ल ने धीरे-से बोलना शुरू किया, "उसे देखते हुए मैं असफल रहा हूँ। मैं तुम्हारे एक भी खेत को नहीं खरीद सकता। मैंने बहुतसी चीज़ों का रसास्वादन किया है लेकिन दिखाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

"लेकिन दिखाने के लिए तुम खुद जो हो, कार्ल ! मैं समझती हूँ, मेरी ज़मीन से तुम्हारी अपनी आज़ादी बड़ी है।"

"किसी व्यक्ति की आज़ादी का अक्सर यही मतलब होता है कि उसकी कहीं कोई ज़रूरत नहीं," कार्ल ने दुख के साथ सिर हिलाते हुए कहा। "यहाँ तुम्हारा अपना एक अस्तित्व है, तुम्हारी अपनी एक पृष्ठभूमि है, तुम्हारे चले जाने के बाद तुम्हारी ज़रूरत महसूस होगी। पर शहरों में मेरे जैसे हज़ारों लुढ़कते पत्थर हैं। हमारा कोई बन्धन नहीं, हमें कोई जानता नहीं, हमारा किसी चीज़ पर अधिकार नहीं। जब हममें से कोई मरता है तो लोग यह भी नहीं जानते कि उसे कहाँ दफ़नाया जाय और मरने के बाद सिर्फ एक कोट और एक वायलिन, या चित्र बनाने का तख्ता या एक टाइपराइटर या वे औज़ार-भर बचे रहते हैं जिनसे हमारा गुज़ारा होता है। हम सिर्फ अपने कमरे का किराया दे पाते हैं—वह बेहद ज़्यादा किराया जो शहरों में चीज़ों के नज़दीक रहने के लिए देना पड़ता है। हमारा अपना घर नहीं, अपने आदमी नहीं, अपनी कोई जगह नहीं। हम सड़कों में, बगीचों में, थियेटरों में रहते हैं। हम रेस्तराँ और संगीत-गृहों में बैठकर अपने जैसे ही हज़ारों लोगों को देखते रहते हैं।"

अलैक्जेण्ड्रा चुप थी। वह चरागाह के पार तालाब में चन्द्रमा के चमकीले प्रतिबिम्ब को देख रही थी। कार्ल समझ गया कि अलैक्जेण्ड्रा ने उसे समझ लिया है। आखिर अलैक्जेण्ड्रा बोली, "फिर भी मैं यही चाहूँगी कि एमिल अपने दोनों भाइयों की तरह न बनकर इसी तरह का आदमी बने। हमें भी यहाँ बहुत ज्यादा किराया देना पड़ता है, पर हमारी अदा-यगी में फर्क है। यहाँ हम भारी और सख्त बन जाते हैं। हम तुम्हारी तरह आसानी और फुरती से घूम-फिर नहीं सकते, हमारे दिमाग जकड़ जाते हैं। अगर मेरे खेतों से परे दुनिया न होती तो मैं यहाँ रहकर काम करना फिज़ूल समझती। मैं तो यही चाहूँगी कि एमिल तुम्हारी तरह हो, न कि अपने भाइयों की तरह। तुम्हारे आते ही मैंने यह महसूस किया था।"

"समझ में नहीं आता तुम ऐसा क्यों सोचती हो?" कार्ल ने पूछा।

"मैं खुद नहीं जानती। शायद मैं अपने यहाँ काम करने वाले जैन-सन की बहन कैरी जैसी हूँ। वह इन खेतों से बाहर कभी न गई थी। कुछ साल पहले वह एक साथ बहुत हताश दिखाई देने लगी; कहती थी कि बार-बार एक ही काम करना जिन्दगी है और ऐसी जिन्दगी उसे फिजूल नजर आती थी। एक-दो बार उसने आत्महत्या करने की कोशिश की। उसके रिश्तेदारों ने चिन्तित होकर उसे आयोवा भेज दिया। जब से वहाँ से लौटकर आई है बहुत ही खुश नजर आती है; कहती है कि इतनी बड़ी और इतनी दिलचस्प दुनिया में रहकर काम करने में उसे सन्तोष है। शहरों में बड़े-बड़े पुल देखकर वह सन्तुष्ट हो गई है। मेरा भी यही हाल है कि दुनिया के कारोबार से मुझे तसल्ली मिलती है।"

: ५ :

अलैक्जेण्ड्रा न अगले दिन, न अगले-से-अगले दिन अपने पड़ोसी के यहाँ जा सकी। हल जोतने और मकई बोने के वे दिन थे और एमिल तक खेत में जुटा था। कार्ल सुबह उठते ही अलैक्जेण्ड्रा के साथ खेतों में चला जाता और दोनों दोपहर और शाम को खूब बातें करते। एमिल, हालाँकि खिलाड़ी था, पर खेत का काम ज़्यादा बरदाश्त न कर सकता और रात तक इतना थक जाता था कि न किसी से बोलता-चालता और न अपना बाजा ही बजाता।

बुधवार की सुबह कार्ल दिन निकलने से पहले ही उठ खड़ा हुआ और रसोई के रास्ते चुपचाप बाहर निकल आया जहाँ कि ईवार मुँह-हाथ धो रहा था। कार्ल बगीचे को पारकर उस चरागाह तक चला आया जहाँ कि पहले गायें बँधा करती थीं।

पूर्व में सूर्योदय ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पृथ्वी के एक छोर के नीचे कोई बहुत भीषण आग धधक रही हो। चरागाह की घास पर पड़ी ओस-कणों में भी सूर्य-प्रकाश का स्वर्णिम रंग प्रतिबिम्बित हो रहा था। कार्ल जल्दी-जल्दी चलते हुए दूसरी पहाड़ी के किनारे पहुँचा जहाँ कि बर्गसां-

परिवार और उसके पिता का चरागाह मिलता था। वह वहीं बैठकर सूरज के ऊपर उठने का इन्तजार करने लगा। यहीं वह और अलैक्जेण्ड्रा अपने-अपने अहाते के पीछे बैठकर दूध दुहा करते थे। उसके सामने अलैक्जेण्ड्रा का उस जमाने का चित्र पूरा उतर आया। लड़कपन में भी, जब प्रातः के दूधिया प्रकाश में वह उसे सिर ऊँचा उठाए आते देखता तो उसे ऐसा लगता मानो वह स्वयं प्रातः से प्रकट हुई हो। तबसे ही, जब भी वह खुले मैदान में या पानी पर सूर्योदय देखता तो उसे हाथ में दूध का बरतन लिये हुए, वही स्वीडिश लड़की याद आ जाती थी।

सूरज ऊपर उठ आया और दिन के कीड़ों ने अपना राग अलापना आरम्भ किया। चिड़ियाँ चहचहाने लगीं और सारा चरागाह रोशनी से सराबोर हो उठा। पेड़-पौधों की लम्बी छायाएँ पड़ने लगीं और सुनहरी प्रकाश बल खाई घास पर लहरों की तरह हिलोरें लेने लगा।

कार्ल उठ खड़ा हुआ और अपने पुराने चरागाह को पार कर, जो कि अब शैबेटा परिवार का था, तालाब की ओर बढ़ने लगा। वह ज्यादा दूर न पहुँचा था कि उसे मालूम हुआ कि उस जगह वही अकेला आदमी न था। नीचे की ढाल पर, हाथ में बन्दूक लिये हुए एमिल एक नवयुवती के साथ आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ रहा था। वे दोनों पास-पास, बड़ी सावधानी से आगे बढ़े चले जा रहे थे। कार्ल समझ गया कि वे बतखों की तलाश में हैं। जैसे ही वे पानी के एक खुले भाग के सामने आये, कार्ल ने बतखों के पंखों की फड़फड़ाहट सुनी और फिर उन्हें आकाश पर उड़ते देखा। बन्दूक दागने की तड़ाक आवाज हुई और एक साथ पाँच बतखें जमीन आ गिरीं। एमिल और उसके साथ की लड़की खुशी से हँसने लगे और एमिल बतखों को उठाने दौड़ चला। बतखों को पैर से पकड़कर लटकाये हुए वह लौटा। मेरी ने अपना एपरन पसार दिया और एमिल ने उसमें उन्हें डाल दिया। उन्हें देखते-देखते मेरी का चेहरा बदल गया। उसने एक बतख को उठाकर, उसके पंखों पर अभी भी जिन्दगी की रौनक देखी। बतख पंखों का ढेर बन चुकी थी और उसके मुँह से बूँद-

बूँद खून टपक रहा था।

"अरे एमिल, तुमने यह क्यों कर डाला?" दर्द-भरी आवाज में उसने कहा।

"मुझे यह पसन्द है," लड़के ने क्षुब्ध होकर कहा, "तुमने खुद ही तो यहाँ आने के लिए कहा था।"

"हाँ हाँ, कहा तो था," रुआंसी होकर वह बोली। "पर मुझे न मालूम था—इन्हें इस तरह मरा हुआ देखा नहीं जाता। कितने खुश थे ये, और हमने इनकी खुशी छीन ली।"

एमिल ने एक चिढ़ी हँसी से कहा, "बेशक हमने उनकी खुशी छीन ली। भविष्य में मैं तुम्हारे साथ शिकार खेलने न आऊँगा। तुम भी ईवार की तरह ही गई-गुजरी हो। लाओ मुझे दे दो।"

एमिल ने गुस्से में आकर इसके एपरन से बतखें उठा लीं।

"नाराज न हो, एमिल! लेकिन मैं समझती हूँ ईवार का खयाल ठीक है। इतने खुश परिन्दों को मारना नहीं चाहिए। तुम्हीं बताओ कि आसमान में उड़ते वक्त ये क्या सोच रहे थे—डरे हुए जरूर थे लेकिन उन्हें यह खयाल तक न था कि उनकी जान जाने वाली है। नहीं एमिल, अब हम यह काम न करेंगे।"

"अच्छा," एमिल ने राजी होते हुए कहा। "मुझे दुःख है कि तुम्हें इतना दुःख हुआ। मेरी की रुआँसी आँखों में देखते हुए एमिल की अपनी आँखों में एक अजीब जवानी की कटुता आ गई।

कार्ल ने उन्हें वहाँ से धीरे-धीरे जाते हुए देखा। उन्होंने कार्ल को देखा ही न था। कार्ल उनकी सब बातें न सुन पाया था पर मतलब समझ गया था। दो जवान जानों को प्रातःकाल चरागाह में घूमते देख कार्ल, अनावश्यक उदास हो उठा। वह समझा उसे नाश्ते की जरूरत है।

: ६ :

उस रोज खाना खाते वक्त अलैक्जेण्ड्रा ने कहा कि उसे शैबेटा-परिवार

से मिलने जाना ही होगा। "शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि मैं मेरी से तीन दिन तक न मिली होऊँ। वह सोचेगी कि मैं अपने पुराने दोस्त के आ जाने से उसे भूल गई हूँ।"

लोगों के काम पर चले जाने के बाद अलैक्जेण्ड्रा और कार्ल खेत पार कर शैबेटा-परिवार से मिलने चले। "देखो कार्ल, पुराना रास्ता हमने बना रहने दिया है। मुझे यह सोचकर राहत मिलती है कि उस ओर अब भी अपना कोई आदमी है।"

कार्ल ने एक खिन्न मुस्कराहट के साथ कहा, "कुछ भी हो, मेरा खयाल है कि पहले जैसी बात तो न होगी।"

अलैक्जेण्ड्रा ने उसकी ओर आश्चर्य के साथ देखा, "नहीं, पहले जैसी बात कैसे हो सकती है? मेरी तुम्हारी जगह थोड़े ही ले सकती है—यही तुम्हारा मतलब है न? अपने सब पड़ोसियों से मेरी दोस्ती है। पर मेरी ही सचमुच एक ऐसी पड़ोसिन है जिससे मैं दिल खोलकर बातें कर सकती हूँ। मेरा खयाल है तुम यह तो न चाहोगे कि मैं और भी ज्यादा अकेली रहा करूँ।"

कार्ल हँस पड़ा और अलैक्जेण्ड्रा को सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अपने हाथ का सहारा देते हुए अचानक बोला, "अच्छा, अलैक्जेण्ड्रा, तुम मुझसे मिलकर निराश हो क्या? क्या तुम मेरे बारे में ऐसी ही आशा करती थीं?"

अलैक्जेण्ड्रा मुस्कराने लगी। "तुम आशा से भी अच्छे निकले। जब मैं तुम्हारे आने के बारे में सोचा करती थी तो मुझे कुछ घबराहट होती थी। तुम ऐसी जगह रहे हो जहाँ जिन्दगी तेजी से बदलती है, और यहाँ जिन्दगी की रफ्तार बहुत धीमी है। हमारी जिन्दगी भी वर्षचक्र की तरह मौसम, फसल और गायों से बनी है। तुम्हें गायों से कितनी नफ़रत थी!" सिर हिलाकर वह खुद-ब-खुद हँस पड़ी।

"जब हम साथ-साथ दूध दुहते थे तब मुझे गायें बुरी न लगती थीं। आज सुबह मैं चरागाहों के उसी कोने पर पहुँचा था। जो कुछ मैं उस समय सोच रहा था शायद ही तुम्हें बता सकूँ। अजीब बात है अलैक्जेण्ड्रा,

कि मैं सब बातें तुमसे खुलासा कह देता हूँ पर तुम्हारे-अपने बारे में कुछ नहीं कह पाता।"

"शायद तुम मुझे ठेस न पहुँचाना चाहते हो," अलैक्जेण्ड्रा ने उसकी ओर गम्भीरता से देखते हुए कहा।

"नहीं, मैं तुम्हें चौंकाना नहीं चाहता। तुम अपने-आपको अपने आसपास के लोगों की मन्द दृष्टि से देखने की इतनी आदी हो चुकी हो कि अगर मैं तुम्हें बताऊँ कि तुम मुझे कैसी लगती हो तो तुम चौंक उठोगी।"

अलैक्जेण्ड्रा शरमाकर कुछ व्यग्रता के साथ हँसने लगी। "तुम्हारा यही मतलब है न कि तुम मुझसे खुश हो।"

शैबेटा-परिवार के घर में, रसोईघर की सीढ़ी पर बैठकर धूप तापती हुई एक पीली बिल्ली के अलावा और कोई न दिखाई दे रहा था।

अलैक्जेण्ड्रा बगीचे की ओर चलने लगी। "अक्सर यहीं बैठकर वह सीने-पिरोने में लगी रहती है। मैंने उसे अपने आने के बारे में जान-बूझकर टेलीफ़ोन नहीं किया, क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि वह केक पकाने और आइसक्रीम बनाने में लगे। उसे तो बस दावत देने का मौका चाहिए। कार्ल, सेब के इन पेड़ों को पहचानते हो?"

"मैंने इन पेड़ों में बहुत पानी डाला है। काश, मुझे हर बाल्टी का एक डॉलर मिल सकता! पिताजी आरामतलब आदमी थे पर अपने बगीचे में पानी डालने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी।"

"देखो, वह आ रही है मेरी। है न खरगोश की तरह!" कहकर अलैक्जेण्ड्रा हँस पड़ी।

हाँपती हुई मेरी दौड़ी चली आई और उसने अलैक्जेण्ड्रा को अपनी बाँहों में लपेट लिया। "मेरा तो खयाल था, अब तुम न आओगी। एमिल ने मुझे मिस्टर लिंस्ट्रम के आने के बारे में बताया था। आओ, अन्दर, चलें।"

"यहीं क्यों न बैठें? कार्ल बगीचा देखना चाहता है। बरसों तक खुद पानी देकर उसने इन पेड़ों को ज़िंदा रखा है।"

"मैं आपकी बहुत आभारी हूँ, मिस्टर लिस्ट्रम," कार्ल की तरफ मुखातिब होती हुई मेरी बोली, "अगर यह बगीचा न होता तो हम यह जगह न खरीदते और न तब अलैक्जेण्ड्रा ही मिल पाती।" अलैक्जेण्ड्रा की बाँह भींचकर वह उसके साथ चलने लगी।

वह उन्हें बगीचे के उत्तरी छोर पर ले गई, जहाँ कि एक ओर शहतूत की घनी झाड़ियाँ थीं और दूसरी ओर गेहूँ का खेत था, जो कि पककर पीला होने लगा था। इस कोने में जमीन कुछ ढलुवाँ थी जहाँ कि खूब घनी मुलायम घास उग आई थी। अहाते के सहारे जंगली गुलाब खिले हुए थे और एक सफेद शहतूत के पेड़ के नीचे एक पुरानी बैञ्च पड़ी थी।

"अलैक्जेण्ड्रा, यहाँ बैठ जाओ, घास में तुम्हारे कपड़े खराब हो जायँगे," मेरी ने आग्रह करते हुए कहा। खुद वह अलैक्जेण्ड्रा के पास धरती पर पैर समेटकर बैठ गई। कार्ल गेहूँ के खेत की तरफ पीठ करके उन दोनों से कुछ दूर बैठा उन्हें देख रहा था। अलैक्जेण्ड्रा ने अपनी टोपी उतारकर जमीन पर पटक दी। मेरी उसे उठाकर उसके सफेद फीतों को अपनी उंगलियों में लपेट-लपेटकर खेलने लगी।

सूरज की चमकती रोशनी में पेड़-पत्तों के हरे जाल से घिरी हुई वे दोनों अति चित्ताकर्षक प्रतीत हो रही थीं। स्वीडिश नवयुवती गौरवर्ण और स्वर्ण की भाँति दीप्तिमान थी, प्रसन्न पर शान्त थी और दूसरी युवती गेंहुएँ रंग की चुस्त और फुर्तीली रमणी थी। उसके मांसल होंठ अधखुले थे और उसकी हँसी के साथ उसकी भूरी आँखें भी चमक उठती थीं। कार्ल बचपन की मेरी तोवेसकी की आँखें कभी न भूल पाया था और अब उन्हें फिर देखने का अवसर पाकर प्रसन्न था। भूरी पुतलियों में शहद का जैसा चमकीला पीलापन था। बात-बात में उसकी आँखों में चमक आ जाती थी और कार्ल सोचने लगा, "क्या अच्छा होता अगर यह चमक किसी प्रेमी के लिए होती! दुनिया में कई बातें कितनी गलत हो जाती हैं!"

मेरी घास पर बैठी-बैठी फिर उछल पड़ी, "एक मिनट ठहरो, मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहती हूँ; और दौड़कर सेब के पेड़ों के पीछे गायब हो गई।

"बड़ी प्यारी लड़की है," कार्ल धीरे से बोला। "कोई ताज्जुब नहीं कि इसका पति ईर्ष्यालु हो। लेकिन क्या चल नहीं पाती, हमेशा दौड़ना पड़ता है?"

खूबानी के पेड़ की एक डाल लेकर मेरी लौटी जिसमें पीले, गुलाबी रंग वाले फल लदे थे। कार्ल के सामने उसे डालती हुई बोली, "क्या यह भी आपने ही बोए थे? बड़े सुन्दर छोटे-छोटे पेड़ हैं।"

कार्ल ने उन नीली-हरी पत्तियों को सहलाते हुए कहा, "हाँ, मेरा खयाल है मैंने ही बोए थे। ये सरकस वाले पेड़ हैं न, अलैक्जेण्ड्रा?"

"मेरी को बता दूँ इसकी कहानी?" अलैक्जेण्ड्रा ने पूछा, "चुपचाप बैठ जाओ और मेरी टोपी न बिगाड़ो तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊँगी। बहुत पहले की बात है, जब कार्ल और मैं सोलह बरस के होंगे हैनोवर में एक सरकस आया हुआ था और मैं और कार्ल, लू और ऑस्कर के साथ गाड़ी में बैठकर परेड देखने गये हुए थे। परेड के बाद भी हम सरकस के मैदान में घूमते रहे जब कि सब लोग तम्बू के अन्दर चले गए। लू का खयाल था कि बाहर खड़े-खड़े बेवकूफ नजर आते हैं, इसलिए हमें उदास होकर हैनोवर लौट जाना पड़ा। सड़क पर एक आदमी खूबानी बेच रहा था। हमने यह फल पहले कभी न देखा था। हमें अपने घर से मिठाई खरीदने के लिए कुछ पैसे मिले थे। हम दोनों ने खूबानियाँ खरीद लीं और उनके बीज निकालकर बो दिए। कार्ल के यहाँ से जाने के वक्त तक इन पेड़ों में फल नहीं निकले थे।"

"और अब आप आये हैं इन फलों को खाने," मेरी ने कार्ल की ओर देखते हुए कहा, "यह कहानी तो खूब है। मिस्टर लिंस्ट्रम, आपकी मुझे कुछ-कुछ याद है। जब मैं चाचाजी के साथ हैनोवर जाया करती थी तो अक्सर आप वहाँ दिखाई देते थे। मुझे आपकी इसलिए याद है क्योंकि आप हमेशा कागज, पैंसिल और रंग खरीदा करते थे। एक बार आपने मेरे लिए छोटी-छोटी चिड़ियों और फूलों की तस्वीरें बनाई थीं। काफी दिन तक मैं उन तस्वीरों को अपने पास रखे रही थी। आप मुझे बहुत अच्छे लगते

थे क्योंकि आप तस्वीर बना सकते थे और आपकी इतनी अच्छी काली-काली आँखें थीं।"

कार्ल मुस्कराने लगा। "हाँ, मुझे भी याद है। तुम्हारे चाचा ने तुम्हारे लिए एक गुड़िया खरीदी थी—हुक्का पीती हुई एक तुर्की औरत जो आगे-पीछे सिर हिलाती रहती।"

आध घण्टे बाद, जब कार्ल और अलैक्जेण्ड्रा घर वापस आने को उठ खड़े हुए तो उन्हें नीली कमीज़ और ऑवर ऑल पहने एक नवयुवक सामने ही दिखाई दिया। वह हाँप रहा था मानो काफी दूर से दौड़कर आया हो।

मेरी ने आगे दौड़कर उसकी बाँह पकड़ ली और उसे मेहमानों की ओर खींचती हुई बोली, "फ्रैंक, यह मिस्टर लिंस्ट्रम हैं।"

फ्रैंक ने अपना टोप उतारकर अलैक्जेण्ड्रा का अभिवादन किया और जब वह कार्ल से बोला तो उसकी सुन्दर दन्त-पँक्ति दिखाई दी। उसकी दाढ़ी करीब तीन दिन की हुई थी और गर्दन धूप से झुलसे रंग-जैसी दिखाई दे रही थी। उत्तेजित होने पर भी वह सुन्दर पर अन्धाधुन्ध चलने वाला अकड़बाज नौजवान मालूम पड़ता था।

मेहमानों से बात किए बिना ही अपनी बीवी से गुस्से में बोला, "मुझे अपना खेत छोड़कर बूढ़ी हिलर के सूअरों को भगाने जाना पड़ा। अगर वह औरत नहीं मानेगी तो मैं कहे देता हूँ मुझे उसे कचहरी में ले जाना पड़ेगा।"

बीवी ने नम्रता से कहा, "लेकिन फ्रैंक, तुम तो जानते ही हो कि उसका सिर्फ एक लंगड़ा लड़का है। वह अपनी तरफ से तो भरसक कोशिश करती है।"

अलैक्जेण्ड्रा ने उस उत्तेजित युवक को देखकर एक सुझाव पेश किया, "तुम खुद ही जाकर उसका अहाता क्यों नहीं बना देते? तुम देखोगे कि, अन्त में, इससे तुम्हें ही फायदा होगा।"

फ्रैंक की गरदन अकड़ गई। "मैं नहीं करूँगा। मैं अपने सूअरों को रखता हूँ या नहीं? तो फिर दूसरे क्यों नहीं रख सकते? अगर उसका लड़का

जूतों की मरम्मत कर सकता है तो अहाते की मरम्मत भी कर सकता है।

"ठीक कहते हो," अलैक्जेण्ड्रा ने जवाब दिया, "पर कई बार मैंने देखा है कि दूसरों का अहाता बना देना अपने लिए ही फायदेमन्द होता है। अच्छा मेरी, अब चलें। जल्दी ही आना मिलने।"

फ्रैंक घर में घुसते ही सोफे पर पड़ गया और दीवार की तरफ मुँह करके मुट्ठी बाँधे पड़ा रहा। मेरी अपने मेहमानों को विदा करके अन्दर आई और उसका कन्धा पकड़कर उसे छेड़ने लगी।

"देखो, तुमने दौड़-दौड़कर खुद सिरदर्द कर लिया है। लाओ, मैं कॉफी बनाए देती हूँ।"

"और मैं क्या करता?" वह चिल्ला पड़ा। "क्या मैं उस बुड्ढी के सूअरों से अपने खेत को बरबाद हो जाने देता? क्या इसीलिए मैं खून-पसीना एक करके काम करता हूँ?"

"कोई बात नहीं, फ्रैंक! मैं श्रीमती हिलर से फिर कहूँगी। पिछली बार जब मैंने उससे कहा था तो वह इतनी दुखी हुई कि रो पड़ी।"

फ्रैंक ने फौरन करवट बदल ली। "तुम हमेशा मेरे खिलाफ दूसरों की हिमायत करती हो। सब जानते हैं इस बात को। जो चाहे घास काटने की मशीन ले जाता है या कोई मेरे खेत में अपने सूअर छोड़ देता है। सब जानते हैं कि तुम्हें कोई परवाह नहीं।"

मेरी कॉफी बनाने चल दी और जब वह लौटी तो फ्रैंक सो चुका था।

: ७ :

मेरी का पिता, एलबर्ट टोवेस्की उन बुद्धिमान बोहिमियनों में से था जो १८७० की दशाब्दी में यहाँ आकर बसे थे। आमेहा में वह शीघ्र ही अपनी जाति के लोगों का सलाहकार और नेता बन गया। मेरी उसकी दूसरी बीवी की सबसे छोटी लड़की थी और अपने पिता की आँख की पुतली थी। वह सिर्फ सोलह साल की ही थी और स्कूल में पढ़ रही थी कि फ्रैंक शैबेटा ने वहाँ आकर सारी बोहिमियन लड़कियों के दिलों में हलचल मचा

दी। इतवार को तो खास तौर पर जब वह रेशमी टोपी और हाथ में पतली सी छड़ी लेकर निकलता तो देखने लायक होता था। वह लम्बा और गोरा था, उसके बाल छोटे और घुँघराले थे और उसके दाँत निहायत खूबसूरत। उसके चेहरे पर सबको तुच्छ समझने वाला भाव सदा बना रहता था, जो कि एक ऐसे नौजवान के लिए ठीक ही था जिसकी माँ एक बहुत बड़े खेत की मालकिन हो। उसकी नीली आँखों से अक्सर निराशा व्यक्त होती थी और हर बोहिमियन लड़की स्वयं को ही उस निराशा और असन्तोष का कारण समझती थी। वह अपनी जेब से इस कदर आहिस्ता से रूमाल निकालता कि देखने वाले उसे एक निराश प्रेमी समझे बिना न रहते। उसने हर मन-पसन्द बोहिमियन लड़की के साथ थोड़ी-बहुत उड़ान भरी थी लेकिन जब वह मेरी टोवेस्की के साथ होता तो निहायत संजीदगी के साथ अपनी जेब से रूमाल निकालता और सिगरेट जलाकर निराशा के साथ दियासलाई की तीली फेंक देता। अन्धा भी उसे देखकर समझ सकता था कि किसी के लिए उसका दिल घायल हो चुका है।

एक दिन इतवार को नदी-किनारे एक गोट में मेरी उससे मिली और वे दोनों सारी दोपहर नाव में सैर करते रहे। शाम को जब वह घर लौटी तो सीधी अपने पिता के कमरे में पहुँची और जाते ही उसने कह सुनाया कि फ्रैंक से उसकी शादी तय हो चुकी है। बूढ़ा टोवेस्की उस समय खाना खाने के बाद आराम से अपना पाइप पी रहा था। लड़की की बात सुनते ही एक साथ बिगड़ पड़ा।

"वह हम लोगों की तरह काम क्यों नहीं करता? मारा-मारा क्यों फिरता है? ठीक है, एल्म घाटी में उसकी माँ की जमीन है। तो फिर वह अपनी माँ की मदद क्यों नहीं करता? क्या मैंने उसकी माँ को सबेरे पाँच बजे खेत में खाद डालते नहीं देखा है? क्या मैं यह नहीं जानता कि उसकी माँ के हाथ घोड़े के खुर जैसे खुरदरे हैं जब कि बेटा दस्ताने और अँगूठियाँ पहनकर घूमता फिरता है? खूब शादी तय की! अभी तुम्हें स्कूल में पढ़ना पड़ेगा। मैं तुम्हें कुआँरी लड़कियों के आश्रम में भेज दूँगा

और वहाँ तुम्हें अक्ल आएगी।"

अतः अगले हफ्ते एलबर्ट टोवेस्की आँसुओं से भरी आँखों वाली म्लान मुखी अपनी पुत्री को कुआँरी लड़कियों के आश्रम में ले गया। लेकिन फ्रैंक उन आदमियों में था, जिन्हें जो चीज इन्कार की जाती है वे उसे और भी ज्यादा चाहने लगते हैं। मेरी के जाने से पहले वह उससे एक बार मिल लिया था और जब कि वह अभी तक मेरी से योंही प्रेम करता था, अब उसने इरादा कर लिया कि उसे कोई नहीं रोक सकता। मेरी अपने सन्दूक की सबसे निचली तह के नीचे फ्रैंक की प्रेम-विभोर मुद्राओं की कम-से-कम एक-एक दर्जन तस्वीरें छिपाकर ले गई थी।

मेरी अपनी अठारहवीं वर्षगाँठ तक आश्रम में रही और फिर एक दिन सेण्ट लुई के रेलवे स्टेशन पर फ्रैंक शैबेटा से मिलकर उसके साथ भाग खड़ी हुई। बूढ़े टोवेस्की ने अपनी लड़की को माफ किया क्योंकि वह और कुछ कर भी न सकता था। उसने अपनी बेटी के लिए इस इलाके में खेत खरीद दिया। तबसे मेरी की कहानी इस इलाके के इतिहास का ही एक भाग रही है। जिस समय कार्ल लिंस्ट्रम अलैक्जेण्ड्रा से मिलने यहाँ आया हुआ था, मेरी और फ्रैंक को वहाँ रहते पाँच साल हो चुके थे। फ्रैंक की कामयाबी में लोगों को शक था पर उसने काफी कामयाबी हासिल कर दिखाई थी। वह अपने खेत में अपने पूरे जोर-शोर के साथ जुट गया था। साल में एक बार वह हेस्टिंग्स या ओमेहा सैर-सपाटे के लिए जाता और हफ्ते-दो हफ्ते बाद लौटकर फिर काम में जुट जाता।

: ८ :

जिस दिन अलैक्जेण्ड्रा मेरी से मिलने आई थी उस शाम को खूब बारिश हुई। फ्रैंक बहुत देर तक बैठा रविवारीय समाचारपत्र पढ़ता रहा। गोल्ड नामक एक परिचित व्यक्ति ने अपनी पत्नी को तलाक दिया था जिसे पढ़कर फ्रैंक इतना उत्तेजित हो उठा मानो उसकी अपनी तौहीन हुई हो। वह अपने खेत में काम करने वाले एक आदमी से बोला, जो कि

वहीं बैठा अखबार का दूसरा हिस्सा पढ़ रहा था।

"भगवान् कसम, अगर वह आदमी एक बार भी मेरे खेत में आ जाय तो मैं उसे मजा चखाऊँ। सुनो, वह अपना पैसा कैसे बिगाड़ता है," कह-कर वह उस युवक की फिजूलखर्ची का चिट्ठा पढ़ने लगा।

मेरी आह भरकर रह गई। वह रविवारीय समाचारपत्रों को घर में आते देख जल उठती थी। फ्रैंक हमेशा रईसों की करतूत पढ़कर क्रुद्ध हो जाता था। रईसों के अपराधों और पापों की उसे अनगिनत कहानियाँ मालूम थीं, कि कैसे वे कचहरियों में रिश्वत देते हैं और जब जी चाहा अपने नौकरों को गोली से उड़ा देते हैं। फ्रैंक और लू बर्गसां के समान विचार थे और वे दोनों अपने इलाके के राजनीतिक कार्यकर्ता थे।

अगले दिन सुबह आकाश स्वच्छ और निर्मल था लेकिन फ्रैंक का खयाल था कि हल चलाने के लिए जमीन जरूरत से ज्यादा गीली है। अतः वह गाड़ी में चढ़कर सेण्ट आग्नेज में मोजेज मार्सेल के शराबखाने में दिन बिताने चल दिया। फ्रैंक के चले जाने के बाद मेरी दूध बिलोने में लग गई। हवा तेज चल रही थी और आसमान में रुई जैसे सफेद बादल उड़े जा रहे थे। धूप में बगीचे का पत्ता-पत्ता चमक रहा था। मेरी बड़ी चाह के साथ इस दृश्य को देख रही थी कि एकाएक दरवाजे पर घण्टी सुनाई दी। इस निमन्त्रण को पाते ही मेरी ने अपने हाथ का काम छोड़ दिया। झट से कपड़े बदलकर वह बगीचे में चली आई। एमिल ने पहले से ही जोर-शोर के साथ घास काटना शुरू कर दिया था। मेरी को आते देख वह अपने माथे का पसीना पोंछने लगा।

"मेरी वजह से अपना काम मत रोको, एमिल! मैं आलबालू चुनूँगी। देखो, बारिश के बाद हर चीज कितनी अच्छी लग रही है। जब रात को मैंने देखा कि पानी बरस रहा है तो मैं समझ गई कि कल तुम घास काटने जरूर आओगे। हवा से मैं जाग गई—कितनी तेज हवा चल रही थी। जरा इन जंगली गुलाबों को सूँघकर देखो। बारिश के बाद ये कितने अच्छे लगते हैं! पहले कभी यहाँ इतने सारे गुलाब नहीं हुए थे। क्या तुम

इन्हें भी काट डालोगे ?"

"अगर मैं घास काटूँगा तो ये भी कटेंगे," एमिल ने छेड़ते हुए कहा। "तुम्हें क्या हो गया है ? तुम इतनी बेचैन क्यों हो ?"

"क्या मैं बेचैन नजर आती हूँ ? शायद बरसात के कारण ऐसा हो। अच्छा, अगर गुलाबों को काटना ही पड़े तो सबसे बाद में काटना। लेकिन सब मत काटना। अच्छा, अब मैं चलूँ, अगर कोई साँप दिखाई दिया तो तुम्हें बुला लूँगी।"

उस ऋतु में इतना ज्यादा बारिश हुई थी कि शैनेटा को अपने खेत से ही फुरसत न मिलती थी और बगीचा तो बिलकुल जंगल बन गया था। तरह-तरह की झाड़ियाँ और पौधे उग आए थे जिन्हें काटते-काटते एमिल खूबानी के सफेद पेड़ के पास पहुँचा जहाँ कि मेरी आलबालू से भरे तसले के पास बैठकर गेहूँ के लहलहाते खेत को देख रही थी।

"एमिल," उसने अचानक पूछा, "अच्छा यह बताओ, स्वीडन के रहने वालों का ईसाई बनने से पहले क्या धर्म था ?"

"मालूम नहीं," एमिल ने कमर सीधी करते हुए कहा, "जो जर्मनों का धर्म था वही होगा।"

मेरी ऐसे बोलती रही मानो उसने एमिल की बात ही न सुनी हो। "जानते हो, बोहिमियन ईसाई बनने से पहले पेड़ों की पूजा किया करते थे। पिताजी कहते हैं कि पहाड़ों में रहने वाले अब भी कई अजीब बातें करते हैं—उनका विश्वास है कि पेड़ लोगों की किस्मत बनाते-बिगाड़ते हैं।"

"यह बात ?" एमिल ने अपने-आपको ज्यादा अक्लमन्द समझते हुए कहा, "तो बताओ अच्छी किस्मत लाने वाले कौनसे पेड़ हैं ?"

"सब पेड़ों के नाम तो मैं नहीं जानती, लेकिन जँभीरी-नींबू के पेड़ बहुत अच्छे माने जाते हैं। पहाड़ों में रहने वाले पुराने लोग जंगलों को शुद्ध करने और भूत प्रेत भगाने के लिए इन पेड़ों को लगाते हैं। वैसे तो मैं ईसाई हूँ पर अगर मेरे पास कुछ काम न हो तो मैं पेड़ों की तीमारदारी ही करती रहूँ।"

"यह ठीक नहीं है," एमिल ने अपनी बाँहें पोंछते हुए कहा।

"ठीक क्यों नहीं है? मुझे पेड़ अच्छे लगते हैं तो क्यों ठीक नहीं है? मुझे पेड़ इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि वे दूसरी चीज़ों की निस्बत अपना भाग्य ज़्यादा आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। जब मैं इस पेड़ के नीचे बैठती हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि यह पेड़ मेरे मन की सब बातें जान लेता है। जब मैं लौटकर यहाँ आती हूँ तो मुझे इसे किसी बात की याद नहीं दिलानी पड़ती; जहाँ मैंने बात छोड़ी थी वहीं से फिर शुरू कर देती हूँ।"

एमिल ने उत्तर न दिया। वह पेड़ों में से फूल तोड़कर मेरी की गोद में डालने लगा।

"मिस्टर लिंस्ट्रम तुम्हें अच्छे लगते हैं?" मेरी ने अचानक पूछा।

"हाँ हाँ, तुम्हें नहीं लगते?"

"बहुत अच्छे लगते हैं, लेकिन स्कूल के मास्टरों की तरह कुछ गम्भीर नज़र आते हैं। लेकिन वह फ्रैंक से भी उम्र में बड़े हैं। मैं तो तीस बरस से ज़्यादा ज़िन्दा भी नहीं रहना चाहती। क्या अलैक्जेण्ड्रा उन्हें बहुत चाहती है?"

"मेरा खयाल तो यही है। वे दोनों बहुत पुराने दोस्त हैं।"

"तुम मेरा मतलब नहीं समझे, एमिल!" मेरी ने अधीर होते हुए कहा। "क्या वह दरअसल उन्हें पसन्द करती है? जब अलैक्जेण्ड्रा उनके बारे में बातें किया करती थी तो मुझे शक होता था कि वह उनसे प्रेम करती है।"

"कौन, अलैक्जेण्ड्रा?" एमिल हँस पड़ा। "तुम पागल हो, अलैक्जेण्ड्रा ने कभी किसी से प्रेम नहीं किया।" कहकर एमिल फिर हँस पड़ा। "वह जानती ही नहीं कि प्रेम क्या बला है!"

"तुम अलैक्जेण्ड्रा को नहीं जानते। अगर तुम्हारी आँखें होतीं तो तुम देख लेते कि वह लिंस्ट्रम को कितना चाहती है। तुम्हें तब मालूम पड़ेगा कि जब वह कार्ल के साथ चल देगी। मुझे कार्ल इसीलिए पसन्द है क्योंकि वह अलैक्जेण्ड्रा को तुमसे ज़्यादा समझता है।"

"तुम क्या कह रही हो ? अलैक्जेण्ड्रा को मैं खूब अच्छी तरह से समझता हूँ। अच्छा, छोड़ो इस बात को। कार्ल से मैं न्यूयार्क के बारे में और वहाँ नया आदमी क्या कर सकता है इस विषय में पूछता हूँ।"

"तो क्या तुम यहाँ से चले जाने की सोच रहे हो ?"

"क्यों नहीं ? कहीं-न-कहीं तो मुझे जाना ही चाहिए।" युवक ने हँसिए पर झुकते हुए कहा।

मेरी का चेहरा एकदम उदास हो उठा। "मैं समझती हूँ, अलैक्जेण्ड्रा तुम्हें यहीं रखना चाहती है," उसने धीरे से कहा।

"तो फिर अलैक्जेण्ड्रा को निराश होना पड़ेगा।" युवक ने रूखेपन से जवाब दिया। "मैं यहाँ रहकर क्या करूँगा ? अलैक्जेण्ड्रा मेरे बिना भी खेत का काम सँभाल सकती है। मैं नहीं चाहता कि मैं खड़े-खड़े देखता रहूँ। मैं खुद अपने-आप कुछ करना चाहता हूँ।"

"ठीक है," मेरी ने एक गहरी साँस लेते हुए कहा। "तुम बहुत से काम कर सकते हो—जो भी चाहो कर सकते हो।"

"और बहुत से काम मैं नहीं कर सकता," एमिल ने ताना मारते हुए कहा।

"मैं कुछ भी कहूँ तो तुम्हें बुरा लग जाता है, पहले तो नहीं लगता था।" मेरी ने सिर झुकाकर कहा।

एमिल झुँझलाहट के साथ मेरी के झुके सिर को देख रहा था। "अब मैं तुम्हारे साथ बच्चे की तरह नहीं खेल सकता। यही तुम्हें बुरा लगता है, मेरी ! अब तुम्हें कोई और लड़का ढूँढ़ना होगा," कहकर एमिल ने एक लम्बी साँस ली।

मेरी अपनी जगह से उठ खड़ी हुई। उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसकी आँखों से उत्तेजना और विषाद झलकने लगा। "तो मैं यह समझूँ, एमिल, अब हमारी पुरानी दोस्ती खतम हुई ? क्या अब हमें मिस्टर लिंस्ट्रम की तरह आपस में पेश आना पड़ेगा ?" हाथ मसलते हुए उसने फिर पूछा, "तो क्या अब हमारी पुरानी दोस्ती न रहेगी ?"

"न रहेगी। मैं नहीं चाहता कि रहे।"

एमिल हँसिया पकड़कर घास काटने लगा और मेरी रोती-रोती घर के अन्दर चली गई।

: ६ :

कार्ल लिंस्ट्रम को यहाँ आये एक महीना हो चुका था। एक दिन इतवार की दोपहर वह एमिल के साथ फ्रेंच इलाके में एक धार्मिक मेला देखने गया। वहाँ कुछ लड़के उछल-कूद रहे थे, कुछ कुश्तियाँ लड़ रहे थे, कुछ बेसबॉल खेलने के लिबास में थे। वे उस समय बेसबॉल के मैदान से ही लौटे थे। एमिल का परममित्र नवविवाहित एमिदी बेसबॉल के खेल में गेंद फेंकने के लिए आस-पास के सब क्लबों में मशहूर था। एमिदी एमिल से उम्र में एक साल और कद में काफी छोटा था और उसके चेहरे पर भी एमिल की निस्बत ज़्यादा लड़कपन था। कस्बे की दो बड़ी टीमों का मैच होने वाला था और एमिदी की टीम उस पर ही आशा लगाए बैठी थी। ऐसा लगता कि वह फ्रेंच नवयुवक गेंद फेंकते समय गेंद के साथ अपनी समूची ताकत लगा देता था।

एमिल और एमिदी दोनों बेसबॉल के मैदान से चर्च की तरफ वापस आ रहे थे। एमिल बोला, "पिछले साल से अब तुम अच्छी गेंद फेंकने लगे हो।"

एमिदी हँस पड़ा। "बेशक! शादीशुदा आदमी का दिमाग सधा रहता है," एमिल के कन्धे पर हाथ मारते हुए उसने कहा। "एमिल, तुम भी जल्दी से शादी कर डालो। शादी सबसे बड़ी चीज है।"

एमिल हँसने लगा। "बिना किसी लड़की के शादी कैसे करूँगा?"

एमिदी उसकी बाँह पकड़ते हुए बोला, "अरे, तुम्हें लड़कियों की कमी है? अभी कर लो किसी फ्रेंच लड़की से शादी। वह तुम्हारे साथ बहुत अच्छी तरह पेश आएगी और हमेशा खुश रहेगी। यहाँ इतनी सारी लड़कियाँ हैं, सभी प्रेम करने लायक हैं। तुम उनके पास क्यों नहीं जाते? कहीं

फँस गए हो क्या, या और कोई बात है ? मैंने तुम्हारे अलावा बीस बरस का और कोई ऐसा लड़का नहीं देखा जिसने कभी किसी लड़की से प्रेम न किया हो। शायद पादरी बनना चाहते हो ?"

"शुरू कर दी न बकवास !" एमिल ने उसका कन्धा थपथपाते हुए कहा, "तुम फ्रेंच लोग बड़े गप्पी होते हो।"

लेकिन एमिदी में नवविवाहित का उत्साह था और वह जल्दी मानने वाला न था। "अच्छा, ईमानदारी से बताओ एमिल, क्या तुम्हें कोई भी लड़की अच्छी नहीं लगती ? क्या कहीं और दिल खो बैठे हो ?"

"हो सकता है," एमिल ने उत्तर दिया।

लेकिन एमिदी ने अपने दोस्त के चेहरे पर प्रेम की कोई झलक न देखी और वह चिढ़कर बोला, "अच्छा तो मैं सब फ्रेंच लड़कियों से कह दूँगा कि वे तुमसे दूर रहें। तुम्हारे दिल में पत्थर है," कहकर एमिल का सीना ठोकने लगा।

बेसबॉल में अपनी सफलता से उत्साहित एमिदी ने हाईजम्प में एमिल को ललकारा, हालाँकि वह जानता था कि एमिल उससे कहीं अच्छा उछलने वाला है। दोनों ने अपनी कमर कस ली; बाकी लड़के उछलने वालों के लिए डोरी के दोनों छोर पकड़कर खड़े हो गए। एमिल पाँच फीट पाँच इंच पर जाकर रुक गया और बोला कि ज़्यादा ऊँचा उछलने से उसकी भूख मारी जायगी।

एमिदी की सुन्दर पत्नी एजीलिफ भी मैच देखने खड़ी थी। एमिल की तरफ सिर मटकाकर बोली—

"एमिदी अगर लम्बा होता तो तुमसे कहीं अच्छा उछल सकता था। कुछ भी हो, उछलते वक्त वह तुमसे कहीं अच्छा लगता है। परिंदे की तरह झट से उछल जाता है जब कि तुम्हें कुबड़ा बनकर उछलना पड़ता है।"

"यह बात है क्या ?" कहकर एमिल ने उसे पकड़ लिया और लगा उसका मुँह चूमने। हँसती, खिलखिलाती, अपने को बचाती वह चिल्लाई— "एमिदी ! एमिदी !"

"तुम्हारे एमिदी में इतनी ताकत नहीं कि वह तुम्हें मुझसे छुड़ा सके। मैं चाहूँ तो अभी तुम्हें लेकर भाग सकता हूँ, वह बैठा बैठा रोता रहेगा। अभी बताता हूँ कि मुझे कुबड़ा बनना पड़ता है या नहीं।" हँसते, हाँपते उसने मेरी को गोद में उठा लिया और लगा दौड़ने। मेरी शैबेटा की शेरनी जैसी निगाहें देखते ही उसने अस्त-व्यस्त केशों वाली पत्नी को उसके पति को सौंप दिया।

एमिल और एमिदी बारह बरस की उम्र से ही आपस में खेलते-कूदते लड़ते-भिड़ते रहे हैं। छुट्टियों के दिन वे सदा बाँह-में-बाँह डालकर घूमते थे। अजीब बात थी कि अब एमिल को वही चीज छिपानी पड़ रही थी जिसको एमिदी गर्व से दिखाता था, कि एक ही चीज एक मित्र को सुख और दूसरे को दुख पहुँचा रही थी। एमिल सोचने लगा, यह बात बहुत कुछ मकई के उन दानों की तरह ही है जिनकी पिछले साल अलैक्जेण्ड्रा ने जाँच की थी। पास-पास पैदा हुई दो बालियों में से एक बाली के दाने सहर्ष प्रकाश में प्रकट होकर अपने भविष्य की ओर अग्रसर होने लगे, जब कि दूसरी बाली के दाने धरती पर पड़े-पड़े सूख गए। ऐसा क्यों हुआ, कोई नहीं कह सकता।

: १० :

जिस समय एमिल और कार्ल धार्मिक मेले में घूम-फिर रहे थे, अलैक्जेण्ड्रा घर में बैठी हिसाब-किताब देख रही थी। वह हिसाब देख ही चुकी थी कि दरवाजे पर उसने किसी गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनी। खिड़की में से झाँककर उसने देखा कि उसके दोनों भाई आये हुए हैं। कार्ल लिस्ट्रम के आने के बाद से वे दोनों अपनी बहन से कुछ दूर-दूर रहने लगे थे, अतः अलैक्जेण्ड्रा उनका स्वागत करने बाहर पहुँची।

मकान के अन्दर झाँकते हुए लू ने पूछा, "तुम अकेली ही हो?"

"हाँ, कार्ल और एमिल धार्मिक मेले में गये हुए हैं।"

कुछ क्षण तक दोनों भाइयों में से कोई न बोला।

आखिर लू ने तेजी से पूछा, "कार्ल यहाँ से कब जायगा ?"

"कह नहीं सकती। उम्मीद है अभी कुछ दिन ठहरेगा।" अलैक्जेण्ड्रा ने अपने स्वाभाविक शान्त स्वर में कहा जिससे उसके भाई अक्सर भड़क उठते थे। वे समझते थे कि वह उनसे ऊँची बनने की कोशिश करती है।

ऑस्कर ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "हमने सोचा, हम तुम्हें यह बता दें कि लोगबाग आपस में बातें करने लगे हैं।"

"किस बारे में ?" अलैक्जेण्ड्रा ने उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"तुम्हारे बारे में, कार्ल को इतने दिन तक यहाँ रखने के बारे में। एक औरत के साथ उसका यहाँ इतने दिनों तक रहना बुरा लगता है। लोगों का खयाल है कि तुम उसके वश में हो गई हो।"

"लड़को," उसने हिसाब की बही जोर से बन्द करते हुए कहा, "इस तरह नहीं चलेगा। इस तरह कुछ भी न बनेगा। इस मामले में मैं किसी की सलाह नहीं ले सकती। मैं जानती हूँ, तुम मेरा भला चाहते हो, पर इस तरह की बात में तुम्हें मेरी जिम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए। अगर इस तरह की बात चलती रही तो हम लोगों के बीच मनमुटाव हो जायगा।"

"तुम्हें अपने परिवार का भी खयाल करना चाहिए, तुम हम सबका मजाक उड़वा रही हो।" लू ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"यह कैसे ?"

"लोग कहने लगे हैं कि तुम कार्ल से शादी करना चाहती हो।"

"तो इसमें मजाक की कौनसी बात है ?"

लू और ऑस्कर ने आपस में एक-दूसरे की ओर गुस्से-भरी नजर से देखा। "अलैक्जेण्ड्रा, क्या तुम यह नहीं जानतीं कि वह आवारा है और तुम्हारा रुपया हड़पना चाहता है ? वह अपनी तीमारदारी करवाना चाहता है।"

"मान लो, मैं उसकी तीमारदारी करना चाहती हूँ तो ? तुम्हें इससे क्या लेना-देना ?"

"वह तुम्हारी सारी जायदाद हड़प लेगा।"

"वह वही हड़पेगा जो मैं उसे देना चाहूँगी।"

"देना चाहोगी?" लू चिल्ला उठा, "हमारी जायदाद देना चाहोगी?"

अलैक्जेण्ड्रा अधीर हो उठी। "बेकार बातें मत करो, लू! हकीकत जानने की कोशिश करो। जाकर पटवारी से पूछो कि इस जमीन का मालिक कौन है और इस पर मेरा हक है या नहीं?"

लू ने अपने भाई की ओर देखते हुए कहा, "औरतों के हाथ में काम छोड़ने से यही होता है। हमें शुरू में ही सारा काम खुद सँभालना चाहिए था। लेकिन यह काम करना चाहती थी और हमने इसकी बात मान ली। हमारा खयाल था, अलैक्जेण्ड्रा, कि तुममें कुछ अक्ल होगी। हमें मालूम न था कि तुम इस कदर बेवकूफी कर बैठोगी।"

"सुनो लू, बेहूदी बातें मत करो। तुम कहते हो कि तुम्हें सारा काम खुद सँभाल लेना चाहिए था। शायद तुम घर छोड़कर अलग होने से पहले की बात कर रहे हो। लेकिन जो था ही नहीं उसे तुम सँभालते क्या?" बँटवारे के बाद ही मैंने इतना सब बनाया है और इससे तुम्हें कुछ नहीं लेना-देना।"

ऑस्कर गम्भीर होकर बोला, "किसी भी खानदान की जायदाद दर-असल खानदान के मर्दों की होती है। अगर कुछ बिगड़ता है तो मर्द ही जिम्मेवार ठहराए जाते हैं।"

"ठीक कहते हो," लू ने समर्थन किया। "हरेक यह जानता है। हम फिजूल परेशानी करने वाले लोगों में नहीं हैं और इसीलिए हमने अभी तक कुछ नहीं कहा। हम चाहते हैं कि तुम्हीं इस जमीन को रखो पर इसमें से किसी को हिस्सा देने का तुम्हें हक नहीं। तुम्हारी खरीदी हुई पहली जमीन का रुपया उगाहने के लिए हमने खेतों में काम किया था, और जो-कुछ उस जमीन से फायदा हुआ है परिवार में ही रहेगा।"

ऑस्कर ने अपने भाई की बात पुष्ट करने में फिर अपनी पहली बात

दोहराई, "किसी भी खानदान की जायदाद खानदान के मर्दों की ही होती है, क्योंकि उन्हें ही जिम्मेवार ठहराया जाता है और वे ही सब काम करते हैं।"

अलैक्जेण्ड्रा ने दोष-भरी दृष्टि से दोनों भाइयों को देखा। उसका धैर्य टूट चुका था और क्रोध उस पर अधिकार पाता जा रहा था। "और जो काम मैंने किया है सो कुछ नहीं?" उसने डगमगाती आवाज में पूछा।

लू ने जमीन की ओर देखते हुए कहा, "तुम तो यों ही काम करने के लिए काम करती थीं। हम मानते हैं कि तुमने हमारी बहुत मदद की है। आसपास कोई भी ऐसी औरत नहीं है जो तुम्हारे जितना काम जानती हो; हमें इस बात का हमेशा गर्व रहा है। लेकिन, असली काम हमेशा हमें ही करना पड़ा है। नेक सलाह बहुत अच्छी चीज है, लेकिन सिर्फ सलाह से ही जंगली झाड़ियाँ साफ नहीं हो सकतीं।"

"लेकिन सलाह से भी बहुत-कुछ होता है," अलैक्जेण्ड्रा ने रूखेपन से जवाब दिया। "मुझे खूब याद है कि तुम दोनों इस जगह को दो हजार डॉलर में पादरी एरिकसन को बेचने के लिए तैयार हो गए थे। अगर मैं राजी हो जाती तो तुम सारी जिन्दगी नदी-किनारे के बेकार खेतों में पड़े रहते। जब मैंने पहले-पहल अलफालफा बोया तो तुम दोनों ने मेरा विरोध किया था क्योंकि यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले एक लड़के से मैंने इस बारे में सुना था। तुमने और सब पड़ोसियों ने मेरा विरोध किया था। तुम जानते हो कि अलफालफा ने ही इस इलाके का उद्धार किया है। जब मैंने पहले-पहल गेहूँ बोने के लिए कहा तो तुम सबने मेरी खिल्ली उड़ाई थी और जब मैं गेहूँ की तीन बड़ी फसलें कर चुकी तब जाकर पड़ोसियों ने मक़ई की जगह गेहूँ बोना शुरू किया।"

लू ऑस्कर की तरफ देखकर बोला, "यह बिलकुल औरतों जैसी बात है। अगर इसने कोई फसल बोने के लिए कहा तो समझती है कि इसने खुद ही बोई है। मर्दों के काम में दखल देने से न जाने औरतें अपने-आपको क्या समझने लगती हैं। मैं नहीं चाहता, अलैक्जेण्ड्रा, कि तुम्हें

यह याद दिलाऊँ कि तुम हमारे साथ कितनी सख्ती से पेश आई हो।"

"सख्ती से पेश आई हूँ? मैं कभी सख्त होना न चाहती थी पर यहाँ की हालत ही सख्त थी। शायद मैं बहुत मुलायम भी न हो सकती थी; यह मेरे वश की बात न थी। अगर तुम अंगूर की बेल को भी बार-बार काटोगे तो वह भी पेड़ की तरह सख्त हो जायगी।"

लू ने महसूस किया कि वे असली मुद्दे से दूर चले जा रहे हैं और इस तरह अलैक्जेण्ड्रा उसे मात दे देगी। रूमाल के एक झटके से अपना माथा पोंछते हुए वह बोला, "अलैक्जेण्ड्रा, हमने कभी तुम पर शक नहीं किया। हमने हमेशा तुम्हें अपनी मनमानी करने दी। लेकिन तुम्हें हमसे यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि तुम किसी आवारा के हवाले सारी जायदाद कर बेवकूफ बनो और हम बैठे-बैठे देखते रहें।"

"लू ठीक कहता है," ऑस्कर ने बीच में टोकते हुए कहा। "तुम्हारी इस हालत को देखकर हरएक मजाक उड़ा रहा है—और वह भी इस उम्र में। सब जानते हैं कि वह तुमसे कम-से-कम पाँच साल छोटा है और सिर्फ तुम्हारी दौलत के पीछे पड़ा है। अलैक्जेण्ड्रा, अब तो तुम चालीस साल की होने आई!"

"मेरे और कार्ल के अलावा इस बात से और किसी का वास्ता नहीं। शहर में जाकर अपने वकीलों से पूछो कि मेरी जायदाद पर हक पाने के लिए तुम्हें क्या करना होगा। जो वे कहें वही करना क्योंकि अब से तुम मेरे ऊपर सिर्फ कानूनी दबाव डाल सकते हो और किसी तरह का दबाव न चलेगा।"

अलैक्जेण्ड्रा उठ खड़ी हुई, "मुझे पता न था कि यह सब सुनने के लिए मुझे जीना होगा।"

लू और ऑस्कर आपस में एक-दूसरे को देखते रह गए। वहाँ से चल देने के अलावा अब वे और कुछ न कर सकते थे, अतः चल दिए।

"औरतों के साथ काम-काज की बात करना फिजूल है," गाड़ी में बैठते हुए ऑस्कर ने कहा। "लेकिन हमें जो-कुछ कहना था वह तो हमने

कह ही दिया।"

लू सिर खुजलाने लगा, "हमने बहुत कुछ कह दिया, पर शायद अब उसमें अक्ल आ जाय। तुम्हें उसकी उम्र के बारे में कुछ नहीं कहना चाहिए था, ऑस्कर! इससे उसे चोट पहुँची है और उसे अपने खिलाफ कर देना ही सबसे बुरी बात है। वह इस खिलाफत की वजह से ही शादी कर डालेगी।"

"मेरा मतलब सिर्फ यह था," ऑस्कर ने कहा, "कि इस उम्र में आदमी को समझदार होना चाहिए। अगर उसे शादी ही करनी थी तो पहले की होती। अब अपना मजाक उड़वाने से क्या फायदा?"

लू कुछ चिंतित नजर आया और बोला, "कुछ भी हो, अलैक्जेण्ड्रा और औरतों जैसी नहीं है।"

: ११ :

उस रोज शाम को एमिल करीब साढ़े सात बजे घर लौटा। बूढ़े ईवार ने रास्ते में ही उसका घोड़ा थाम लिया और वह सीधा घर पहुँचा। एमिल ने अपनी बहन को पुकारा। वह बैठक के पीछे अपने सोने के कमरे में लेटी थी।

"क्या मैं एक मिनट के लिए कुछ बात कर सकता हूँ?" उसने पूछा। "कार्ल के आने से पहले ही मैं कुछ कहना चाहता हूँ।"

"कार्ल कहाँ है?" अलैक्जेण्ड्रा ने जल्दी से उठकर दरवाजे में आते हुए पूछा।

"लू और ऑस्कर हमें रास्ते में मिले और उन्होंने कार्ल से कहा कि वे कुछ बातें करना चाहते हैं, सो कार्ल उनके साथ ऑस्कर के घर चला गया। बाहर आ रही हो क्या?" एमिल ने अधीर होते हुए पूछा।

"हाँ, तुम बैठो मैं अभी कपड़े पहनकर आती हूँ।"

अलैक्जेण्ड्रा ने दरवाजा बन्द कर लिया और एमिल बाहर के कमरे में बैठ गया। जब अलैक्जेण्ड्रा बाहर आई—पता नहीं उसे आने में कितनी देर लगी थी—कमरे में अँधेरा हो चुका था। अच्छा ही था, एमिल

ने सोचा, कि अंधेरा हो गया है क्योंकि अब उसे उन संजीदा निगाहों का सामना न करना पड़ रहा था जोकि कई दिशाओं में बहुत दूर तक देख लेती थीं और कई दिशाओं में अन्धी बनी रहती थीं। वह अंधेरा अलैक्जेण्ड्रा के लिए भी अच्छा ही था क्योंकि रोते-रोते उसका चेहरा सूज गया था।

"अलैक्जेण्ड्रा," एमिल ने धीरे से अपनी गहरी जवानी की आवाज़ में कहा, "मैं इस साल कानूनी पढ़ाई करने नहीं जाना चाहता। किसी भी पेशे को जल्दी में अपनाना आसान है, उसमें से निकलना मुश्किल है। इस बारे में लिंस्ट्रम से भी मेरी बात हुई है।"

"बहुत अच्छा, एमिल! लेकिन ज़मीन की तलाश में भी इधर-उधर मत फिरना।" अलैक्जेण्ड्रा ने उठकर एमिल के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "मैं भी यही चाहती थी कि इस सरदी में तुम यहाँ मेरे साथ ही रहो।"

"मैं यही नहीं चाहता, अलैक्जेण्ड्रा! मैं बेचैन रहता हूँ। मैं किसी नई जगह जाना चाहता हूँ। मैं मैक्सिको शहर में अपने एक दोस्त के पास जाना चाहता हूँ। वह वहाँ बिजली के एक कारखाने का कर्त्ताधर्त्ता है। उसने मुझे लिखा है कि वह मुझे कोई छोटी-सी नौकरी दे सकता है ताकि मैं अपने आने-जाने का खर्च पूरा कर लूँ और देखूँ कि मैं क्या-क्या कर सकता हूँ। मैं फसल कटने के बाद ही चला जाना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ, लू और ऑस्कर को ज़रूर बुरा लगेगा।"

"मेरा भी यही खयाल है," अक्लैजेण्ड्रा ने उसके पास बैठते हुए कहा। "वे दोनों मुझसे बहुत नाराज़ हैं, एमिल! मेरी उनसे लड़ाई हो गई। अब वे यहाँ न आएँगे।"

"किस बात को लेकर लड़ाई हो गई?" एमिल ने लापरवाही से पूछा।

"कार्ल लिंस्ट्रम को लेकर। उन्हें डर है कि मैं उससे शादी कर लूँगी और उनके हाथ से कुछ जायदाद निकल जायगी।"

"कैसी बेकार की बात है!" एमिल ने कन्धे उचकाते हुए कहा। "वे

लोग हमेशा ऐसी ही बेकार की बातें सोचते रहते हैं।"

"क्या बात बेकार की है?" अलेक्जेण्ड्रा ने कुछ पीछे हटते हुए पूछा।

"तुमने कभी इस बारे में सोचा भी न होगा और वे लगे हायतोबा मचाने।"

"एमिल," बहन ने धीरे से कहा, "तुम्हें हर बात मानकर नहीं चलना चाहिए। क्या तुम भी यही समझते हो कि मुझे अपनी जिन्दगी बदलने का हक नहीं है?"

कुछ देर चुप रहकर वह बोला, "क्यों नहीं? तुम्हारी जो मरजी हो तुम्हें करना चाहिए। मैं हमेशा तुम्हारा साथ दूँगा।"

"लेकिन, अगर मैं कार्ल से शादी कर लूँ तो तुम्हें कुछ अजीब लगेगा न?"

एमिल हेरा-फेरी करने लगा। उसे यह खयाल ऐसा न नजर आया कि जिस पर बहस की जा सके। "नहीं, मुझे अजीब न लगेगा, पर कह नहीं सकता क्यों, कुछ आश्चर्य जरूर होगा, लेकिन इसमें मैं कैसे दखल दे सकता हूँ? तुम्हारी जो मरजी हो तुम्हें करना चाहिए। तुम्हें भाइयों की बातों का कतई खयाल नहीं करना चाहिए।"

"मेरा खयाल था कि तुम कुछ समझ सकों कि मैं क्यों शादी करना चाहती हूँ। लेकिन तुम्हारे लिए यह समझना मुश्किल है। तुम जानते हो, एमिल, कि मेरा जीवन कितना सूना रहा है। मेरी के अलावा, सिर्फ कार्ल ही मेरा एक दोस्त है।"

मेरी का नाम सुनते ही एमिल एक साथ जाग उठा। अपनी बहन का हाथ पकड़कर बोला, "तुम्हें अपने मन की बात ही करनी चाहिए। कार्ल बहुत अच्छा आदमी है। मेरी-उसकी खूब बनती है। लू और ऑस्कर चाहे उसके बारे में कुछ भी कहें, मैं नहीं मानता। उन्हें उससे डर है क्योंकि वह उनसे ज्यादा अक्लमन्द है। तुम तो उनके खयालात जानती ही हो। जब से तुमने मुझे कालेज भेजा है वे मुझसे भी चिढ़ने लगे हैं। कार्ल अक्ल-

मन्द आदमी है। वह उनकी बातों का बुरा न मानेगा।"

"कह नहीं सकती। अगर उन्होंने उससे भी वैसी ही बातें कीं जैसी कि मुझसे कही थीं तो, मैं समझती हूँ, वह चला जायगा।"

एमिल की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। "मेरी भी कह रही थी कि अगर तुम उसके साथ चली गई तो हमें सबक मिलेगा।"

"कह रही थी? न कि कह रही थी। भगवान् भला करे उसका!" अलैक्जेण्ड्रा के मुँह से निकल पड़ा।

एमिल को अपने कमरे में आकर राहत मिली। उसे अपनी बहन के लिए शरम आ रही थी हालाँकि उसने ऐसा प्रकट न होने दिया था। अलैक्जेण्ड्रा का प्रस्ताव, उसने महसूस किया, कुछ भद्दा लगता था, वास्तव में उपहासास्पद था। उसने सोचा, दुनिया में यों ही बहुत-सी मुसीबतें हैं और चालीस बरस के बुड्ढे शादी कर उन मुसीबतों को क्यों नाहक बढ़ा रहे हैं। उस अन्धकार और एकान्त में एमिल अलैक्जेण्ड्रा के बारे में बहुत देर तक न सोच सका। सब बातें भूलकर मेरी के बारे में सोचने लगा। उस रोज मेरी को उसने भीड़ में देखा था। वह सोचने लगा कि क्यों तो मेरी फ्रैंक शैबेटा के साथ भागी थी और अब क्यों फ्रैंच और बोहिमियन लड़कों के बीच अपने को पाकर खुश नजर आती है? फ्रैंक के अलावा वह और किसी में क्यों दिलचस्पी लेती है? क्यों उसकी हँसती-खेलती आँखों में वह चीज कभी नहीं दिखाई देती जो वह चाहता था?

और फिर वह सोचने लगा कि अगर मेरी उसे प्यार करती होती तो क्या होता? अलैक्जेण्ड्रा ने कहा था कि वह अपना समूचा दिल दे सकती है। इस तरह की कल्पना में एमिल घण्टों तक खोया रह सकता था। उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़कर, खेत पार कर, मेरी शैबेटा के यहाँ विचरती रहती थी। दो वर्षों से यह आग उसके हृदय में धधक रही थी।

: १२ :

अलैक्जेण्ड्रा लैम्प जला रही थी कि कार्ल आ पहुँचा। उसके कन्धे

झुके थे मानो वह थक चुका हो। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और आँखों के नीचे एक साथ कालापन नजर आने लगा था।

"लू और ऑस्कर से मिलकर आये हो?" अलैक्जेण्ड्रा ने पूछा।

"हाँ," अलैक्जेण्ड्रा से नजर मिलाए बिना उसने उत्तर दिया।

एक गहरी साँस भरकर अलैक्जेण्ड्रा बोली, "और अब चले जाना चाहते हो न? मैं जानती थी।"

कार्ल एक कुरसी पर पड़ गया और अपने गोरे, काँपते हाथ से अपने माथे पर आये बालों को हटाते हुए बोला, "अलैक्जेण्ड्रा, तुम किस मुश्किल में फँसी हो? तुम्हारे भाग्य में ही यह लिखा है कि तुम सदा छोटे-छोटे लोगों से घिरी रहो। और मैं भी छोटा ही आदमी हूँ। मैं लू और ऑस्कर जैसे आदमियों तक की आलोचना बरदाश्त करने के लिए छोटा हूँ। हाँ, मैं कल चला जाऊँगा। मैं जब तक तुम्हें कुछ दे न सकूँ तुमसे किसी प्रकार का आश्वासन तक नहीं माँग सकता। मेरा खयाल था कम-से-कम तुम्हारा आश्वासन तो पा सकूँगा, पर अब यह भी सम्भव नहीं है।"

"किसी को वह सब देने से क्या फायदा जो उसे नहीं चाहिए?" अलैक्जेण्ड्रा ने दुखी होते हुए पूछा। "मुझे धन की जरूरत नहीं, पर कई बरसों से तुम्हारी जरूरत मुझे रही है। क्या मुझे यह सब खुशहाली इसी-लिए मिली है कि मेरे दोस्त मुझसे छिन जायँ?"

"मैं अपने-आपको धोखा नहीं देना चाहता," कार्ल बोला। "मैं जानता हूँ कि मैं अपने-आप जा रहा हूँ। मुझे कुछ कर दिखाने के लिए कोशिश करनी चाहिए। जो-कुछ तुम मुझे दोगी उसे लेने के लिए मुझे बहुत बड़ा या फिर बहुत छोटा होना चाहिए, और मुश्किल यह है कि मैं बीच का आदमी हूँ।"

"मैं समझती हूँ, अगर तुम अब चले जाओगे तो फिर कभी न लौटोगे," अलैक्जेण्ड्रा ने आह भरते हुए कहा। "हम दोनों में से किसी एक को या दोनों को कुछ-न-कुछ हो जायगा। इस दुनिया में सुख को छीनकर लेना पड़ता है। खोना आसान है और पाना मुश्किल। अगर तुम मुझे चाहते

हो तो जो-कुछ मेरा है वह तुम्हारा है।"

कार्ल खड़ा होकर जॉन बर्गसां का चित्र देखने लगा, "लेकिन नहीं, मैं नहीं ले सकता। मैं अभी चला जाऊँगा और सारी सरदी केलिफोर्निया में गँवाने के बजाय अभी से काम शुरू कर दूँगा। अब मैं एक हफ्ता भी बिगाड़ना नहीं चाहता। अलैक्जेण्ड्रा, धीरज रखना। मेरे लिए साल-भर इन्तजार करना।"

"जैसी तुम्हारी मरज़ी," अलैक्जेण्ड्रा ने थकान के साथ कहा। "एक दिन में ही मैं सब-कुछ खो बैठी। एमिल भी चला जाने वाला है।"

कार्ल जॉन बर्गसां का चित्र देख रहा था और अलैक्जेण्ड्रा की आँखें उसका अनुसरण करने लगीं। "हाँ, आज अगर पिताजी मुझे इस हालत में देखते तो जरूर दुखी होते," अलैक्जेण्ड्रा ने धीरे-से कहा।

: ३ :

शीतकालीन स्मृतियाँ

: १ :

सरदी का मौसम आ चुका था—वह मौसम जिसमें प्रकृति पुनः स्वास्थ्य लाभ करती है, जिसमें वह पतझड़ की उत्पादनशीलता और वसन्त के उद्दीपन के बीच सोई रहती है। पक्षीगण लुप्त हो चुके थे और लम्बी घास के असंख्य कीटाणुओं की जीवन-लीला भी समाप्त हो चुकी थी। रंग-बिरंगे खेत, चरागाह, सड़कें और आकाश सभी एक रंग में—मटमैले रंग में—रंगे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उस मृतप्राय दृश्य में जीवन सदा के लिए समाप्त हो गया था।

अलैक्जेण्ड्रा पुनः अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहने लगी। हर हफ्ते एमिल की चिट्ठी आती थी। कार्ल के चले जाने के बाद से लू और ऑस्कर से वह न मिली थी। उत्सुक दर्शकों की निगाहों से बचने के लिए उसने नार्वेजियन चर्च में जाना छोड़ दिया था और अब वह मेरी शैबेटा के साथ फ्रैंच चर्च में जाया करती थी। उसने कार्ल या अपने भाइयों से अपने झगड़े के बारे में मेरी को कुछ न बताया था। वह वैसे भी अपने बारे में कभी कुछ न कहती थी, और अगर कहने की नौबत आती तो भी उसका दिल गवाही न देता था कि मेरी इस बात को समझ सकेगी।

वृद्धा श्रीमती ली को भय था कि कहीं पारिवारिक मनोमालिन्य अलै-

क्जेण्ड्रा के यहाँ उनका जाना बन्द न कर दे। लेकिन दिसम्बर के पहले दिन ही अलैक्जेण्ड्रा ने ऐनी को टेलीफोन पर कहा कि वह श्रीमती ली को लिवा लाने के लिए कल ईवार को भेज रही है। दूसरे दिन ही श्रीमती ली अपनी पोटली समेत आ पहुँचीं। पिछले बारह बरसों से श्रीमती ली अलैक्जेण्ड्रा के यहाँ आकर सदा खुश होती थीं। उन्हें अलैक्जेण्ड्रा के यहाँ की आजादी और दिन-भर अपनी निजी भाषा सुनना बहुत पसन्द था। यहाँ वह अपनी पुरानी रात की टोपी पहनकर और सब खिड़कियाँ बन्द कर सो सकती थीं। ईवार से बाइबल सुनना और एमिल के पुराने जूते पहनकर अस्तबलों में जाना-आना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। हालाँकि उनकी पीठ दोहरी हो चुकी थी पर फिर भी वह टिड्डे की तरह फुदकती फिरती थीं। रात को सोने से पहले गरम पानी और चीनी के साथ कुछ ब्रांडी पीना उन्हें पसन्द था, जो कि अलैक्जेण्ड्रा उनके लिए हमेशा तैयार रखती थी। आँख मिचकाकर वह कहती थीं, "इसे पीने से अच्छे सपने आते हैं।"

श्रीमती ली को अलैक्जेण्ड्रा के यहाँ आये एक हफ्ता हो चुका था। एक दिन सुबह मेरी शैबेटा ने अलैक्जेण्ड्रा से टेलीफोन पर कहा कि फ्रैंक दिन भर के लिए शहर गया हुआ है और वह चाहती है कि अलैक्जेण्ड्रा और श्रीमती ली दोपहर में उसके यहाँ कॉफी पीने आएँ।

दिन के दो बजे अलैक्जेण्ड्रा की गाड़ी मेरी शैबेटा के दरवाजे पर रुकी और जैसे ही मेरी ने श्रीमती ली का लाल दुशाला देखा वह उनसे मिलने दौड़ती चली आई। उन्हें अन्दर ले जाकर मेरी उनका दुशाला उतारने लगी जब कि अलैक्जेण्ड्रा घोड़े को एक तरफ खड़ा कर उस पर कम्बल डाल रही थी। श्रीमती ली ने काली साटिन की पोशाक पहन रखी थी—सरदियों में भी उन्हें ऊनी कपड़े अच्छे न लगते थे—जिसके कढ़े हुए कॉलर पर सोने का एक पिन लगा हुआ था।

अलैक्जेण्ड्रा ने अन्दर आकर अपना टोप और नकाब उतारा। श्रीमती ली रसोई में जाकर चूल्हे के पास एक आरामकुरसी पर बैठ गईं और तीन जनों के लिए लगी हुई मेज को बड़ी दिलचस्पी के साथ देखने लगीं,

जिसके सफेद मेज़पोश पर गुलाबी फूलों का एक गुलदस्ता रखा था। "बड़े खूबसूरत फूल हैं ! सरदी-पाले से तुम इन्हें कैसे बचाती हो ?"

"मैं सारी रात आग जली रहने देती हूँ और जब बहुत सरदी पड़ती है तो मैं इन गमलों को कमरे के बीचोंबीच मेज़ पर रख देती हूँ। बाकी रातों को मैं इनके पीछे अखबार लगा देती हूँ। कार्ल मेरे इस काम को देखकर बहुत हँसता है।"......"कार्ल की क्या खबर है, अलैक्जेण्ड्रा ?"

"बरफ पड़कर नदी जमने से पहले वह डॉसन पहुँच चुका था, और अब सरदी खतम होने से पहले, मेरा खयाल है, कोई खबर न मिलेगी। केलिफोर्निया छोड़ने से पहले उसने मुझे नारंगियों की एक पेटी भेजी थी, पर वे सब खराब हो गईं। मैं तुम्हारे लिए एमिल की बहुत सी चिट्ठियाँ लाई हूँ।" मेरी का गाल नोचते हुए अलैक्जेण्ड्रा बोली, "तुम्हारे ऊपर सरदी का कोई असर नहीं होता, न कभी ज़ुकाम ही होता है। श्रीमती ली, जब यह बहुत छोटी थी तब भी इसके गाल इसी तरह लाल थे। एक अजीब विदेशी गुड़िया जैसी लगती थी। मैं वह दिन कभी न भूलूँगी, मेरी, जब मैंने पहले-पहल तुम्हें माइकिल जॉन की दुकान में देखा था, उन दिनों मेरे पिता बीमार थे। कार्ल के जाने से पहले हम इसी बारे में बात कर रहे थे।"

"मुझे याद है, एमिल के साथ उसकी बिल्ली भी थी। अच्छा, एमिल को बड़े दिन की सौगात कब भेजेगी ?"

"अभी तक भेज देनी चाहिए थी। अब डाक से भेज दूँगी ताकि वक्त पर पहुँच सके।"

मेरी ने कढ़ाई-बुनाई की अपनी टोकरी से एक लाल नेकटाई निकालते हुए कहा, "यह मैंने एमिल के लिए बुनी है। अच्छा रंग है न ? क्या तुम इसे भी अपनी चीज़ों के साथ भेज दोगी ? साथ में यह लिख देना कि यह मैंने भेजी है और जब वह प्रेम के गीत गाने निकले तो इसे पहन लिया करे।"

अलैक्जेण्ड्रा हँस पड़ी। "मैं नहीं समझती कि वह बहुत ज़्यादा प्रेम

के गीत गाता होगा। उसने अपने एक पत्र में लिखा है कि मैक्सिको की औरतें उतनी खूबसूरत नहीं हैं जितना कि उनके लिए कहा जाता है।"

"एमिल मुझे बेवकूफ नहीं बना सकता," मेरी ने अपने सिर को झटका देते हुए कहा, "अगर उसने गिटार खरीद लिया है तो जरूर प्रेम-गीत गाता फिरता होगा। जब खिड़कियों से फूलों की वर्षा करने वाली इतनी सारी स्पेनिश लड़कियाँ हों तो कौन नहीं गाएगा ? मैं होती तो हर रात गाती फिरती। क्यों, श्रीमती ली, क्या आप न गातीं ?"

श्रीमती ली खिलखिला पड़ीं। जैसे ही मेरी ने चूल्हे का ढक्कन उठाया श्रीमती ली की आँखें चमकने लगीं। सारी रसोई गरम-गरम स्वादिष्ट गंध से भर गई। "वाह, कितनी अच्छी खुशबू है !" श्रीमती ली ने अलैक्जेण्ड्रा की ओर आँख मिचकाते हुए कहा।

मेरी ने खूबानियों से भरी छोटी-छोटी गुझियाएँ निकालीं और उन पर पिसी हुई चीनी बुरकने लगी। "अलैक्जेण्ड्रा को यह पसन्द आती हैं, शायद आपको भी पसन्द आएँ, श्रीमती ली ! बोहिमियन लोग इन्हें कॉफी के साथ खाना बहुत पसन्द करते हैं। अलैक्जेण्ड्रा, क्रीम उठा लाओगी क्या ? खिड़की में रखी है।"

मेज पर बैठते हुए अलैक्जेण्ड्रा ने कहा, "दुनिया में किसी भी देश के लोग बोहिमियनों से ज़्यादा किस्म की रोटियाँ बनाना नहीं जानते। एक बार श्रीमती हिलर ने मुझे बताया था कि वह सात तरह की रोटियाँ बना सकती हैं पर मेरी तो एक दर्जन किस्में जानती है।"

श्रीमती ली बड़े चाव से गुझिया खाने में लग गईं और मेरी व अलैक्जेण्ड्रा आपस में बातें करने लगीं। "कल रात, मेरी, जब तुम टेलीफोन पर बात कर रही थीं तो मुझे ऐसा लगा कि तुम्हें सरदी लग गई है। क्या बात थी, क्या तुम रोकर चुकी थीं ?"

"शायद रोकर ही चुकी होऊँ," मेरी ने मुस्कराकर दोष स्वीकार करते हुए कहा। "फ्रैंक रात को बहुत देर से लौटकर आया था। जब सब चले जाते हैं तो क्या सरदी की इन रातों में तुम्हें अकेलापन महसूस नहीं होता ?"

"मेरा भी यही ख़याल था। अगर मुझे अकेलापन मालूम होता है तो मैं खुद किसीसे मिलने चली जाती हूँ। अगर तुम इस तरह दुखी होगी तो हम सबका क्या होगा ?" अलैक्जेण्ड्रा ने कहा।

"मैं तो ज्यादातर खुश ही रहती हूँ। लो देखो, श्रीमती ली को और कॉफी दो।"

जब श्रीमती ली ने कह दिया कि अब और ज़्यादा खाना-पीना उनके बूते के बाहर है तो वह उठकर ऊपर के कोठे में कढ़ाई का एक नमूना ढूँढने चलीं जो कि श्रीमती ली अपने साथ ले जाना चाहती थीं। "अलैक्जेण्ड्रा, अपना कोट पहन लो, ऊपर ठण्ड है और मुझे पता भी तो नहीं कि ये नमूने कहाँ पड़े हैं, शायद किसी पुराने सन्दूक में हों।" मेरी खुद एक दुशाला ओढ़कर आगे-आगे दौड़कर चढ़ने लगी। "मैं इन दराजों में देखती हूँ, तुम उस आलमारी में देखो। जहाँ फ्रैंक के कपड़े टँगे हैं, वहाँ बहुत सी इधर-उधर की चीजें भी हैं।"

मेरी दराजों को देखने लगी और अलैक्जेण्ड्रा अलमारी को। थोड़ी देर में अलैक्जेण्ड्रा एक पतली-सी पीली छड़ी लेकर लौटी।

"यह क्या है, मेरी ? कहीं फ्रैंक तो इसे लेकर नहीं फिरा करता था ?"

मेरी उस छड़ी को देखकर एक साथ आश्चर्यचकित हो गई। "तुम्हें यह कहाँ मिली ? मैं नहीं जानती थी कि फ्रैंक ने इसे रख छोड़ा है। बहुत बरसों बाद यह दिखाई दी है।"

"तो यह फ्रैंक की ही छड़ी है न ?"

"हाँ, पुराने देश से वह इसे अपने साथ लाया था। जब मेरी उससे मुलाकात हुई तब वह इसी को लेकर फिरा करता था।"

अलैक्जेण्ड्रा हँसकर बोली, "बड़ा अजीब लगता होगा !"

मेरी गम्भीर बन गई। "नहीं, अजीब नहीं लगता था। जब वह जवान था तो यह छड़ी उसके हाथ में अच्छी लगती थी; वह खुद छैला लगता था।" मेरी चुप होकर कुछ सोचती हुई बोली, "फ्रैंक को दूसरी तरह की बीवी चाहिए थी। जानती हो अलैक्जेण्ड्रा, मैं फ्रैंक के लिए

बिलकुल ठीक बीवी ढूँढ सकती हूँ। मुश्किल तो यह है कि शादी करने के बाद ही मालूम होता है कि किसके लिए कौनसी बीवी चाहिए।"

"मुझे तो ऐसा लगता है," अलैक्जेण्ड्रा ने कहा, "कि तुम किसी भी औरत से ज़्यादा अच्छी तरह फ्रैंक के साथ निबाह रही हो।"

"नहीं," मेरी ने सिर हिलाते हुए कहा, "मेरी आदत अपने घर में बिगड़ चुकी थी। मैं अपने तरीके से रहना चाहती हूँ और हर बात का जवाब दे देती हूँ। जब फ्रैंक गुस्सा होता है तो मैं भी उसे सुना देती हूँ और वह यह कभी नहीं भूल पाता। बार-बार यही बात उसके दिमाग में घूमती रहती है। तब मुझे और भी बुरा लगता है। फ्रैंक की बीवी को दब्बू होना चाहिए था और उसे दुनिया में फ्रैंक के अलावा और किसी का ख़याल नहीं रखना चाहिए था। जब मेरी शादी हुई थी मुझे और कोई ख़याल न था, पर तब मेरी उम्र ही क्या थी," मेरी ने आह भरते हुए कहा।

अलैक्जेण्ड्रा ने मेरी को अपने पति के बारे में इस स्पष्टता से बातें करते पहले कभी न सुना था और उसने यह ठीक न समझा कि मेरी इस तरह की बातें करे। वह कढ़ाई के नमूने ढूँढ़ने में लग रही थी और एक साथ कुछ नमूने निकालकर बोली, "क्यों मेरी, क्या यही वे नमूने हैं?"

"हाँ हाँ, यही हैं। मैं तो भूल ही गई कि मैं नमूने ढूँढ़ने आई थी। मैं फ्रैंक की दूसरी बीवी के बारे में ही सोचती रह गई। आओ, अब इसे रख देती हूँ।"

फ्रैंक की छड़ी को उसके कपड़ों के पीछे रखकर वह हँसने लगी, हालाँकि उसकी आँखों में आँसू झलक रहे थे।

जब वे लौटकर रसोई में आईं तो बरफ पड़ने लगी थी और मेरी के मेहमान घर जाने की तैयारी करने लगे। उन्हें गाड़ी तक छोड़कर वह अन्दर चली आई। उसने एमिल के वे पत्र उठा लिये जो अलैक्जेण्ड्रा अपने साथ लाई थी, पर उनको पढ़ न सकी। वह उनके विदेशी टिकटों को देखती रही और फिर बाहर गिरती हुई बरफ पर दृष्टि गड़ाए रही। धीरे-धीरे

अंधेरा हो चला और चूल्हे की आग धीमी पड़ने लगी।

मेरी खूब अच्छी तरह जानती थी कि एमिल के वे पत्र उसके लिए ही लिखे गए हैं। वे पत्र ऐसे न थे जैसे कि किसी युवक को अपनी बहन को लिखने चाहिएँ। वे बहुत सोच-समझकर लिखे हुए पत्र थे। उनमें किसी स्त्री का ध्यान आकृष्ट करने के लिए अपनी जिन्दगी को बहुत दिल-चस्प बताने की कोशिश की गई थी।

अक्सर मेरी जब अकेली होती या शाम को सीने-पिरोने में लगी रहती तो सोचा करती कि जहाँ एमिल है वह जगह कैसी होगी! जब किसी की खुशियाँ तेईस बरस की उम्र में ही मर जाती हैं तो उसे एक घुमक्कड़ युवक के साथ कल्पना में ही विचरण करना भाता है।

"अगर मैं न होती," वह सोचने लगी "तो फ्रैंक भी एमिल की तरह ही आजाद होता, लोग उसकी तारीफ करते और वह खुश रहता। फ्रैंक के लिए भी यह शादी अच्छी साबित नहीं हुई है। वह ठीक ही कहता है कि मैं सब लोगों को उसके खिलाफ बना देती हूँ। अगर मैं न होती तो शायद वह खुद-ब-खुद लोगों को खुश रखने की कोशिश करता। ऐसा मालूम होता है कि मैंने ही उसे इतना बुरा बना रखा है।"

उस सरदी के मौसम में कई मुलाकातों के बाद, अलैक्जेण्ड्रा ने महसूस किया कि मेरी से उस दोपहर की मुलाकात ही आखिरी सन्तोषजनक मुलाकात थी। उस रोज के बाद ऐसा नजर आने लगा था कि मेरी अपने-आपमें अधिकाधिक सिमटी जा रही है। अब उसमें पहले जैसी स्वच्छन्दता और स्पष्टता न दिखाई देती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी सोच-विचार में डूबी हुई है और कुछ छिपाये हुए है। मौसम की वजह से भी वे दोनों आपस में कम मिलने लगी थीं। पिछले बीस बरसों में ऐसे भयानक तूफान न आए थे, क्रिसमस से लेकर मार्च तक खेतों के बीच का रास्ता गहरी बरफ से दबा रहा। जब उन्हें आपस में मिलना होता तो गाड़ी की सड़क से जाना पड़ता जो कि खेतों के रास्ते से दोगुना रास्ता था। हर रात वे दोनों टेलीफोन पर बातें कर लेती थीं पर जनवरी के महीने में

तीन हफ्ते तक टेलीफोन के तार भी टूटे रहे और न चिट्ठीरसा डाक बाँटने ही आ सका।

: २ :

यदि अलैक्जेण्ड्रा में कुछ अधिक कल्पना-शक्ति होती तो वह जान लेती कि मेरी के मन में क्या है और एमिल क्या चाहता है। लेकिन, जैसा कि एमिल कई बार सोचा करता था, इस दिशा में अलैक्जेण्ड्रा अन्धी थी, और उसकी जिन्दगी भी ऐसी ही रही थी कि इस प्रकार की कल्पना-शक्ति उसमें जाग न पाई थी। उसने सिर्फ यही सीखा था कि किस तरह अपने हाथ के काम को अच्छी-से-अच्छी तरह किया जाय। उसका अपना निजी जीवन, अपनी आत्मोन्नति उस भूगर्भित जलधारा की तरह अवचेतन स्तर पर ही थी कि जो बीच-बीच में धरती पर आकर पुनः विलीन हो जाती थी। किन्तु भूगर्भित जलधारा का अस्तित्व तो था ही, और साथ ही उसका व्यक्तित्व इतना सबल था कि अपने काम में वह उसे पूर्णतः प्रयुक्त कर सकती थी और इसीलिए उसने अपने पड़ोसियों की अपेक्षा अधिक समृद्धि प्राप्त की थी।

उसके जीवन में कुछ ऐसे दिन थे जिन्हें वह विशेष प्रसन्नता के साथ स्मरण करती थी—वे दिन जब कि वह समतल, रिक्त धरती के निकट होती और स्वयं अपने शरीर में धरा का गर्भ अनुभव करती थी। एमिल के साथ बिताये हुए दिन भी उसे विशेषतः सुखद प्रतीत होते थे। एक दिन वे दोनों घर से जल्दी ही निकल पड़े थे और दिन चढ़ने से पहले ही काफी दूर पहुँच चुके थे। जब एमिल को भूख लगी तो सड़क से हटकर घास के एक टीले पर वे जा बैठे और कुछ पेड़ों की छाया में अपना भोजन करने लगे। नदी का जल निर्मल और छिछला था और चमचमाती रेत पर हल्के-हल्के बह रहा था। नदी के उस पार पेड़ों के एक झुरमुट के नीचे पानी गहरा था और इतना हल्का बह रहा था कि मानो बेजान है। इस छोटी-सी खाड़ी में एक जंगली बतख गोते खा-खाकर तैर रही थी। वे दोनों उस

एकान्त पक्षी को बहुत देर तक देखते रहे। अलैक्जेण्ड्रा को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने उस बतख से अधिक सुन्दर चीज कभी न देखी थी। एमिल ने भी शायद ऐसा ही महसूस किया था क्योंकि बाद में, कई बार वह कहा करता था, "याद है जीजी, वह अपनी बतख।" अलैक्जेण्ड्रा को वह दिन अपने जीवन के सबसे सुखद दिन के रूप में स्मरण होता था। वर्षों बाद भी अलैक्जेण्ड्रा के मन में उस मन्त्रमुग्ध बतख की याद बनी रही जो कि दिशा और काल से मुक्त प्रतीत होती थी।

अलैक्जेण्ड्रा की अधिकांश स्मृतियाँ इस प्रकार गैर-निजी थीं, किन्तु उसे वे अति निजी प्रतीत होती थीं। उसका दिमाग उस पोथी की तरह था जिसमें स्पष्ट अक्षरों में केवल मौसम, जानवर और खेतों के बारे में लिखा रहता है। उसने कभी प्रेम न किया था और न कभी वह भावनाओं में ही बही थी। अपनी आरम्भिक युवावस्था में भी उसे पुरुष केवल अपने साथ काम करने वाले व्यक्तियों के रूप में दिखाई देते थे।

किन्तु एक कल्पना ऐसी थी जो सारी जवानी उसके साथ बनी रही। अधिकतर रविवार की सुबह वह काफ़ी देर तक अपने बिस्तरे में पड़ी रहकर प्रातः की परिचित ध्वनियाँ सुनती रहती थी—हवा में पवनचक्की का गान और रसोई के दरवाजे के पास एमिल की सीटी की आवाज। कई बार, इस तरह आलस्य में पड़े-पड़े उसकी आँखें मुंद जातीं और तब उसे ऐसा लगता मानो किसी अति सबल व्यक्ति ने उसे सशरीर उठा लिया हो। उसे अपनी बाँहों में उठाने वाला निश्चय ही कोई पुरुष था—ऐसा शक्तिशाली पुरुष जो उसे गेहूँ की बाल की तरह आसानी के साथ उठाकर ले जाता था, पर ऐसे किसी पुरुष को वह जानती न थी। अपने कल्पना-पुरुष को उसने कभी देखा न था, पर मुंदी आँखों से उसने अनुभव किया था कि सूर्य के प्रकाश की भाँति वह पीतवर्ण है और उसके शरीर से पके खेतों जैसी गन्ध आती है। उसे ऐसा लगता है कि वह चला आ रहा है और झुककर उसने उसे उठा लिया है, और फिर अपनी बाँहों में उसे लिये खेतों को पार करता चला जा रहा है। इस कल्पना के बाद वह स्वयं से क्रुद्ध होकर उठ खड़ी होती और

झट से नहाने चल देती। अपने बाथटब में खड़े होकर अपने अति गौरवर्ण शरीर पर ठण्डे पानी की बालटियाँ भर-भरकर डालती—उस शरीर पर जिसे उस इलाके का कोई भी पुरुष उठाकर न ले जा सकता था।

जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गई यह कल्पना तभी उसे अपने वश में कर पाती जब कि वह बेहद थकी होती, न कि जब पहले की तरह ताजगी महसूस करती थी। कई बार, दिन-भर खुले मैदान में काम करने के बाद, सरदी खाकर वह घर लौटती और कई मसालों की घर की बनी गरम दवा पीकर बिस्तरे पर पड़ जाती और तब, जबकि उसका शरीर थकान से दुख रहा होता, उसे फिर ऐसा लगता कि किसी सबल पुरुष ने उसे उठाकर उसकी सारी थकान हर ली है।

: ४ :

शहतूत का सफेद पेड़

: १ :

फ्रैंच गिरजा, जिसे सेण्ट आग्नेस का गिरजा कहना उचित है, एक पहाड़ी पर स्थित था। लाल ईंटों की वह ऊँची, संकरी इमारत और उसकी मीनार व ढलुवां छत गेहूँ के खेतों के पार कोसों दूर से दिखाई देती थी, हालांकि सेण्ट आग्नेस नामक वह छोटा कस्बा पहाड़ी की ढाल में बिलकुल छिप जाता था। वह गिरजा अपने चरणों में कोसों तक फैली हुई भूमि के बीच अपनी उच्चता में अति भव्य और विजयी प्रतीत होता था, और उसे देख मध्य फ्रांस के गेहूँ के खेतों के बीच बने ऐसे ही गिरजे याद आ जाते थे।

जून के महीने में एक दिन अलैक्जेण्ड्रा अपनी गाड़ी में बैठी हुई उस बड़े गिरजे की ओर चली जा रही थी। अलैक्जेण्ड्रा के पास ही एक मैक्सिकन टोप, रेशमी रूमाल और चाँदी के बटनों वाली काली मखमली जाकिट पहने विदेशी लिबास में एमिल बैठा था। एमिल कल रात ही मैक्सिको से लौटा था और उसे देखकर उसकी बहन इतनी खुश थी कि दूसरे दिन ही उसे धार्मिक भोज में अपने साथ ले चलने के लिए कहने लगी। "सभी लड़कियाँ और कुछ लड़के अजीब-अजीब कपड़े पहनकर आएँगे। मेरी ने ओमेहा से अपने लिए बोहिमियन पोशाक मंगवाई है; वह मेले में लोगों

के हाथ देखकर भाग्य पढ़ेगी। अगर तुम भी इन मैक्सिकन कपड़ों को पहन-कर चलोगे तो सब खुश होंगे और अपने साथ अपना गिटार भी ले चलना। हरेक को ऐसे धार्मिक कामों में मदद करनी चाहिए।"

भोज शाम को छः बजे था और उसके बाद एक मेला और फिर नीलाम होने वाला था। अलैक्जेण्ड्रा सिगना और नेम्स जेनसन के जिम्मे घर छोड़-कर, जिनका विवाह अगले हफ्ते होने वाला था, जल्दी ही चल दी थी।

अलैक्जेण्ड्रा अपने भाई से पूर्णतः सन्तुष्ट नजर आती थी। उसे खुशी थी कि उसके पिता की सन्तान में एक ऐसा था जो दुनिया का मुकाबला करने में समर्थ था, जो हल से बँधा हुआ न था और जिसका व्यक्तित्व धरती से पृथक् था। वह सोचने लगी कि उसने आखिर यह सब मेहनत इसीलिए तो की थी। वह अपने जीवन से भी पूर्णतः सन्तुष्ट थी।

जब वे गिरजे के निकट पहुँचे तो पहले से ही वहाँ कई गाड़ियाँ खड़ी हुई थीं। एमिदी शैवेलियर, जोकि एक सप्ताह पूर्व ही पिता बनने का गौरव प्राप्त कर चुका था, दौड़ता आकर एमिल से लिपट गया। एमिदी अपने पिता का केवल एकमात्र पुत्र था पर वह अपने चाचा जेवियर की तरह बीस बच्चों का बाप बनने का इरादा रखता था।

सब लड़के एमिल को घेर उसकी पोशाक की तारीफ करने लगे। वे सब-के-सब एक ही साँस में एमिल के चले जाने के बाद की सारी बातें उसे बता देना चाहते थे। फ्रैंच और बोहिमियन लड़के खुशमिजाज थे और तरह-तरह की नई चीजें पसन्द करते थे जो कि स्केन्डिनेवियन लड़कों के स्वभाव के विरुद्ध बात थी। नार्वेजियन और स्वीडिश लड़के अपने-आपमें मग्न रहने वाले, घमण्डी और ईर्ष्यालु थे। वे एमिल से सावधानी के साथ और अस्पष्ट रूप में बातें करते थे क्योंकि एमिल कालेज में पढ़ चुका था और अगर एमिल उन्हें शान दिखाता तो वे उसे मजा चखाने के लिए तैयार रहते थे। फ्रैंच लड़कों को कुछ शेखी और नजाकत पसन्द थी और हर नई बात, नये कपड़े, नये खेल, नये नाच, नये गीतों से उन्हें खुशी होती थी। वे एमिल को अपनी नई क्लब दिखाने ले चले जो कि गाँव में डाकखाने के

ऊपर उन्होंने बनाई थी। वे हँसते, दौड़ते, अंग्रेजी और फ्रैंच में गप्पें मारते चले जा रहे थे।

अलैक्जेण्ड्रा गिरजे के अन्दर चली आई जहाँ कि और औरतें दावत के लिए मेज लगा रही थीं। मेरी एक कुरसी पर खड़ी होकर दुशालों का एक तम्बू बना रही थी जिसके अन्दर वह लोगों का भाग्य पढ़ने वाली थी। अलैक्जेण्ड्रा को देखते ही वह कूदकर उसकी ओर दौड़ी पर बीच में ही निराश होकर रुक गई। अलैक्जेण्ड्रा ने उसका उत्साह बढ़ाने के लिए सिर हिलाते हुऐ कहा—

"एमिल यहीं आने वाला है, मेरी : लड़के उसे कुछ दिखाने ले गए हैं। तुम उसे पहचान भी न सकोगी। अब वह पूरा मरद बन गया है। अब वह मेरा लड़का नहीं रहा। मैक्सिको की तेज गन्ध वाली सिगरेट पीता है और स्पेनिश भाषा बोलता है। तुम कितनी प्यारी लग रही हो! तुमने यह झुमके कहाँ से लिये?"

"यह मेरी दादी के झुमके हैं। उन्होंने इस पोशाक के साथ भेजे हैं और कहा है कि इन्हें मैं अब अपने पास रख सकती हूँ।"

मेरी लाल रंग का लहँगा और सफेद चोली पहने हुए थी। एक रेशमी पीली पगड़ी उसके भूरे, घुंघराले बालों पर बँधी थी और उसके कानों में मूँगे के झुमके पड़े थे। जब वह सात बरस की थी तभी उसकी दादी ने उसके कान छेद दिए थे। कीटाणुरहित उस जमाने में उसके कानों में झाडू की सींक डली रहती थी और जब घाव भर गए तो उसमें छोटी-छोटी सोने की बालियाँ डाल दी गई थीं।

एमिल अपने साथियों के साथ लौट आया पर गिरजे के बाहर ही घूमता रहा। मेरी ने उसके गिटार और साथ में राउल मार्सेल के गाने की आवाज सुनी। उसे यह अच्छा न लगा कि एमिल इतनी देर तक बाहर ही खड़ा है। उसकी आवाज सुनने पर उसे देख न पाने से मेरी विचलित हो गई और उसने तय किया कि वह उससे मिलने खुद न जायगी। जब खाने की घण्टी बजी और सब लड़के अन्दर चले आए तो वह अपनी

खीझ भूलकर भीड़ में सबसे लम्बे लड़के से मिलने दौड़ी।

उसे अपनी अकुलाहट छिपाने तक का भी खयाल न रहा। हँसती, शरमाती हुई आगे बढ़कर उसने एमिल से हाथ मिलाया और काली मखमल की जाकिट में निखरे हुए एमिल के गोरे मुख और सुन्दर कपाल को निहारने लगी। मेरी अगर किसी चीज से खुश होती तो अपनी खुशी रोक सकने की उसमें सामर्थ्य न थी, दिल खोलकर खुश होती और अगर लोग उसे देख हँसते तो वह भी उनके साथ हँसने लग जाती थी।

वह एमिल के सारे अनुभव एक बार में ही सुन लेना चाहती थी। एमिल खड़ा-खड़ा गम्भीर मुद्रा के साथ मुस्कराता रहा और सफेद पोशाक पहने फ्रैंच लड़कियाँ उसके इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगीं। अलैक्जेण्ड्रा गर्व के साथ यह दृश्य देख रही थी। मेरी जानती थी कि कई फ्रैंच लड़कियाँ चाहती थीं कि एमिल उन्हें अपने साथ खाने पर बिठाए, पर जब वह अपनी बहन को लेकर खाने बैठा तो मेरी को राहत मिली। फ्रैंक की बाँह पकड़कर मेरी उसे भी एमिल की मेज पर ले आई ताकि वह उनकी बातें सुन सके।

उस रात सेण्ट आग्नेस की सब दुकानें आठ बजे ही बन्द हो गई थीं ताकि सब व्यापारी और उनके कारिन्दे मेले में आ सकें। नीलाम उस दिन का सबसे मजेदार तमाशा था क्योंकि फ्रैंच लड़के एक-दूसरे से बढ़कर बोली बोलने में अपना दिमाग खो बैठे। जब सब चीजें नीलाम हो चुकीं तो एमिल ने अपनी कमीज की फीरोजे की बटन निकालकर हलचल मचा दी। पहले से ही सब इस बटन की तारीफ कर रहे थे और अब सब फ्रैंच लड़कियाँ उसे पाने के लिए लालायित हो उठीं; उनके प्रेमी एक-दूसरे से बढ़-बढ़कर बोली बोलने लगे। मेरी भी उसे चाहती थी और बार-बार फ्रैंक की ओर इशारा कर रही थी, पर फ्रैंक उसकी इच्छा पूरी न करने में एक कटु-आनन्द प्राप्त कर रहा था। भाँड़ की तरह कपड़े पहने हुए एक आदमी को लेकर इतना सब शोर मचाना उसे पसन्द न था। आखिर फ्रैंच महाजन की बेटी मालविना सौवेज को फीरोजे की वह बटन मिली

और मेरी अपने कन्धे उचकाकर दुशालों के बने अपने तम्बू में चली आई जहाँ कि वह लोगों का भाग्य पढ़ने वाली थी।

भाग्य बताने में मेरी चतुर थी; ऐसा परिहास काम में लाती कि सब लोग मजा लेने लगते। कंजूस ब्रूनट को उसने बताया कि उसका सब धन डूब जायगा और फिर वह एक सोलह बरस की लड़की से शादी कर टुकड़ों पर गुजर करेगा। मोटे और पेटू रूसी शूल्टे के भाग्य में प्रेम में निराश होना, दुबला बनना और आखिर निराशा में गोली मारकर मर जाना लिखा था। एमिदी के बीस बच्चे होने वाले थे जिनमें से उन्नीस लड़कियाँ थीं। एमिदी ने फ्रैंक का कन्धा थपथपाते हुए कहा कि वह क्यों नहीं अपना भाग्य दिखाता। फ्रैंक ने उसका मैत्रीपूर्ण हाथ झटकते हुए कहा, "वह मेरा भाग्य बहुत पहले बता चुकी है; बुरा ही भाग्य है।"

फ्रैंक की स्थिति विशेषतः कष्टकर थी क्योंकि उसकी ईर्ष्या का शिकार कोई खास व्यक्ति न था। यदि कोई व्यक्ति उसकी पत्नी के विरुद्ध प्रमाण पेश कर सकता तो वह उसका आभारी रहता। उसने अपने यहाँ काम करने वाले जॉन स्मिरका नामक एक लड़के को नौकरी से निकाल दिया था क्योंकि उसका खयाल था कि मेरी उसे चाहती है। लेकिन स्मिरका के चले जाने के बाद, ऐसा न नजर आया कि मेरी को उसकी याद सताती हो; वह तो दूसरे लड़के से भी उसी स्नेह के साथ पेश आने लगी। खेतों में नौकरी करने वाले ऐसे सभी लड़के मेरी के लिए कुछ भी करने को सदा तैयार रहते थे; फ्रैंक को कोई सुस्त-से-सुस्त आदमी भी ऐसा न नजर आया जो मेरी को खुश करने के लिए पूरी कोशिश न करता हो। फ्रैंक अपने दिल में जानता था कि अगर वह अपनी ईर्ष्या त्याग सकता तो मेरी उसकी ही हो जाती। लेकिन ऐसा करना उसके वश के बाहर था; कोशिश करने पर भी वह ऐसा न कर सकता था। शायद प्रेम पाने की अपेक्षा अपमानित होने में उसे अधिक सन्तोष मिलता था। यदि वह एक बार भी मेरी को पूरी तरह दुखी बना सकता तो उसका अपना दिल हलका हो जाता और फिर वह उसे अच्छी तरह प्रेम कर सकता था। लेकिन मेरी ने स्वयं को कभी

भी अपमानित न होने दिया था। आरम्भ में मेरी उसकी दासी थी, उसने फ्रैंक के प्रेम में पूरी तरह आत्मसमर्पण कर रखा था। लेकिन जैसे ही फ्रैंक ने उसे दबाना और उसके साथ अन्याय करना शुरू किया, वह फ्रैंक से दूर होने लगी—पहले क्रन्दनयुक्त आश्चर्य से और फिर शान्त, अव्यक्त घृणा से। उन दोनों के बीच का फासला धीरे-धीरे बढ़ता ही गया। अब सम्भव न था कि वह फासला तय हो जाता और वे दोनों एक साथ परस्पर निकट आ जाते। अब जीवन की ज्योति कहीं और प्रकाश देने लगी थी और फ्रैंक यही पता लगाकर मेरी को दोषी करार करना चाहता था। वह जानता था कि मेरी को जीवित रहने के लिए कोई-न-कोई सहारा जरूर चाहिए क्योंकि मेरी ऐसी स्त्री न थी जो प्रेम किए बिना रह सकती हो। वह अपने प्रति किये गए अपराध को सिद्ध करना चाहता था।

जब कि मेरी फ्रैंच लड़कों से बातें करने में लगी थी, एमिदी एमिल को कमरे के पीछे ले गया और धीरे से उसके कान में बोला कि वे सब मिलकर लड़कियों से एक मजाक करना चाहते हैं। ठीक ग्यारह बजे वह सब बिजली की बत्तियाँ बुझा देगा और पादरी द्वारा बिजली जलाने से पहले ही हर लड़के को अपनी प्रेमिका को चूमने का मौका मिल सकेगा। लेकिन मेरी के तम्बू में जलती हुई मोमबत्ती बुझना ही सबसे मुश्किल था। चूँकि एमिल की कोई प्रेमिका न थी, एमिदी का आग्रह था कि वह उस मोमबत्ती को बुझा दे। एमिल यह काम करने के लिए राजी हो गया।

ग्यारह बजने से पाँच मिनट पहले वह मेरी के तम्बू में पहुँचा और बाकी फ्रैंच लड़के अपनी-अपनी प्रेमिकाओं की ओर चल दिए। मेरी की मेज पर झुकते हुए उसने धीरे से पूछा, "क्या तुम मेरी किस्मत भी बता सकती हो?" वह पहला वाक्य था जो कि पिछले एक साल के अरसे में उसने मेरी से अकेले में कहा था। "मेरी किस्मत नहीं बदली है; पहले जैसी ही नजर आती है।"

मेरी अक्सर सोचा करती थी कि क्या एमिल के अलावा और भी कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपनी आँखों द्वारा अपने विचार इतनी अच्छी तरह

व्यक्त कर सकता है। उस रात, जब उसकी नजर एमिल से मिली तो एमिल के स्वप्न की मधुरता का अहसास किए बिना वह न रह सकी। उस अनुभूति के स्पर्श में न आने की कोशिश करने से पहले ही वह उसके हृदय में समा गई।

उसी क्षण एमिदी ने सब बत्तियाँ बुझा दीं। एक साथ खलबली और खिलखिलाहट मच गई और सब लोगों की नजर मेरी के तम्बू में जलती मन्दी मोमबत्ती की ओर थी। वह भी तुरन्त ही बुझ गई। अंधेरे में हल्की-हल्की हँसी और हल्की-हल्की चीखें सुनाई देने लगीं। मेरी उठ खड़ी हुई और अनायास एमिल की बाँहों में आ गई। उसी क्षण अधर मिलन हुआ और इतने दिनों से उनके बीच पड़ा हुआ परदा फ़ास हो गया। वह कुछ सोच-समझ भी न सकी थी कि उस लड़के ने, जो पुरुष भी था, लड़के की तरह कातर और पुरुष की तरह कोमल चुम्बन की मुहर उस पर लगा दी। चुम्बन की समाप्ति पर ही वह उसका अर्थ जान पाई। और एमिल, जो इतने दिनों से प्रथम चुम्बन की कल्पना किया करता था, उस चुम्बन की सौम्यता और स्वाभाविकता पर चकित हो गया। वह एक लम्बी आह जैसा चुम्बन था जो मानो दोनों ने एक साथ भरी हो, मानो दोनों को एक-दूसरे के हृदय में कुछ जगाने का दुःख था।

बत्तियाँ जलने पर हरेक हँसता, शोर मचाता पाया गया और हर्षोन्मत्तता के कारण सब फ्रैंच लड़कियों के गालों पर गुलाबी रंग दौड़ आया था। सिर्फ मेरी ही फीकी और गुमसुम नजर आती थी। पीली पगड़ी और सफेद गालों के बीच मूँगे के झुमके झूल रहे थे। फ्रैंक की दृष्टि अपनी पत्नी पर ही थी, पर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसे कुछ भी दिखाई न दे रहा हो। वर्षों पहले उसमें भी अपनी पत्नी के गालों का रंग उड़ा देने की क्षमता थी। पर शायद उसे यह याद न था—शायद इस पर उसने कभी गौर ही न किया था। एमिल मैक्सिकन शेखी के साथ कन्धे हिलाता बाहर आ चुका था और उसकी नजर जमीन पर गड़ी थी। मेरी अपने दुशाले उतारकर तह करने लगी; उसने फिर नजर उठाकर किसी को न देखा। सब लड़के

उस ओर चलने लगे जिधर से गिटार बजने की आवाज़ आ रही थी। मेरी ने एमिल और राउल को एक साथ गाते सुना।

अलैक्ज़ेण्ड्रा ने मेरी के पास आकर कहा, "लाओ, मैं तुम्हारी मदद कर दूँ, मेरी! तुम थकी हुई नज़र आती हो।"

उसने मेरी की बाँह पर हाथ रख उसके शरीर में दौड़ती कंपकंपी महसूस की। मेरी उस स्नेहयुक्त और शान्त हाथ के स्पर्श से अपने-आपमें सिमटने लगी। अलैक्ज़ेण्ड्रा ने उद्विग्न और आहत होकर हाथ हटा लिया।

: २ :

सिगना का विवाह-भोज सम्पन्न हो चुका था। निकाह पढ़ने वाला पादरी और सब मेहमान घर जाने की तैयारी में थे। ईवार दुलहा-दुलहिन और शादी की सौगातों को उनके नये घर में पहुँचाने के लिए गाड़ी में घोड़े जोत रहा था। जैसे ही ईवार दरवाज़े पर गाड़ी लेकर आया एमिल और मेरी गाड़ी में उपहार रखने लगे और अलैक्ज़ेण्ड्रा अन्दर जाकर सिगना को विदा करते हुए कुछ सीख देने लगी। उसे यह देख अचरज हुआ कि दुलहिन ने शादी की जूतियाँ बदलकर भारी बूट पहन रखे थे और लंहगा घुटनों तक चढ़ा रही थी। उसी वक्त नेल्स दरवाज़े पर दो गाय लेकर आ खड़ा हुआ जो कि अलैक्ज़ेण्ड्रा ने सिगना को शादी की सौगात में दी थीं।

अलैक्ज़ेण्ड्रा हँसने लगी, "पर सिगना, तुम्हें और नेल्स को तो गाड़ी में चढ़कर जाना चाहिए। कल मैं ईवार के हाथों ये गायें भिजवा दूँगी।"

सिगना हिचकिचाने लगी। उसके पति ने उसे आवाज़ दी और वह दृढ़ निश्चय के साथ अपना टोप पहनती हुई बोली, "मैं समझती हूँ मुझे अपने पति की ही बात माननी चाहिए।"

अलैक्ज़ेण्ड्रा और मेरी दरवाज़े तक सिगना को छोड़ने आईं। आगे-आगे बूढ़ा ईवार गाड़ी हाँकता चला जा रहा था और पीछे-पीछे दुलहा-दुलहिन एक-एक गाय पकड़े पैदल जा रहे थे। एमिल उन्हें देख

हसने लगा।

"मुझे गुस्सा आता है सिगना पर कि इसने इस खूसट से शादी की," मेरी बोली। "मैं चाहती थी कि वह उस अच्छे लड़के स्मिरका से शादी करे। मेरा खयाल है यह उसे चाहती भी थी।"

"हाँ, शायद चाहती थी," अलैक्जेण्ड्रा कहने लगी, "लेकिन मेरे खयाल से वह नेल्स से इतनी ज़्यादा डरी हुई थी कि और किसी से शादी न कर सकती थी। सोचने पर ऐसा लगता है कि ज़्यादातर मेरी लड़कियों ने उन्हीं लोगों से शादी की है जिनसे उन्हें सबसे ज़्यादा डर था। मेरा विश्वास है कि स्वीडिश लड़कियाँ बहुत-कुछ गऊ होती हैं। तुम जोशीले बोहिमियन हमें नहीं समझ सकते। हम लोग बहुत ज़्यादा व्यावहारिक हैं और समझते हैं कि गुस्सैल आदमी घर का अच्छा इन्तज़ाम कर सकता है।"

मेरी कन्धे उचकाकर अपनी गरदन पर पड़ी हुई बालों की एक लट में कांटा खोंसने लगी। न जाने क्यों पिछले कुछ दिनों से अलैक्जेण्ड्रा से वह कुछ चिढ़ी-सी रहती थी; हरेक से ही कुछ चिढ़ी नज़र आने लगी थी। "मैं अकेली घर जा रही हूँ, एमिल! लिहाज़ा तुम्हें अपना टोप पहनने की ज़रूरत नहीं," अपने सिर पर रूमाल बाँधते हुए मेरी ने कहा। "अच्छा, अलैक्जेण्ड्रा, अब मैं चलूँ," कहकर वह पथरीले रास्ते पर दौड़ चली।

लम्बे डग भरते हुए एमिल ने उसका पीछा किया और उसके पास पहुँचकर धीरे-धीरे चलने लगा। तारों के मन्द प्रकाश की वह उष्ण रात्रि थी।

"मेरी," एमिल ने कुछ दूर साथ चलने के बाद कहा, "क्या तुम जानती हो मैं कितना दुखी हूँ?"

मेरी ने उत्तर न दिया। सफेद रूमाल बँधा हुआ उसका सिर कुछ झुक गया।

एमिल ने मिट्टी के एक ढेले को ठोकर मारते हुए कहना शुरू किया—

"समझ में नहीं आता कि क्या दरअसल तुम्हारा दिल इतना छोटा है जितना कि दिखाई देता है ? कभी-कभी मैं सोचने लगता हूँ कि तुम्हें सभी लड़के एक जैसे नजर आते हैं—चाहे मैं होऊँ या राउल मार्सेल या जॉन स्मिरका। क्या दरअसल तुम ऐसी ही हो ?"

"शायद ऐसी ही होऊँ ? तुम क्या चाहते हो कि मैं दिन भर सिर पकड़कर रोती रहूँ ? जी भरकर रोने के बाद भी तो कुछ और करना ही पड़ता है।"

"क्या तुम्हें मेरे लिए दुःख है ?"

"नहीं, मैं तुम्हारे लिए दुखी नहीं हूँ। अगर मैं भी तुम्हारी तरह आजाद होती तो किसी बात से कभी दुखी नहीं होती। पहली गाड़ी पकड़कर यहाँ से चली जाती और फिर घूमती फिरती।"

"मैं यह कोशिश करके भी देख चुका हूँ, पर फल कुछ नहीं निकला। हर चीज तुम्हारी याद दिलाने लगी; जितनी नई और अच्छी जगह होती उतनी ही तुम्हारी याद सताती।" वे दोनों चलते-चलते पौरी तक आ चुके थे जिसकी ओर इशारा करते हुए एमिल बोला, "आओ यहाँ कुछ देर बैठें। मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ। मेरी सबसे ऊपर की सीढ़ी पर बैठ गई और एमिल पास आकर बोला, "क्या तुम मुझे एक बात बताओगी ? तुम क्यों फ्रैंक शैबेटा के साथ भागती थी ?"

मेरी पीछे हटकर मजबूती के साथ बोली, "क्योंकि मैं उससे प्रेम करती थी।"

"सचमुच ?" उसने अविश्वास के साथ पूछा।

"हाँ, सचमुच। मैं उससे बहुत ज्यादा प्रेम करती थी। मेरा खयाल है मैं ने ही उससे भाग चलने के लिए कहा था। शुरू से मेरी ही ज्यादा गलती थी।"

एमिल ने मुँह फेर लिया।

"फ्रैंक अब भी वैसा ही है जैसा कि पहले था, गलती मेरी ही है कि तब मैं उसे वैसा समझती थी कि जैसा मैं उसे चाहती थी और अब मैं

उसकी कीमत चुका रही हूँ।"

"तुम अकेली नहीं चुका रहीं।"

"ठीक है। जब एक बार गलती हो जाती है तो पता नहीं कहाँ जाकर वह रुके। लेकिन तुम तो जा सकते हो और यह सब छोड़ सकते हो।"

"सब नहीं छोड़ सकता, तुम्हें नहीं छोड़ सकता। क्या तुम मेरे साथ भाग चलोगी, मेरी?"

मेरी उठ खड़ी होकर सीढ़ी से नीचे उतर आई। "एमिल, तुम कैसी बुरी बात कह रहे हो! तुम जानते हो मैं इस तरह की लड़की नहीं। लेकिन अगर तुम मुझे इसी तरह सताते रहे तो मैं क्या करूँगी?"

"मेरी, अगर तुम मुझे एक बात बता दो तो फिर मैं तुम्हें कभी तंग न करूँगा। एक मिनट रुको और मेरी तरफ देखो। नहीं नहीं, हमें कोई नहीं देख सकता, सब सोये हुए हैं।"

एमिल उसके कंधे पकड़कर धीरे-धीरे झकझोरने लगा मानो वह नींद में चलने वाले किसी व्यक्ति को जगा रहा हो।

मेरी ने उसकी बाँह में अपना मुँह छिपा लिया। "अब मुझसे और कुछ मत पूछो। मै इसके सिवाय और कुछ नहीं जानती कि मैं बहुत दुखी हूँ। मेरा खयाल था कि तुम लौट आओगे तो सब ठीक हो जायगा। ओह, एमिल!" वह उसकी आस्तीन पकड़कर रोने लगी। अगर तुम यहाँ से नहीं गये तो मैं क्या करूँगी? मैं जा नहीं सकती और हममें से एक को जाना ही पड़ेगा। क्या तुम यह भी नहीं समझ सकते?"

एमिल उसको देखता खड़ा रहा; उसकी बाँह, जिस पर मेरी का भार था, कसने लगी। अँधेरे में मेरी की पोशाक मटियाली लग रही थी। वह एक ऐसी दुखी आत्मा प्रतीत होती थी जो शान्ति की याचना कर रही हो। एमिल ने उसके झुके सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "सच कहता हूँ, मेरी, अगर तुम मुझसे यह कह दोगी कि तुम मुझे प्रेम करती हो तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।"

"क्या तुम नहीं जानते?" उसने सिर उठाकर पूछा।

एमिल का सारा शरीर काँप उठा। मेरी को दरवाजे पर छोड़ वह सारी रात खेतों में घूमता रहा और तारे डूबने पर ही घर लौटा।

: ३ :

सिगना की शादी के हफ्ते-भर बाद, एक दिन शाम को एमिल अपने सन्दूक में किताबें बन्द कर रहा था। बीच-बीच में वह इधर-उधर से ढूँढ़-कर अपनी किताबें लाता और आलस्य के साथ उन्हें सन्दूक में डाल देता। वह सीधा ओमैहा जाने वाला था—एक स्वीडिश वकील के दफ्तर में कानूनी शिक्षा पाने और बाद में अक्तूबर से कानूनी स्कूल में पढ़ने। तय हुआ था कि अलैक्जेण्ड्रा क्रिसमस के दिनों में मिचीगन जायगी जो कि उसके लिए बहुत लम्बा सफर था और कई हफ्तों तक एमिल के साथ रहेगी। फिर भी, एमिल को न जाने क्यों ऐसा लग रहा था कि यह उसकी अन्तिम विदा है और वह अपने पुराने घर के वातावरण से सदा के लिए विदा होकर किसी नई चीज को पाने जा रहा है। भविष्य के सम्बन्ध में उसके विचार स्पष्ट न थे। जितना ज्यादा वह इस बारे में सोचता उतने ही उसके विचार अस्पष्ट होते जाते थे।

अपनी किताबें इकट्ठा करना उसे ऐसा लग रहा था मानो वह चीजों को जड़ से उखाड़ रहा हो। आखिर वह उस पुराने चबूतरे पर लेट गया जिस पर बचपन में सोया करता था और छत की पुरानी दरारें देखने लगा।

"थक गए, एमिल?" बहन ने पूछा।

"आलस्य आ रहा है," उसकी ओर देखकर धीरे से बोला। लैम्प की रोशनी में वह काफी देर तक उसकी ओर देखता रहा। मेरी शैबेटा के कहने से पहले उसने कभी सोचा तक न था कि उसकी बहन एक सुन्दर स्त्री है। वास्तव में, उसने अलैक्जेण्ड्रा को कभी स्त्री के रूप में देखा ही न था, वह तो उसके लिए केवल बहन थी। अलैक्जेण्ड्रा के सिर के ऊपर दीवार पर जॉन बर्गसां का चित्र वह गौर से देखने लगा। उसने अपने मन में सोचा,

"नहीं, अलैक्जेण्ड्रा अपने पिता जैसी नहीं है। मैं ही उनकी तरह हूँ।"

"अलैक्जेण्ड्रा," अचानक उसने पूछा, "अखरोट की लकड़ी की यह मेज़ पिताजी की थी न?"

"हाँ," अलैक्जेण्ड्रा सिलाई करती हुई बोली, "पुराने घर में सबसे पहले वह यही लाए थे। उन दिनों यह बड़ी शान की चीज़ मानी जाती थी। लेकिन वह अपने पुराने दोस्तों को हमेशा चिट्ठियाँ लिखा करते थे। उनके बहुत से दोस्त थे और वे आखिर तक उनसे खत-किताबत करते रहे। अपने पिता की खुराफात के लिए उन्हें किसी ने कभी बदनाम न किया था। मुझे अभी तक याद है कि वह किस मेहनत के साथ पेज-के-पेज लिखते रहते थे। उनकी लिखावट बहुत सुन्दर थी। तुम्हारी लिखावट भी बहुत कुछ वैसी ही है पर तुम उतनी मेहनत गवारा नहीं करते।"

"बाबा दरअसल बुरे आदमी थे न?"

"उन्होंने एक बुरी औरत से शादी की थी, और फिर—मेरा खयाल है कि वह खुद भी बुरे थे। जब हम यहाँ आये-आये ही थे पिताजी अक्सर सोचा करते थे कि वह बहुत रुपया कमाएँगे और फिर स्वीडन जाकर उन सब मल्लाहों का कर्ज़ चुका देंगे जिनका रुपया बाबा ने उड़ाया था।"

"अगर ऐसा हो सकता तो बहुत अच्छा था," एमिल ने लेटे-लेटे कहा। "अच्छा, यह बताओ पिताजी लू और ऑस्कर जैसे तो न थे? मुझे उनकी बीमारी से पहले की याद नहीं है।"

"नहीं, बिलकुल नहीं थे," अलैक्जेण्ड्रा ने सिलाई बन्द करते हुए कहा। "उन्हें रुपया बनाने के बजाय अपने-आपको बनाने का मौका मिला था। वह शान्त पर बहुत बुद्धिमान थे। अगर तुम उन्हें अब देखते तो तुम्हें उनके लिए गर्व होता।"

अलैक्जेण्ड्रा फिर सिलाई शुरू करती हुई बोली, "मुझे वे दिन याद हैं जब पिताजी जवान थे। वह स्टॉकहोम की एक संगीत-मंडली के सदस्य थे। वे सब करीब सौ आदमी होंगे और सब-के-सब लम्बे काले कोट और सफेद नेकटाई पहनते थे। क्या तुम्हें मल्लाह के लड़के का वह स्वीडिश

गीत याद है जो उन्होंने तुम्हें सिखाया था ?"

"हाँ। मैं मैक्सिकनों को वह गाकर सुनाया करता था। उन लोगों को हर नई चीज अच्छी लगती है," एमिल ने धीरे से कहा। "पिताजी को बहुत ज्यादा मुसीबतें झेलनी पड़ी थीं न ?" उसने गम्भीरतापूर्वक पूछा।

"हाँ, बहुत ज्यादा। लेकिन मरते वक्त भी उन्हें आशा थी, इस धरती में विश्वास था।"

"और तुममें भी," एमिल ने धीरे से कहा। वे दोनों चुप हो गए। उनके बीच एक ऐसी मैत्रीपूर्ण निस्तब्धता छा गई कि जिसमें, बिना बोले ही, वे एक-दूसरे को पूरी तरह समझ रहे थे।

एमिल करवट बदलकर बहुत देर तक चुपचाप लेटा रहा। अलैक्जेण्ड्रा जानती थी कि वह बहुत सी बातों के बारे में सोच रहा है। एमिल के लिए उसे कोई चिन्ता न थी। उसे एमिल और अपनी जमीन पर हमेशा से विश्वास बना रहा था। मैक्सिको से लौटकर वह अधिकाधिक अपने असली रूप में आ गया था; घर आकर और अपनी बहन से बातें करके खुश था। अलैक्जेण्ड्रा जान गई थी कि उसका घुमक्कड़पन दूर हो चुका है और अब वह जल्दी ही जमकर कुछ काम करेगा।

"अलैक्जेण्ड्रा," एमिल अचानक बोला, "क्या तुम्हें वह जंगली बतख याद है जो हमने नदी में देखी थी ?"

"मैं अक्सर उसके बारे में सोचा करती हूँ," बहन ने सिर उठाकर कहा। "मुझे ऐसा लगता है कि अब भी वह वहाँ उसी तरह है जैसा कि हमने उसे देखा था।"

"मैं समझता हूँ। अजीब बात है कि इन्सान कुछ चीजें खूब याद रखता है और कुछ बिलकुल भूल जाता है," जम्हाई लेकर एमिल उठ बैठा। अपनी बहन के गाल को चूमते हुए बोला, "अच्छा बहन, अब मैं सोने चलूँ। तुमने हम लोगों के साथ बहुत भला किया है।"

एमिल लैम्प लेकर ऊपर जा चुका था। अलैक्जेण्ड्रा उसकी कमीज सीने में फिर लग गई।

: ४ :

अगले दिन सुबह एमिदी की पत्नी एंजीलिक रसोई में पकवान बना रही थी। पास में ही एक पालना पड़ा था जो कभी एमिदी का था, और अब उसमें काली आँखों वाला उसका बेटा सो रहा था। जैसे ही एंजीलिक आटे के सने हाथों से अपने बेटे की ओर मुस्कराने के लिए मुड़ी, एमिल बर्गसां रसोई के पास आकर अपनी घोड़ी से उतरा।

"एमिदी खेत में है, एमिल," एंजीलिक ने चूल्हे की ओर जाते हुए कहा। "आज वह गेहूँ काटना शुरू करने वाला है। मालूम है, इस काम के लिए वह एक नई मशीन लाया है, क्योंकि इस साल गेहूँ बहुत छोटा हुआ है। काम करने वाले बहुत से हैं पर वह ही इस मशीन को चलाना जानता है, इसलिए उसी को सारा काम करना पड़ रहा है। उसकी तबियत भी खराब है, उसे तो लेटकर आराम करना चाहिए था।"

एमिल छोटे बच्चे के पालने पर झुककर किसी माला के दानों जैसी उसकी काली आँखों को देखते हुए बोला, "तबियत खराब है! क्यों बेटा, तुम्हारे बाप को क्या हो गया? क्या उसकी गोद में चढ़कर उसे चक्कर कटाते रहे थे।"

एंजीलिक मुँह बिगाड़कर बोली, "नहीं तो, हमारे यहाँ ऐसे बच्चे नहीं होते। इसे तो इसके बाप ने ही सारी रात जगाया है। सारी रात मैं उठ-उठकर उसके पेट पर सरसों का लेप करती रही, उसके पेट में बेहद दर्द हो रहा था। आज सुबह उसकी तबियत कुछ अच्छी थी पर मेरे खयाल से उसे खेत पर नहीं जाना चाहिए था।"

एंजीलिक के शब्दों से विशेष चिन्ता प्रकट नहीं होती थी—इसलिए नहीं कि वह अपने पति के प्रति उदासीन हो बल्कि इसलिए कि उसे अपने सौभाग्य पर विश्वास था। एमिदी जैसा सुन्दर, सम्पन्न और सशक्त युवक व पालने में नया बच्चा और खेत में नई मशीन होते हुए सब कुछ शुभ ही होना चाहिए था।

घोड़े की जीन पर से ही बाड़े का फाटक खोलकर एमिल बिजली के

इंजन के पास चला आया। एमिदी वहाँ न था, इसलिए घोड़े पर चढ़ा हुआ ही वह गेहूँ के खेत में चला आया जहाँ कि उसे दूर से ही अपने छरहरे बदन के दोस्त को हवा में फहराती सफेद कमीज दिखाई दे रही थी। एमिल के हृदय में अपने मित्र के प्रति नई प्रशंसा और साथ ही ईर्ष्या उत्पन्न हो आई क्योंकि एमिदी उन आदमियों में से था जिनके दिल और दिमाग के बीच एक ऐसा सामंजस्य होता है कि वे जो चाहते हैं करते हैं और उसे अति महत्त्वपूर्ण समझकर सफल बनाते हैं।

एमिल को देखते ही एमिदी ने उसकी ओर हाथ हिलाकर इशारा किया और अपने एक चचेरे भाई को काम सौंपकर एमिल की ओर दौड़ चला। एमिल को ऐसा लगा कि एमिदी जरूरत से ज्यादा उत्तेजित दिखाई दे रहा था। कुछ दूर साथ-साथ चलने के बाद एमिदी एक साथ पेट पकड़कर बैठने लगा।

"मेरे पेट में बेहद दर्द हो रहा है, एमिल! न जाने क्या हो गया?"

एमिल ने उसके तपते हुए गाल पर हाथ रखकर कहा, "तुम्हें फौरन घर जाकर डॉक्टर को टेलीफोन करके बुलाना चाहिए।"

लड़खड़ाता हुआ एमिदी बोला, "मैं घर कैसे जा सकता हूँ! बीमार पड़ने के लिए मेरे पास वक्त ही कहाँ है? तीन हजार डॉलर की इस नई मशीन को कौन चलाएगा? गेहूँ इतना पक चुका है कि अभी नहीं कटा तो अगले हफ्ते तक खराब हो जायगा।"

एमिदी अपना पेट पकड़कर दौड़ने लगा और मशीन चलाने वाले से उसने इशारे से कहा कि काम न रुके।

एमिल के लिए अपनी बातें करने का वह वक्त न था। वह घोड़े पर चढ़कर अपने अन्य मित्रों से विदा लेने सेण्ट आग्नेस चला आया और जब तीन बजे के करीब घर को लौटने लगा तो उसने देखा कि एमिदी के दो चचेरे भाई उसे पकड़कर खेत से बाहर ले जा रहे हैं। एमिल ने भी एमिदी को बिस्तरे पर ले जाकर लिटाने में मदद की।

: ५ :

उस दिन शाम को पाँच बजे जब फ्रैंक शैबेटा खेत से घर लौटा तो राउल के पिता मोजेज मार्सेल ने उसे एमिदी की हालत के बारे में बताया कि हैनोवर से आते ही डॉक्टर पैराडीस उसका ऑपरेशन करेगा। फ्रैंक ने इस बारे में अपने घर में कहा और फौरन ही सेण्ट आग्नेस के लिए चल दिया जहाँ कि मार्सेल के शराबखाने में जरूर ही इस बारे में सहानुभूतिपूर्ण चर्चा होने वाली थी।

फ्रैंक के जाते ही मेरी ने अलैक्जेण्ड्रा को टेलीफोन किया। अलैक्जेण्ड्रा एमिदी के बारे में एमिल से जान चुकी थी। एमिदी के पेट के ऑपरेशन होने तक एमिल वहीं था। डाक्टरों का कहना था कि ऑपरेशन बहुत देर से किया गया है, तीन दिन पहले ही हो जाना चाहिए था। एमिदी की हालत बहुत नाजुक थी। एमिल थोड़ी देर पहले ही थका-मादा घर आया था। अलैक्जेण्ड्रा ने उसे थोड़ी-सी ब्रांडी पिलाकर सुला दिया था।

मेरी ने टेलीफोन बन्द कर दिया। वह एक साथ बेहद अकेलापन महसूस करने लगी। चूँकि एमिल सो चुका था, अब मेरी के यहाँ उसके आने की कोई सम्भावना न थी, और न मेरी ही सहानुभूति के लिए अलैक्जेण्ड्रा के पास जा सकती थी। मेरी ने तय किया कि एमिल के चले जाते ही वह अलैक्जेण्ड्रा को सब कुछ बता देगी और तभी उनके बीच ईमानदारी का सम्बन्ध रह सकेगा।

पर उस शाम उसके लिए घर में अकेला रहना दूभर हो गया। वह टहलती हुई अपने बगीचे में चली आई जहाँ कि सर्वत्र जंगली कपास की गंध आ रही थी। जंगली गुलाबों की ताजी नमकीन खुशबू कपास की तेज गंध के सामने फीकी पड़ चुकी थी। पश्चिम के आकाश में अभी तक लालिमा थी पर संध्या का तारा निकल आया था। मेरी गेहूँ का खेत पार कर अलैक्जेण्ड्रा के घर के रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। उसे इस बात का बुरा लग रहा था कि एमिल ने खुद आकर उसे एमिदी के बारे क्यों नहीं बताया। एमिल का न आना उसे अत्यन्त अस्वाभाविक प्रतीत

हो रहा था। यदि वह खुद मुसीबत में होती तो निश्चय ही सबसे ज्यादा एमिल से मिलने के लिए आतुर होती। शायद एमिल यह जतलाना चाहता था कि मेरी के लिए अब वह गये बराबर ही है।

मेरी धीरे-धीरे चलती हुई पौरी तक आ पहुँची और वहीं बैठ गई। उन लोगों को प्रेम करना कितना दुष्कर है जिनके जीवन में भाग नहीं लिया जा सकता!

हाँ, एमिल उसके लिए गये बराबर ही था। अब वे दोनों आपस में कभी नहीं मिल सकते। अब उन दोनों के बीच कहने को कुछ बाकी न बचा था। अब तो एक-दूसरे को अपना दिल देने के अलावा और कुछ न रह गया था। एमिल के चले जाने के बाद उसका जीवन कैसा होगा? कई मानों में उसकी जिन्दगी आसान हो जायगी; कम-से-कम वह निरन्तर भय में तो न रहेगी। अगर कहीं एमिल जाकर काम करना शुरू कर देता है तो वह समझेगी कि उसकी वजह से एमिल की जिन्दगी तो बरबाद नहीं हो रही। एमिल की याद लिये हुए वह जो चाहे अपनी जिन्दगी में कर सकती है—किसी का कुछ न बिगड़ेगा, सिर्फ उसका अपना ही तो नुकसान होगा और उसकी क्या परवाह! जब एक लड़की किसी एक आदमी से प्रेम करती है और फिर उस आदमी के जीवित रहते ही दूसरे से प्रेम करने लगती है तो उस लड़की के बारे में क्या सोचना चाहिए हरेक जानता है। उसे अपनी जिन्दगी की कतई परवाह नहीं थी पर वह अपने साथ दूसरों की जिन्दगी नहीं बिगाड़ना चाहती थी। एमिल के चले जाने के बाद वह हर चीज को छोड़कर एक आदर्श प्रेम का जीवन व्यतीत कर सकती है।

मेरी अनमने भाव से उठ खड़ी हुई। हो सकता था, उसने सोचा, शायद एमिल ही चला आए। एमिल सो रहा था, यह सोचकर उसे खुश होना चाहिए था। वह रास्ता छोड़कर चरागाह में चली आई। आकाश में प्रायः पूरा चाँद निकला हुआ था। खेतों में कहीं-कहीं उल्लू बोल रहे थे। वह सोच भी न पाई थी, उसे कहाँ जाना है कि सामने ही वह तालाब दिखाई

दिया जिसमें एमिल ने एक बार बतखें मारी थीं। उसने झुककर तालाब को गौर से देखा। हाँ, वह यह भी कर सकती है, पर जिन्दगी से छुटकारा पाने का गन्दा तरीका था। लेकिन वह मरना तो नहीं चाहती थी। वह जीना चाहती थी और जीकर निरन्तर स्वप्न देखती रहना चाहती थी—जब तक कि प्रेम की मधुरता उसके हृदय में विद्यमान थी, जब तक कि उसका हृदय प्रेम की इस व्यथा को सहन कर सकता था।

अगले दिन सुबह जब एमिल नीचे उतरकर आया तो उसके दोनों कन्धों पर हाथ रखती हुई अलैक्जेण्ड्रा बोली, "मैं दिन निकलते ही तुम्हारे कमरे में गई थी पर तुम गहरी नींद में सो रहे थे इसलिए मैंने तुम्हें नहीं जगाया। तुम कर भी क्या सकते थे, इसलिए मैंने तुम्हें सोने दिया। सेण्ट आग्नेस से टेलीफोन आया था कि आज सुबह तीन बजे एमिदी मर गया।"

: ६ :

धर्म का विश्वास है कि जिन्दगी जीने के लिए है। शनिवार को जब एक ओर सेण्ट आग्नेस का आधा गाँव एमिदी के लिए शोक मना रहा था, दूसरी ओर सब लोग धर्म-दीक्षा के लिए तैयार हो रहे थे जो कि कल सौ लड़के-लड़कियों को दी जाने वाली थी। पादरी ड्यूचैस्न ने जीवन और मरण के बीच अपना समय विभक्त कर रखा था। शनिवार को सारे दिन गिरजे में हलचल मची रही, हालाँकि एमिदी की मृत्यु ने उनके उल्लास को कुछ कम कर रखा था। औरतें वेदी सजा रही थीं, लड़के-लड़कियाँ फूल लाकर इकट्ठे कर रहे थे।

रविवार की सुबह बड़े पादरी हैनोवर से सेण्ट आग्नेस गाड़ी में आने वाले थे और तय हुआ था कि बड़े पादरी का स्वागत करने के लिए घोड़ों पर बैठकर जाने वाले चालीस लड़कों में एमिल एमिदी के एक चचेरे भाई की स्थानपूर्ति करेगा। सुबह छः बजे ही सब लड़के गिरजे में जा इकट्ठे हुए। अपने-अपने घोड़ों को थामे हुए वे दबी जबान में अपने मृत मित्र की चर्चा कर रहे थे। वे बार-बार यही कह रहे थे कि लाल ईंटों के बने

उस गिरजे ने एमिदी के जीवन में बहुत बड़ा पार्ट अदा किया था; वह उसके जीवन के गम्भीरतम और सुखदतम क्षणों का घटनास्थल था; उस गिरजे की छाया में ही वह खेला-कूदा, हँसा-रोया और बड़ा हुआ था। सिर्फ तीन हफ्ते पहले ही वह अपने पुत्र का नामकरण कराने यहाँ आया था।

घोड़े पर चढ़ने का हुक्म होते ही सब लड़के सवार होकर धीमी चाल से गाँव के बाहर हो गए, पर सुबह की धूप में गेहूँ के खेतों में आते ही उनकी जवानी बोल उठी और उनके घोड़े दौड़ने लगे। दुलकी भरते हुए उनके घोड़ों की टाप सुनकर औरतें-बच्चे सुबह का नाश्ता छोड़ उन्हें देखने अपने-अपने घरों से बाहर निकल आए। सेण्ट आग्नेस से पाँच मील दूर उन्हें बड़े पादरी अपनी खुली गाड़ी में मिले। एक साथ सब लड़कों ने टोप उतारकर उनका अभिवादन किया और पादरी ने हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। अंगरक्षकों की भाँति सब घुड़सवार गाड़ी के दाएँ-बाएँ हो गए और जब कभी कोई घोड़ा काबू में न आकर इधर-उधर दौड़ पड़ता तो बड़े पादरी हँसकर अपने पास बैठे हुए दूसरे पादरियों से कहते, "कितने अच्छे लड़के हैं! आज भी धर्म की अपनी सेना है।"

प्रार्थना ग्यारह बजे थी। गिरजे में सब लोग आकर इकट्ठे हो रहे थे और एमिल खड़ा हुआ गाड़ियों और बग्घियों से उतरते लोगों को देख रहा था। घण्टा बजने लगा और उसने फ्रैंक शैवेटा को अपने घोड़े से उतरते देखा। तो, मेरी नहीं आ रही थी। एमिल भी गिरजे के अन्दर चला आया। गिरजे में सिर्फ एमिदी की ही जगह खाली थी और वह वहीं बैठ गया। एमिदी के कुछ चचेरे भाई काली पोशाक पहने चुपचाप वहाँ रो रहे थे। शायद ही कोई ऐसा परिवार हो जिसका कोई-न-कोई सदस्य वहाँ मौजूद न हो। दीक्षा प्राप्त करने वाले लड़के-लड़कियाँ एक समूह में अन्दर प्रवेश कर सबसे आगे की बैन्चों पर जाकर बैठ गए; उनके गम्भीर मुख अति सुन्दर लग रहे थे। प्रार्थना आरम्भ होने से पूर्व ही सारे वातावरण में एक गम्भीरता छा गई थी।

एमिल मेरी के बारे में सोच-सोचकर अपने मन को सता रहा था। क्या वह बीमार पड़ गई? क्या अपने पति से लड़ बैठी? क्या वह इतनी दुखी है कि यहाँ आना भी उसे बुरा लगा? या, क्या वह यह सोच रही थी कि एमिल स्वयं उससे मिलने आएगा? क्या वह वास्तव में उसकी प्रतीक्षा कर रही है? दुःख और उत्तेजना के बीच प्रार्थना के संगीत ने उसके मन और शरीर को अपने वश में कर लिया। राउल का गीत सुनते-सुनते उसे ऐसा लगा कि मानो भावनाओं के संघर्ष से वह मुक्त हो चुका है। उसने अनुभव किया कि उसका हृदय एकाएक प्रकाशान्वित हो उठा है, कि सत् असत् से अधिक प्रबल है और सब मनुष्यों को प्राप्य है। उसे एक ऐसे चरम हर्ष की अनुभूति हो रही थी जिसमें वह दोषरहित, पापरहित होकर निरन्तर प्रेम कर सकता था।

प्रार्थना के बाद दीक्षा आरम्भ हुई और दीक्षा की समाप्ति पर सब लोग नये दीक्षितों को घेरकर खड़े हो गए। लड़के-लड़कियों को चूम-चूमकर चाचियाँ-दादियाँ खुशी में आँसू बहाने लगीं।

तीन बजे के बाद एमिल वहाँ और ज्यादा रुकना बरदाश्त न कर सका। चुपचाप अस्तबल में आकर उसने अपना घोड़ा बाहर निकाल लिया। वह उस उत्तेजना की पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था जहाँ हर चीज छोटी और आसान, मृत्यु निकट और आत्मा पक्षी की भाँति ऊँची उड़ती नजर आती है। कब्रस्तान के पास पहुँचकर उसने वह नई कब्र देखी जिसमें एमिदी दफनाया जाने वाला था, पर उसे दुख न हुआ। वह भी सुन्दर थी—सब कुछ भूल जाने का कैसा सरल रास्ता था! जिस हृदय में अत्यधिक जीवन होता है वही उस भूरी धरती की ओर आकृष्ट होता है, क्योंकि परमानन्द को मृत्यु का भय नहीं होता। केवल बूढ़े, दरिद्र और पंगु व्यक्तियों को ही कब्र से डर होता है; उसके प्रेमी तो साहसी युवक ही होते हैं। कब्रस्तान पार करने के बाद ही एमिल को भान हुआ कि वह किधर चला जा रहा है। विदा लेने का वही समय था। शायद वही ऐसा आखिरी वक्त था जब कि वह अकेली मिल सकती थी और आज वह उससे विदा लेते समय लेशमात्र भी

कटुता पीछे न छोड़ेगा।

दोपहर की धूप में सर्वत्र पके गेहूँ की बास भरी हुई थी जैसे कि चूल्हे में रोटी पक रही हो। सारे वातावरण में स्वप्न-जैसी अद्भुतता थी। उसे क्षण-प्रतिक्षण घटते हुए फासले के अलावा और कुछ नहीं सूझ रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसका घोड़ा रेलगाड़ी की तरह उसे उड़ाए लिये चला जा रहा था। वह खुद कमान से छूटे हुए तीर के मानिन्द था।

जब एमिल मेरी के दरवाजे पर पहुँचकर घोड़े से उतरा, उसका घोड़ा पसीने से लथपथ था। घोड़े को अस्तबल में बाँधकर वह मकान के अन्दर पहुँचा। वहाँ कोई न था। लेकिन मेरी की याद दिलाने वाली कोई भी चीज—बगीचा या शहतूत का पेड़—ही उसका मन बहलाने के लिए काफी था। बगीचे में सूर्य की किरणों ने पेड़ों में से छनकर एक जाल-सा बना रखा था। एमिल चुपचाप गेहूँ के खेत की ओर बढ़ने लगा। कोने में पहुँचकर वह एक साथ अपने-आप ही रुक गया। मेरी शहतूत के सफेद पेड़ के नीचे घास में लेटी थी। उसकी आँखें मुंदी थीं और उसकी बाँहें शिथिल पड़ी थीं। उसने अपने आदर्श प्रेम का एक दिन व्यतीत किया था और उसीने उसकी यह हालत बनाई थी। उसका वक्ष उसकी सांस के साथ इस प्रकार उठता-गिरता था मानों वह सोई हुई हो। एमिल ने पास ही लेटकर उसे अपनी बाँहों में ले लिया। उसके गालों पर लाली आ गई और उसकी शरबती आँखें धीरे से खुल गईं। "मैं यही स्वप्न देख रही थी," उसने एमिल की बाँह में अपना मुँह छिपाते हुए कहा, "मेरा स्वप्न मत छीनो!"

: ७ :

जब फ्रैंक शैबेटा उस रात घर लौटा तो उसने अस्तबल में एमिल का घोड़ा खड़ा पाया। इस दुःसाहस को देख वह चकित हो गया। सब लोगों की तरह फ्रैंक के लिए भी वह उत्तेजनापूर्ण दिन था। दोपहर से वह बेहद शराब पी रहा था और उसका मिजाज बिगड़ा हुआ था। अपने

घोड़े को अस्तबल में बाँधते हुए उसमें कटुता आ गई और जब उसने अपने घर को अँधेरे में पाया तो उस पर जले पर नमक का असर हुआ। दरवाजे तक धीरे से आकर उसने कान लगाकर सुना और जब उसे कुछ न सुनाई दिया तो वह अन्दर जाकर सब कमरों को देखने लगा। उसने ऊपर-नीचे सब जगहें देख डालीं पर नतीजा कुछ न निकला। वह एक सीढ़ी पर बैठ अपने मन को शान्त करने लगा। उस अस्वाभाविक शान्ति में उसे अपनी भारी साँसों के अलावा और कोई जरा-सी भी आवाज सुनाई न दे रही थी। अचानक खेत की तरफ से उसे एक उल्लू की आवाज सुनाई दी। फौरन ही उसके दिमाग में एक खयाल आया और कटुता व अपमान की उसकी भावना उद्दीप्त हो उठी। अपने सोने के कमरे में जाकर उसने अपनी बन्दूक निकाल ली।

बन्दूक उठाकर घर से निकलते समय बन्दूक काम में लाने का उसका कतई खयाल न था। वास्तव में, उसके दुःख का कोई प्रत्यक्ष कारण न था। लेकिन अपने-आपको निराश और हताश समझने से उसे एक सन्तोष मिलता था। वह अपने-आपको सदा निरुत्साहित समझने का आदी हो चुका था। उसका दुखद स्वभाव एक पिंजड़े की तरह था जिसमें से वह कभी बाहर नहीं निकल पाता था और उसका खयाल था कि दूसरे लोगों ने, खास तौर पर उसकी बीवी ने ही, उसे उस पिंजड़े में बंद किया था। फ्रैंक ने यह कभी न सोचा था कि वह स्वयं अपने दुःख का जन्मदाता है।

फ्रैंक बगीचे के दरवाजे तक आकर रुक गया और कुछ सोचने लगा। कुछ पीछे हटकर उसने खलिहान और चरी की कोठरी में झाँककर देखा और फिर सड़क पर आकर बगीचे की झाड़ी के साथ-साथ चलने लगा। झाड़ी फ्रैंक से दोगुनी लम्बी और इतनी घनी थी कि उसकी पत्तियों के बीच आँख लगाकर ही वह कुछ देख सकता था।

गेहूँ के खेत के कोने पर, जहाँ बगीचे की झाड़ी खतम होती और बर्गसाँ परिवार का चरागाह शुरू होता था, फ्रैंक रुक गया। उस निस्तब्ध रात्रि में उसने एक हल्की, अस्पष्ट आवाज सुनी—उस झरने

से गिरने वाले जल की जैसी आवाज, जहाँ जल से टकराने वाले पत्थर न हों। फ्रैंक कान खड़े कर उस आवाज को सुनने लगा, पर वह बन्द हो गई। बन्दूक के हत्थे को जमीन पर टेकते हुए अपनी उँगलियों से झाड़ी को चीरकर उसने शहतूत के पेड़ के नीचे दो काली छायाएँ देखी। उसने चाहा कि वे उसको आँखें देखें, उसकी साँस सुनें, पर वे दोनों बेखबर थे। हो सकता था, औरत की अँधेरी छाया, बर्गास के खेत में काम करने वाली किसी लड़की की हो।''''''''फिर हल्की-सी आवाज आई। इस बार उसने ज़्यादा साफ सुना। उसका खून उसके दिमाग से ज़्यादा तेज़ था। आग में गिरने के लिए जिस तरह आदमी हाथ-पैर पटकने लग जाता है, उसी तरह बिना सोचे-समझे उसने बन्दूक उठा ली और बिना रुके तीन गोलियाँ दाग दीं। या तो उसने अपनी आँखें मूंद ली या उसे चक्कर आ गया था कि बन्दूक चलाते समय वह कुछ न देख पाया था। उसे इतना भर खयाल था कि दूसरी गोली चलते वक्त उसने एक हल्की-सी चीख सुनी थी, पर पूरे यकीन के साथ वह कुछ न कह सकता था। उसने दुबारा झाड़ी में से झांककर देखा। दोनों पास-पास निश्चल पड़े हुए थे—लेकिन नहीं, पेड़ की डालों के बीच में से आती हुई चाँदनी में उसने आहत पुरुष के हाथ को हिलते और घास नोंचते देखा।

अचानक आहत स्त्री भी हिली और रह-रहकर चीखने लगी। वह जीवित थी, घिसट-घिसटकर झाड़ी की ओर बढ़ रही थी। फ्रैंक अपनी बन्दूक वहीं छोड़ काँपता-हाँफता दौड़ पड़ा। वह अपनी हमेशा की आदत के मुताबिक सीधा घर की ओर ही दौड़ता हुआ गया, जहाँ कि उत्तेजित हो जाने पर उसे सदा सान्त्वना मिला करती थी। वह जानता था कि उसने हत्या की है और एक स्त्री बगीचे में पड़ी कराह रही है, पर उसे यह न मालूम था कि वह उसकी अपनी ही स्त्री थी। वह सोच न पाया कि उसे कहाँ जाना चाहिए और क्या करना चाहिए?

फ्रैंक स्वयं को नाटकीय परिस्थितियों में देखना पसन्द करता था पर अब उसकी हालत उस खरगोश की तरह थी जिसे चारों ओर कुत्तों ने घेर

लिया हो। वह खरगोश की तरह ही चाँदनी रात में इधर-उधर दौड़ता रहा और एक साथ तय न कर पाया कि उसे क्या करना चाहिए। आखिर उसने अस्तबल में जाकर घोड़ा निकालना ही तय किया। वह एमिल के घोड़े को पकड़कर बाहर ले आया क्योंकि अपने घोड़े पर जीन कसना उसके वश के बाहर था। दो-तीन कोशिशों के बाद वह घोड़े पर चढ़ सका और फिर हैनोवर के लिए चल दिया। अगर वह एक बजे वाली गाड़ी पकड़ सकता तो ओमेहा तक पहुँचने के लिए उसके पास काफी पैसा था।

जब वह यह सब सोच रहा था, उसके मस्तिष्क के किसी कम सजग भाग में आहत स्त्री के कराहने की आवाज सुनाई दे रही थी। वह भय के कारण ही उस आहत स्त्री के पास न जा पाया था; उसे भय था कि वह अब भी जीवित होगी और उसी तरह कराह रही होगी। घायल, खून से लथपथ औरत—उसने एक औरत की हत्या की थी, इसलिए वह डरा हुआ था। उसने एक औरत की हत्या कैसे कर डाली, यह वह खुद नहीं समझ पा रहा था। आखिर वही इतनी लापरवाह क्यों थी! वह जानती थी कि उसका पति गुस्से में पागल हो जाता है। कई बार उसी ने, जब वह किसी दूसरे पर गुस्सा था, हाथ से बन्दूक छीन ली थी। एक बार इसी तरह बन्दूक से जूझते वक्त गोली चल पड़ी थी। मेरी को कभी किसी बात का डर न लगता था। लेकिन जब वह उसे इतनी अच्छी तरह जानती थी तो क्यों न पहले से ही सावधान रही? क्या सारी गरमियाँ एमिल से प्रेम करने का उसे मौका न मिला था? शायद वह स्मिरका के साथ भी बगीचे में उसी जगह प्रेम करती होगी। चाहे वह सारे कस्बे के लोगों से प्रेम करती पर अगर यह आफत न आने देती तो उसे बुरा न लगता।

वह जानता था कि उसने मेरी के प्रति अन्याय किया है। दोष उसका अपना ही था। तीन साल से वह उसे दबाने की कोशिश करता आया था। वह चाहता था कि उसकी बीवी को इस बात का बुरा लगे कि वह जीवन का सबसे अच्छा समय बेकार और बेहूदा लोगों के बीच बिता रहा है; पर वह ऐसी थी कि जिसे कोई आदमी बेकार नजर न आता था। एक साथ वह

चिल्ला उठा, "मेरी, मेरी !"

हैनोवर के आधे रास्ते पहुँचकर घोड़े की तेज चाल से फ्रैंक का माथा चकराने लगा। कुछ देर रुककर वह फिर चलने लगा, पर अब वह अपनी शारीरिक थकान और बीवी से राहत पाने की इच्छा के अलावा और कुछ न सोच पा रहा था। वह अपने घर में अपने बिस्तरे पर ही सोना चाहता था। अगर उस समय उसकी बीवी घर पर होती तो वह चुपचाप लौटकर आत्म-समर्पण कर देता।

: ८ :

बूढ़े ईवार ने सुबह चार बजे एमिल की घोड़ी को अस्तबल के बाहर पसीने से लथपथ, बुरी हालत में पाया। ईवार घबरा उठा। घोड़ी को अस्तबल में बाँध और उसके सामने कुछ दाना डालकर वह सबसे नजदीक पड़ोसी के खेत की ओर दौड़ चला।

जब ईवार खेत पार कर रहा था, सूर्य की लम्बी किरणें बगीचे के पेड़ों की डालों को चीरती हुईं ओस में भीगी दोनों लाशों पर पड़ रही थीं। रात की कहानी बगीचे की घास पर स्पष्टतः लिखी थी। एमिल का खात्मा आसानी से हो गया था। उसके सीने में गोली लगी थी और वह पीठ के बल लुढ़ककर तुरन्त मर गया था। उसका मुँह आकाश की ओर था और उसकी भवों पर रोष के चिह्न दिखाई देते थे मानो वह समझ गया था कि उसके साथ कुछ हो गया था। किन्तु मेरी शैबेटा का अन्त इतनी आसानी से न हो पाया था। एक गोली उसके दाहिने फेफड़े में और दूसरी उसकी गरदन में लगी थी। वह घिसटती हुई झाड़ी की तरफ बढ़ी थी और उसके पीछे खून की एक लम्बी धार थी। वहीं पड़े-पड़े उसका सारा खून बहने लगा था। वहाँ से एक दूसरी खून की धार बनी हुई थी, पहली से ज्यादा गहरी; मालूम पड़ता था मेरी दोबारा घिसटकर एमिल के पास तक आई थी। एमिल के पास पहुँचकर उसकी शक्ति समाप्त हो गई थी। उसका सिर अपने प्रेमी के सीने पर था और दोनों

हाथों से उसने उसका हाथ पकड़ रखा था। उसके मुख पर सन्तोष का भाव था। उसके होंठ अधखुले थे, आँखें मुँदी थीं, मानो वह दिवास्वप्न देख रही हो या चुपचाप सो रही हो। जिस हाथ को उसने अपने दोनों हाथों में थाम रखा था उस पर चुम्बन के चिह्न मौजूद थे।

जब ईवार झाड़ी के पास पहुँचा तो उसे फ्रैंक शैंत्रेटा की बन्दूक मिली। झाड़ी में से झाँककर उसने देखा और घुटनों के बल बैठकर दुःख से चिल्ला उठा, "हे भगवान्! हे भगवान्!"

उस दिन अलैक्जेण्ड्रा भी सुबह जल्दी ही उठी थी क्योंकि उसे एमिल की चिन्ता थी। वह ऊपर एमिल के कमरे में थी कि उसने खिड़की से ईवार को लड़खड़ाते आते देखा। ईवार कभी शराब न पीता था और उसकी यह हालत देख अलैक्जेण्ड्रा ने सोचा कि उसे दौरा आ गया है। वह जल्दी से नीचे उतरकर उससे मिलने चली ताकि घर के दूसरे लोग ईवार की इस दुर्बलता को न देख पाएँ। बूढ़े ने जमीन पर गिरकर उसका हाथ पकड़ लिया और सिर झुकाकर रोता हुआ बोला, "मालकिन! मालकिन! गजब हो गया! पाप और मौत...हे भगवान्!"

: ५ :

अलैक्ज़ेण्ड्रा

: १ :

ईवार लालटेन की रोशनी में बैठा घोड़ों के साज की मरम्मत कर रहा था और साथ ही बाइबल के शब्दों का उच्चारण भी। अक्तूबर मास के उस दिन सिर्फ पाँच ही बजे थे, पर दोपहर से ही एक तूफ़ान उठा था और अब काले बादलों और ठंडी हवा के बीच बारिश होने लगी थी। अचानक एक औरत दौड़ती हुई अन्दर चली आई मानो बारिश और तूफ़ान के साथ ही उड़कर आई हो। वह सिगना थी—मर्दाना ओवरकोट और ऊँचे-ऊँचे जूते पहने हुए। उस मुसीबत के वक्त सिगना अपनी मालकिन के साथ रहने चली आई थी क्योंकि वही एक ऐसी नौकरानी थी जिससे अलैक्ज़ेण्ड्रा अपना निजी काम करवा लेती थी। फ्रैंक शैबेटा के बाग में उस भयंकर दुर्घटना की आग की तरह खबर फैले तीन महीने हो चुके थे। सिगना और नेलस अलैक्ज़ेण्ड्रा के साथ सर्दी के अन्त तक रहने आए थे।

"ईवार," सिगना ने बारिश से भीगा अपना मुँह पोंछते हुए पूछा, "वह कहाँ है?"

"कौन, मालकिन?" बूढ़े ने अपने हाथ का चाकू नीचे रखते हुए कहा।

"हाँ। तीन बजे के करीब गई थीं। मैंने उन्हें एक पतली पोशाक और धूप की टोपी पहने हुए देखा था। अब यह तूफान आ गया है। मेरा खयाल था वह श्रीमती हिलर के यहाँ गई होंगी पर मैंने टेलीफोन कर पता लगा लिया है कि वह वहाँ नहीं है।"

ईवार ने टोपी पहन हाथ में लालटेन उठाते हुए कहा, "हाँ हाँ, देख लेता हूँ। गाड़ी जोतकर जाता हूँ।"

"तुम्हारे खयाल से वह कहाँ होंगी?" सिगना ने पीछे-पीछे चलते हुए पूछा।

"मैं क्या जानूँ?" बूढ़े ने खूँटी से घोड़े की जीन उतारते हुए कहा।

"लेकिन तुम्हारे खयाल से वह कब्रस्तान गई होंगी न?" सिगना बोलती रही, "मेरा भी यही खयाल है। मैंने कभी न सोचा था कि अलैक्जेण्ड्रा अपना यह हाल बना लेगी। अब मुझे उसे बताना पड़ता है कि कब खाना है और कब सोना है।"

"शान्त हो, बहन, शान्त हो," ईवार बोला। "जब शरीर की आँखें बन्द हो जाती हैं तो आत्मा की आँखें खुल जाती हैं। उसे मृत लोगों से सन्देश मिलेगा और साथ ही शान्ति।"

कब्रस्तान घर से तीन मील दूर था और वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते तूफान धीमा पड़ चुका था और बारिश भी मन्दी हो रही थी। आकाश और पृथ्वी धूमिल रंग के दिखाई दे रहे थे मानो दो लहरों के मिलन से वे बने हों। जब ईवार ने कब्रस्तान के दरवाजे के सामने रुककर अपनी लालटेन हिलाई तो जॉन बर्गसां की सफेद कब्र के पास से एक सफेद आकृति उठती दिखाई दी।

बूढ़ा ईवार गाड़ी से उतरकर 'मालकिन, मालकिन!' पुकारता दरवाजे की ओर बढ़ा।

अलैक्जेण्ड्रा ने जल्दी से आगे बढ़कर उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है, ईवार! मुझे दुःख है, तुम लोगों को

इतनी परेशानी हुई। मैंने देखा ही न था कि तूफान आ रहा है और जब देखा तो उसमें से होकर लौट नहीं जा सकता था। अच्छा हुआ तुम आ गए। मैं बहुत थकी हुई हूँ और समझ नहीं रही थी कि घर कैसे लौटूँगी।"

ईवार बड़बड़ाते हुए उसे गाड़ी तक ले आया और उन सूखे कम्बलों से ढकने लगा जिन पर वह अभी तक बैठा था।

अलैक्जेण्ड्रा इस सावधानी पर मुस्कराने लगी। इन कम्बलों से कोई खास फायदा नहीं होगा, ईवार! इनसे तो सरदी अन्दर ही बन्द हो जायगी। अब मुझे सरदी नहीं लग रही है, पर अच्छा हुआ तुम आ गए।"

ईवार ने घोड़ी में एड़ लगाई और घोड़ी दुलकी चाल से चल पड़ी। उसके पैर कीचड़ उछालते जा रहे थे।

"ईवार, मैं समझती हूँ कि इस तरह सरदी लगने से मुझे फायदा ही हुआ है। मेरा खयाल है कि अब मैं ज़्यादा दुखी न रहा करूँगी। जब कोई मरे हुए लोगों के इतने नज़दीक आ जाता है तो वे जिन्दा लोगों से भी ज्यादा जिन्दा नजर आते हैं, दुनियावी खयालात दूर हो जाते हैं। एमिल के मरने के बाद से अब तक—बारिश होने तक—मैं दुखी थी। पर अब मैं उसके साथ इतनी देर तक बारिश में रही हूँ और अब मुझे इसका डर नहीं है। एक बार सरदी लग जाने के बाद बरसात अच्छी लगती है, बचपन की याद आ जाती है, ऐसा लगता है कि मानों फिर अँधेरे में चले गए हों, पैदा होने से पहले के अँधेरे में। तुम कुछ देख नहीं पाते, पर फिर भी न दिखाई देने वाली चीजें तुम्हारे सामने आती हैं और, न जाने कैसे तुम उन्हें जान जाते हो और उनसे डरते नहीं। शायद मरे हुए लोगों के साथ भी ऐसा ही है। अगर वे कुछ महसूस करते हैं तो वे ही पुरानी चीजें—पैदा होने से पहले की चीजें। और उन्हें ऐसा आराम मिलता है जैसा कि छोटे बच्चों को अपने बिछौने में।"

"मालकिन," ईवार ने कुछ झिड़कते हुए कहा, "ये बुरे खयालात

हैं। मरे हुए लोग स्वर्ग में हैं।"

और फिर उसने अपना सिर झुका लिया, क्योंकि उसे विश्वास न था कि एमिल स्वर्ग में है।

उनके घर पहुँचते ही सिगना ने बैठक में अँगीठी जला दी और अलैक्जेण्ड्रा के कपड़े उतारकर गरम पानी से उसके पैर धोए। ईवार अद-रक की चाय बनाने रसोई में चला गया। अलैक्जेण्ड्रा बिस्तरे में लेट गई और ईवार उसे खुद चाय पिलाने आया। सिगना ने उसके कमरे के बाहर ही चबूतरे पर सोने की इजाजत चाही। अलैक्जेण्ड्रा चुपचाप सारी तीमारदारी बरदाश्त करती रही, पर बत्ती बुझाकर उन लोगों के चले जाने के बाद ही उसे राहत मिली। अँधेरे में पड़े-पड़े उसने पहली बार महसूस किया कि वह जिन्दगी से ऊब चुकी है। जीवन की सारी शारीरिक क्रियाएँ कठिन और दुष्कर प्रतीत होने लगीं। वह अपने उस शरीर से मुक्ति चाहने लगी जो कि उस समय इतना भारी और थका हुआ मालूम दे रहा था। सोचना भी एक थकान ही थी और वह उससे भी मुक्ति चाहती थी।

लेटे-लेटे उसकी आँखें मुंद गईं और उसने फिर अपनी किशोरावस्था का वही दिवा-स्वप्न अधिक स्पष्टता के साथ देखा—उसे कोई सबल पुरुष हलके-से उठाकर लिये चला जा रहा है। इस बार वह उसके साथ बहुत देर तक था और उसे बहुत दूर तक ले गया था। उसकी बाँहों में आते ही अलैक्जेण्ड्रा का दुःख-दर्द दूर हो गया। जब उस पुरुष ने अलैक्जेण्ड्रा को पुनः बिस्तरे पर लाकर लिटाया, अलैक्जेण्ड्रा ने आँखें खोल दीं और अपने जीवन में पहली बार उसे देखा, यद्यपि कमरे में अंधेरा था और उस व्यक्ति का मुँह ढका हुआ था। वह उसके कमरे की ड्योढी में खड़ा था। उसके सफेद चोगे ने उसका मुंह ढक रखा था और उसका सिर कुछ झुका हुआ था। उसके कन्धे इतने बलिष्ठ थे मानों वे पृथ्वी का भार वहन कर सकने में समर्थ हों। उसकी दाहिनी बाँह लोहे की तरह काली और चमकदार थी और अलैक्जेण्ड्रा समझ गई कि वह संसार के सबसे शक्तिशाली प्रेमी की ही बाँह हो सकती है। आखिर आज वह यह जान पाई थी कि इतने

दिनों से किसकी प्रतीक्षा कर रही थी और उसका प्रेमी उसे कहाँ ले जायगा। यह जानकर वह नींद में सो गई।

अगले दिन सुबह जब अलैक्जेण्ड्रा उठी तो उसे बहुत सख्त जुकाम हो चुका था और सरदी के मारे उसका एक कन्धा अकड़ा हुआ था। कई दिनों तक वह बिस्तरे में पड़ी रही और इन्हीं दिनों उसने लिंकन जाकर फ्रैंक शैबेटा से मिलना तय किया। जब उसने फ्रैंक को अदालत में देखा था उसका रूखा चेहरा और उन्मत्त आँखें उसे बार-बार नजर आती थीं। मुकदमा सिर्फ तीन दिन ही चला था। फ्रैंक ने ओमेहा में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करते हुए अपना अपराध स्वीकार किया था। न्यायाधीश ने उसे पूरी सजा दी थी दस साल की और अब वह एक महीने से जेल में था।

बिस्तरे में आलस्य से पड़े रहने और शरीर को पूरा आराम देने से अब अलैक्जेण्ड्रा एमिल की मृत्यु के बाद पहली बार अच्छी तरह सोचने-समझने लगी थी। उसने सोचा कि वह और फ्रैंक ही दो ऐसे व्यक्ति बचे हैं जिन पर उस भयानक दुर्घटना का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। उसे फ्रैंक से निश्चय ही मिलना चाहिए। अदालत में भी उसे फ्रैंक के लिए बहुत दुःख था। वह एक नये प्रदेश में था, न वहाँ कोई उसका सम्बन्धी था, न मित्र और एक ही क्षण में उसने अपना जीवन नष्ट कर डाला। फ्रैंक की बनावट ही ऐसी थी, वह यही करता। मेरी की अपेक्षा वह फ्रैंक को ज्यादा अच्छी तरह समझ पा रही थी। उसे फ्रैंक शैबेटा से मिलने जाना ही होगा, उसने तय किया।

एमिल के दफनाए जाने के दूसरे दिन ही अलैक्जेण्ड्रा ने कार्ल को लिखा था—सिर्फ एक छोटा-सा रुक्का जिसमें केवल दुर्घटना का संक्षिप्त विवरण था। वह ऐसी स्त्री न थी जो इस बारे में ज्यादा कुछ लिख सकती, और वैसे भी वह अपने विचारों को कभी खुलकर व्यक्त नहीं कर पाती थी। उसे मालूम था कि कार्ल डाकखानों से दूर है। कार्ल ने अलास्का जाने से पहले उसे एक चिट्ठी में अपने बारे में लिखा था। जब कई हफ्ते बीत गए और कार्ल का कोई उत्तर न मिला तो अलैक्जेण्ड्रा को ऐसा मालूम

होने लगा कि काल के प्रति उसका दिल सख्त होता जा रहा है। कई बार वह सोचने लगती कि क्या अकेले ही जिन्दगी पूरी कर देना बेहतर न होगा। बाकी जीवन महत्वहीन प्रतीत होता था।

: २ :

अक्तूबर मास की एक सुनहरी दोपहर अलैक्जेण्ड्रा बर्गसां काली पोशाक में लिंकन के रेलवे स्टेशन पर उतरी। वह सीधी लिंडेल होटल पहुँची जहाँ कि दो साल पहले वह एमिल के साथ ठहर चुकी थी। अपने स्वाभाविक आत्मविश्वास को कायम रखते हुए भी उसे होटलों में कुछ अकुलाहट महसूस होती थी, पर जब होटल के रजिस्टर में वह अपना नाम दर्ज करवाने पहुँची तो वहाँ ज्यादा लोग न थे। उसने अपने पूरे कपड़े पहनकर जल्दी ही खाना खा लिया और खाने के बाद बाहर घूमने चली गई।

अगले दिन सुबह नौ बजे वह सरकारी जेल के वार्डन के सामने पेश हुई। वह एक खुशमिजाज जर्मन था और पहले घोड़ों के साज-सामान बनाने का काम किया करता था। अलैक्जेण्ड्रा हैनोवर के एक जर्मन महाजन से उसके नाम चिट्ठी लाई थी। चिट्ठी पढ़कर वार्डन ने पूछा, "आप उस बोहिमियन से मिलने आई हैं? वह मजे में है।"

"मुझे यह जानकर खुशी हुई। मुझे डर था कि कहीं वह झगड़ा करके और किसी आफत में न फँस जाय। अगर आपके पास कुछ वक्त हो तो मैं फ्रैंक शैबेटा के बारे में आपको कुछ बताना चाहती हूँ कि मैं उसमें दिलचस्पी क्यों रखती हूँ।"

वार्डन चुपचाप फ्रैंक का संक्षिप्त इतिहास और उसके चरित्र के बारे में सुनता रहा, पर उसे इस वर्णन में कुछ भी असाधारण न मालूम हुआ।

"अच्छा, मैं उसका खयाल रखूँगा," वार्डन ने उठते हुए कहा। "आप उससे यहीं मिल लें, इतनी देर में मैं रसोई में हो आता हूँ। मैं उसे यहीं भिजवाए देता हूँ। अब तक वह अपनी कोठरी साफ कर चुका होगा।

कैदियों की कोठरियाँ हमेशा साफ रखनी पड़ती हैं।"

वार्डन ने दरवाजे के पास रुककर कैदी के लिबास में एक युवक से बात की जो कि एक कोने में बैठा एक बड़े रजिस्टर में कुछ लिख रहा था।

"जब कैदी नं० १०३७ आये तो तुम बाहर ही रहना और इन्हें बात करने का मौका देना।"

युवक कैदी सिर झुकाकर रजिस्टर में फिर कुछ लिखने लगा।

वार्डन के चले जाने के बाद अलैक्जेण्ड्रा ने कांपते हाथों से काली किनारी का रूमाल अपने बटुए में रखा। रास्ते में आते वक्त फ्रैंक से मुलाकात करने में उसे कतई डर न था; पर जेल की आवाजों और गन्ध ने, कैदियों की शक्लों ने उस पर बुरा असर किया था।

वार्डन की घड़ी टिक-टिक कर रही थी और युवक कैदी की कलम रजिस्टर को खरोंचती जा रही थी। बीच-बीच में वह खांस उठता और साथ ही खांसी रोकने की कोशिश करता था। स्पष्ट था कि वह युवक रोगी है। अलैक्जेण्ड्रा डरी हुई-सी उसे देखती रही पर उसने एक बार भी अपनी गर्दन न उठाई। वह एक धारीदार जाकिट के नीचे एक सफेद कमीज और बड़ी एहतियात के साथ नेकटाई पहने हुए था। उसके हाथ पतले और सफेद थे और ऐसा लगता था कि वह उन्हें बड़ी सावधानी से रखता था। जब उसने पैरों की आहट सुनी तो वह उठ खड़ा हुआ और गरदन उठाए बिना कमरे से बाहर चला गया। उसी वक्त एक पहरेदार फ्रैंक शैबेटा को साथ लिये हुए कमरे में दाखिल हुआ।

"आप ही १०३७ से बात करना चाहती थीं? यह लीजिए यही है। जब आप बात कर लें तो वह सफेद बटन दबा दीजिएगा और मैं इसे लेने चला आऊँगा।"

पहरेदार उन दोनों को उस कमरे में अकेला छोड़कर बाहर चला गया।

अलैक्जेण्ड्रा ने फ्रैंक के बुरे कपड़ों की ओर ध्यान देने की कोशिश न की। वह उसका चेहरा देखती रही पर विश्वास न कर पाई कि वह उसका

ही चेहरा था। उसके चेहरे का रंग मटमैली खड़िया की तरह था, होंठों से खून सूख चुका था और उसके सुन्दर दाँत पीले पड़े हुए थे। उसने उदासी के साथ अलैक्जेण्ड्रा की ओर देखा। उसकी आँखें झँपी जा रही थीं मानो वह अंधेरे से लौटा हो और उसकी एक भौंह तो लगातार फड़कती रही। अलैक्जेण्ड्रा ने उसी वक्त महसूस किया कि फ्रैंक के लिए मुलाकात बहुत कठिन सिद्ध हो रही है। उसका सिर मुडा हुआ था, जिससे उसकी खोपड़ी की बनावट दिखाई दे रही थी। वह दरअसल एक अपराधी नजर आ रहा था।

अलैक्जेण्ड्रा ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, "फ्रैंक" और अचानक अलैक्जेण्ड्रा की आँखें भर आईं। "मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे अपना मित्र समझोगे। मैं जानती हूँ कि तुम्हें ऐसा क्यों करना पड़ा। मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है। उन दोनों की तुमसे ज़्यादा गलती थी।"

फ्रैंक ने अपनी पतलून की जेब से एक गन्दा-सा नीला रूमाल निकाला। वह रोने लगा था। अलैक्जेण्ड्रा की ओर से मुँह फेरते हुए बोला, "मैं उस औरत को मारना नहीं चाहता था। मैं उस लड़के को भी मारना नहीं चाहता था। मैं उस लड़के के खिलाफ न था, वह मुझे हमेशा अच्छा लगता था। और फिर मैंने देखा कि····" फ्रैंक बोलते-बोलते रुक गया। उसका मुख भावनाशून्य हो गया। वह एक कुरसी पर धम से बैठ जमीन में नजर गड़ाए रहा, उसके दोनों हाथ उसके घुटनों के बीच झूलते रहे, उसका नीला रूमाल उसके पैरों के पास पड़ा था। ऐसा प्रतीत होता था कि एक साथ उसे लकवा मार गया है।

"मैं तुम्हें दोषी ठहराने नहीं आई हूँ, फ्रैंक! मैं समझती हूँ उन दोनों का तुमसे ज़्यादा दोष था।" अलैक्जेण्ड्रा की शक्ति भी क्षीण होती जा रही थी।

फ्रैंक खिड़की से बाहर देखते हुए अचानक बोल पड़ा, "मेरी जमीन, जिस पर मैंने इतनी मेहनत की थी, अब तो बरबाद हो रही होगी, पर मुझे कोई परवाह नहीं," उसने एक धीमी, कटु मुस्कान के साथ कहा। वह

अपना सिर मसलने लगा जिस पर बालों के छोटे-छोटे खूँटे उग आए थे। "मैं अपने सिर पर बालों बिना सोच भी नहीं सकता। हम यहाँ बात नहीं करते, गालियाँ देते हैं।"

अलैक्जेण्ड्रा आश्चर्यचकित थी। फ्रैंक का मानो सारा व्यक्तित्व ही एक साथ बदल गया हो। ऐसा कोई भी पुराना चिह्न मौजूद न था जिससे वह अपने उस सुन्दर बोहिमियन पड़ोसी को पहचान सके। फ्रैंक ऐसा लगता था मानो मनुष्य ही न हो। अलैक्जेण्ड्रा समझ न पाई कि उससे क्या बात करे।

"फ्रैंक, तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो?" आखिर उसने पूछा।

फ्रैंक मुट्ठी बाँध उत्तेजित होकर बोला, "मैं किसी भी औरत से नाराज नहीं हो सकता। मैं कहता हूँ, मैं इस तरह का आदमी नहीं हूँ। मैंने अपनी बीवी को कभी न पीटा था, जब उसने मेरे साथ बेहद बुराई की तब भी मैंने उसे न पीटा था।" उसने वार्डन की मेज पर जोर से मुक्का दे मारा। उसकी गरदन और चेहरे पर एक हलका गुलाबीपन दौड़ आया। "दो-तीन साल से मैं जानता था कि उस औरत को मेरी परवाह न थी। मैं यह भी जानता था कि वह और किसी से प्रेम करती है पर मैंने कभी भी उसे मारा-पीटा नहीं। अगर वह बन्दूक मेरे हाथ न आती तो मैं उसे कभी न मारता। वह कहा करती थी कि मैं बन्दूक सँभालने लायक आदमी नहीं हूँ। लेकिन अगर वह घर में होती जहाँ उसे रहना चाहिए था तो.... लेकिन इन सब बातों से क्या फायदा?"

फ्रैंक अपने सिर को मसलकर फिर अचानक रुक गया। अलैक्जेण्ड्रा को ऐसा लगा कि फ्रैंक के मन में अचानक कोई ऐसी चीज उठ खड़ी होती जो सोचने-समझने की शक्ति को एक साथ समाप्त कर देती थी।

"हाँ, फ्रैंक," वह हमदर्दी के साथ बोली, "मैं जानती हूँ कि तुम मेरी को मारना न चाहते थे।"

फ्रैंक के चेहरे पर एक अजीब मुस्कराहट खेल गई और आँखों में आँसू भर आए। "जानती हो, आजकल मैं उस औरत का नाम ही भूल जाता हूँ।

मेरे लिए अब उसका कोई नाम नहीं रहा। मैंने अपनी बीवी से कभी नफरत नहीं की लेकिन वह औरत...। सच कहता हूँ, मैं उससे नफरत करता हूँ। मैं लड़ने वाला आदमी नहीं हूँ। मैं किसी मरद को, किसी औरत को, मारना नहीं चाहता। वह उस पेड़ के नीचे चाहे कितने ही लोगों को अपने साथ सुलाती पर मुझे परवाह न होती, लेकिन मुझे उस लड़के का दुःख है, अलैक्जेण्ड्रा बर्गसां। मैं समझता हूँ मैं पागल हो गया हूँ।"

अलैक्जेण्ड्रा को वह पीली छड़ी याद आई जो उसने फ्रैंक के कपड़ों की अलमारी में देखी थी। वह सोचने लगी कि किस तरह फ्रैंक छैला बनकर इस देश में आया था और वह कितना खूबसूरत था कि ओमेहा की सबसे सुन्दर लड़की उसके साथ भाग खड़ी हुई थी। भाग्य ने फ्रैंक के साथ यह अन्याय किया था कि आज उसे यहाँ आना पड़ा। अलैक्जेण्ड्रा अपने मन में मेरी को कोसने लगी। क्यों ऐसा हुआ कि मेरी जैसी प्रसन्न, स्नेहयुक्त स्वभाव वाली लड़की अपने से प्रेम करने वाले हर व्यक्ति के लिए विनाश और विपत्ति का कारण बनी? यह सबसे अजीब बात थी। तो क्या मेरी की तरह जिन्दा-दिल और जोशीला होना गलत है।

अलैक्जेण्ड्रा उठ खड़ी हुई और फ्रैंक का हाथ पकड़ते हुए बोली, "फ्रैंक शैबेटा, तुम्हें छुड़ाने के लिए-मैं आखिर तक कोशिश करती रहूँगी। गवर्नर को मैं चैन से न बैठने दूँगी। मैं जानती हूँ मैं तुम्हें छुड़ा लूँगी।"

फ्रैंक ने उसकी ओर अविश्वास के साथ देखा पर अलैक्जेण्ड्रा का चेहरा देख उसे विश्वास हो आया और वह बोला, "अलैक्जेण्ड्रा, अगर मैं यहाँ से छूट जाऊँ तो इस देश में फिर किसी को तकलीफ न दूँगा। मैं जहाँ से आया था वहीं चला जाऊँगा—अपनी माँ के पास।"

अलैक्जेण्ड्रा ने अपना हाथ हटाना चाहा पर फ्रैंक अपने कांपते हाथों में उसे पकड़े रहा। "अलैक्जेण्ड्रा," उसने धीरे से कहा, "तुम्हारा यह तो खयाल नहीं कि मैं पहले भी उस लड़की के साथ बुरी तरह पेश आता था।"

"नहीं, फ्रैंक, अब इस बारे में बात न करेंगे," अलैक्जेण्ड्रा ने उसका

हाथ दबाते हुए कहा। "अब मैं एमिल की मदद तो कर नहीं सकती, इसलिए मुझसे जो कुछ बन पड़ेगा तुम्हारे लिए करूँगी। तुम जानते हो कि मैं घर से बाहर ज्यादा नहीं जानती, और मैं यहाँ तुमसे सिर्फ यही कहने आई हूँ।"

वार्डन ने काँच के दरवाजे में से अन्दर झाँककर देखा। अलैक्जेण्ड्रा ने सिर हिलाकर जवाब दिया और उसने कमरे के अन्दर आकर सफेद बटन दबा दिया। तुरन्त ही पहरेदार फ्रैंक को लेने आ गया और उसको जाते देख अलैक्जेण्ड्रा का दिल बैठने लगा।

होटल में घुसते ही अलैक्जेण्ड्रा को होटल के क्लर्क ने उंगली के इशारे से अपनी तरफ बुलाया। अलैक्जेण्ड्रा के नाम एक तार आया था। वह उलझन में पड़ी उस पीले लिफाफे को कुछ देर तक देखती रही और उसे बिना खोले ही अपने कमरे में चली आई। कमरे में आते वक्त उसने सोचा कि अब और कोई विपत्ति उस पर नहीं आ सकती। कमरा अन्दर से बन्द करके और सिंगार-मेज के पास कुरसी पर बैठकर उसने वह तार खोला। लिखा था—

कल रात हैनोवर पहुँचा हूँ। यहीं तुम्हारा इन्तजार करूँगा। जल्दी आओ।

कार्ल लिंस्ट्रम

सिंगारदान पर अपना सिर रख अलैक्जेण्ड्रा फूट-फूटकर रोने लगी।

: ३ :

अगले दिन दोपहर को कार्ल और अलैक्जेण्ड्रा खेतों में से होते हुए श्रीमती हिलर के यहाँ से लौट रहे थे। अलैक्जेण्ड्रा आधी रात को लिंकन से चल दी थी और कार्ल दूसरे दिन सुबह उसे हैनोवर के स्टेशन पर मिला था।

अलैक्जेण्ड्रा ने काली पोशाक उतार दी थी और एक सफेद पोशाक पहन रखी थी, क्योंकि कार्ल को काली पोशाक से कुछ परेशानी हो रही थी

और स्वयं अलैक्जेण्ड्रा भी उससे तंग आ चुकी थी। काले कपड़े उस जेल की तरह थे जहाँ कि उसने कल उन्हें पहन रखा था और खुले खेतों में वे बेमौज़ू नज़र आते थे। कार्ल में बहुत कम तब्दीली हुई थी। उसके गाल भर गए थे और रंग में भूरापन आ गया था। अब वह पहले की तरह थका हुआ बुद्धिजीवी न दिखाई देता था, पर अब भी वह व्यापारी न लगता था। उसकी काली चमकदार आँखें और अजीब मुस्कराहट अलास्का की अपेक्षा इस प्रदेश में उसके खिलाफ पड़ती थीं।

कार्ल और अलैक्जेण्ड्रा सुबह से वार्तालाप कर रहे थे। अलैक्जेण्ड्रा का पत्र कार्ल को न मिला था। उसने सैन फ्रैंसिस्को के एक चार हफ्ते पुराने समाचार पत्र में इस दुर्घटना के बारे में पढ़ा था जिसमें फ्रैंक शैबेटा के मुकदमे का संक्षिप्त विवरण प्रकाशित हुआ था। खबर पढ़ते ही कार्ल ने तुरन्त तय कर लिया था कि अलैक्जेण्ड्रा को पत्र भेजने से पहले वह खुद पहुँच सकता है, और तब से वह दिन-रात चलता ही चला आ रहा था पानी के जहाज और रेलों से रास्ता तय करता हुआ। दो दिन तक उसका स्टीमर खराब मौसम के कारण एक जगह रुका रहा था।

"लेकिन बिना कोई इन्तज़ाम किये तुम इस तरह कैसे चले आए, कार्ल? क्या तुम इतनी आसानी से अपना व्यापार छोड़कर आ सकते हो?" अलैक्जेण्ड्रा ने पूछा।

कार्ल हँस पड़ा। "तुम बहुत समझदार हो, अलैक्जेण्ड्रा! पर मेरा साझीदार बहुत भला आदमी है। मैं हर बात में उसका विश्वास करता हूँ। दरअसल, यह कारोबार शुरू से उसी का है। उसकी मर्जी से ही मैं उसके साथ हूँ। मैं सरदी के बाद लौट जाऊँगा। शायद तुम भी इस बार मेरे साथ चलना पसंद करो। अभी तक हमने लाखों रुपये तो नहीं बनाए हैं पर शुरूआत अच्छी ही की है। यह सरदी मैं तुम्हारे साथ बिताना चाहूँगा। अब तो तुम, एमिल की खातिर और ज्यादा इन्तजार न कराओगी।"

"नहीं, कार्ल," अलैक्जेण्ड्रा सिर हिलाते हुए बोली, "अब मैं यह नहीं

सोचती। अब तुम्हें लू और ऑस्कर की किसी भी बात का बुरा नहीं लगना चाहिए। वे दोनों अब मुझसे एमिल के कारण कहीं ज्यादा गुस्से हैं। उनका कहना है कि सारी गलती मेरी ही थी, मैंने ही उसे कालेज में भेजकर बरबाद किया था।"

"मुझे लू और ऑस्कर की रत्ती-भर भी परवाह नहीं। जैसे ही मुझे मालूम हुआ कि तुम मुसीबत में हो मैंने समझ लिया कि तुम्हें मेरी जरूरत है। लेकिन, क्या अलैक्जेण्ड्रा तुम्हें मेरी अब भी जरूरत है?"

अलैक्जेण्ड्रा उसकी बाँह पर हाथ रखती हुई बोली, "जब यह सब हुआ था, मैंने तुम्हारी बहुत जरूरत महसूस की थी। रात को मैं तुम्हारे लिए रोती थी। परन्तु धीरे-धीरे मेरा दिल सख्त हो गया और मैंने सोचा कि अब मुझे तुम्हारी जरूरत फिर कभी न पड़ेगी। लेकिन जब कल तुम्हारा तार मिला तो—तो वही पुरानी हालत हो गई। इस दुनिया में तुम्हारे अलावा मेरा और कौन है, कार्ल?"

कार्ल ने धीरे से उसका हाथ दबाया। वे शैबेटा के खाली घर के पास से गुजर रहे थे पर बगीचे का रास्ता छोड़ वे चरागाह के तालाब की ओर से आने लगे।

"क्या तुम मेरी टोवेस्की से यह आशा कर सकते थे? मैं तो उसके साथ विश्वासघात करने से पहले टुकड़े-टुकड़े हो जाती।"

कार्ल तालाब के चमकते हुए पानी की ओर देखता हुआ बोला, "शायद मेरी भी टुकड़े-टुकड़े हो चुकी थी, अलैक्जेण्ड्रा! मेरा विश्वास है कि दोनों ही ने अपने-आपको रोकने की भरसक कोशिश की थी। इसीलिए एमिल मैक्सिको गया था और, जैसा कि तुमने बताया, वह घर में सिर्फ तीन हफ्ते रहकर फिर चले जाने की तैयारी में था। तुम्हें वह इतवार याद है जब मैं एमिल के साथ धार्मिक मेले में गया था। मैंने उस दिन ही उन दोनों के बीच एक असाधारण-सी भावना पाई थी। लेकिन लौटते वक्त लू और ऑस्कर मिल गए और उन्होंने मुझे इतना नाराज कर दिया कि मैं सब-कुछ भूल गया। आओ, यहाँ तालाब के किनारे एक मिनट

बैठें। मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ।"

वे तालाब के किनारे घास पर बैठ गए और कार्ल ने बताया कि एक साल पहले एक दिन सुबह उसने मेरी और एमिल को यहीं देखा था और वे दोनों कितने जवान और खूबसूरत दिखाई दे रहे थे। "कई बार दुनिया में ऐसा ही होता है, अलैक्जेण्ड्रा! मैंने पहले भी ऐसा देखा है। कई ऐसी औरतें होती हैं जो, बिना अपनी गलती, सब तरफ़ बरबादी लाती हैं; उनकी सिर्फ यही गलती होती है कि वे खूबसूरत होती हैं, उनकी जिन्दगी में जोश और मुहब्बत भरी होती है। लोग उनकी तरफ इसी तरह खिंचे चले आते हैं जिस तरह सरदियों में आग की तरफ।"

अलैक्जेण्ड्रा ने एक गहरी आह भरते हुए कहा, "हाँ, मैं जानती हूँ कि लोग उसे प्रेम किए बिना न रह सकते थे। मैं समझती हूँ कि फ्रैंक उससे अब भी प्रेम करता है, पर वह एक ऐसी उलझन में फंस गया है कि उसका प्रेम उसकी घृणा से ज़्यादा कड़वा है। लेकिन कार्ल, अगर तुम इस बारे में कुछ भी जानते थे तो तुम्हें बताना चाहिए था।"

कार्ल उसका हाथ पकड़कर धीरे से मुस्कराता हुआ बोला, "प्रिये, वह ऐसी चीज़ थी जो हवा में मिली महसूस होती है, जैसे कि वसन्त का आगमन या गरमियों में तूफान का आना। मैंने अपनी आँखों से कुछ न देखा था। लेकिन जब मैं उन दोनों के साथ होता तो मुझे अपना खून तेज़ी से दौड़ता मालूम पड़ता। कैसे बताऊँ मैं क्या कहना चाहता हूँ? मुझे ऐसा लगता मानो मेरी जिन्दगी की रफ्तार बढ़ गई हो।"

जब वे दोनों वहाँ से उठकर चलने लगे तो पश्चिम में सूरज डूब रहा था। घास के गट्ठरों की लम्बी छायाएँ पड़ रही थीं और पक्षी अपने घर लौटने लगे थे।

"कार्ल," अलैक्जेण्ड्रा बोली, "इस सरदी के बाद मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। बचपन में एक बार समुद्र पार कर यहाँ आने के बाद से मैंने फिर कभी समुद्र-यात्रा नहीं की। यहाँ आने के बाद मैं अक्सर उस बन्दरगाह के सपने देखा करती थी जहाँ पिताजी काम किया करते थे।" वह चुप हो

गई और एक क्षण सोचने के बाद बोली, "लेकिन तुम मुझे यहाँ से हमेशा के लिए तो नहीं ले जाओगे ?"

"नहीं प्रिये, नहीं। मैं जानता हूँ यह जगह तुम्हें कितनी प्यारी है।" कार्ल अपने दोनों हाथों में उसका हाथ लेकर सहलाने लगा।

"हाँ, मुझे यह जगह दरअसल प्यारी है, हालांकि अब एमिल नहीं रहा। मैं यहाँ बहुत दिन रही हूँ। यहाँ शान्ति है, कार्ल, और स्वतन्त्रता।"

"तुम धरती की बेटी हो," कार्ल ने धीरे से कहा।

वे चरागाह के आखिरी टीले पर पहुँचकर रुक गए जहाँ से जॉन बर्गसां के मकान, बाड़ी और अस्तबलों की हद शुरू होती थी। चारों ओर से धरती की भूरी लहरें आकाश से मिलने उठ रही थीं।

"लू और ऑस्कर इन चीजों को नहीं देख सकते," अलैक्जेण्ड्रा अचानक बोल उठी। "अगर मैं अपनी जमीन उनके बच्चों के नाम कर भी दूँ तो क्या फर्क होगा ? धरती भविष्य की है, कार्ल, मैंने हमेशा यही सोचा है। पचास साल में पटवारी के खाते में न जाने कितने नाम दर्ज हो जायँगे। अगर मैं अपने भाइयों के बच्चों के नाम सूर्यास्त कर दूँ तो उससे क्या होता है ? हम आते-जाते हैं, पर धरती सदा बनी रहती है। और जो लोग धरती से प्रेम करते हैं और इसे समझते हैं वे ही इसके मालिक हैं—पर वह भी थोड़ी देर के लिए ही।"

अलैक्जेण्ड्रा की दृष्टि अब भी पश्चिम की ओर थी और उसके मुख पर वह शान्ति विराज रही थी जो कि अक्सर गम्भीर विचार के समय उसके मुख पर आ जाती थी। डूबते सूरज की सुनहरी किरणें उसकी निर्मल आँखों में चमकने लगीं।

"लेकिन तुम इस वक्त यह सब क्यों सोच रही हो, अलैक्जेण्ड्रा ?

"लेकिन जाने से पहले मैंने एक सपना देखा था। इसके बारे में मैं तुम्हें बाद में बताऊँगी—शादी के बाद।" उसने कार्ल की बांह पकड़ ली और वे लोग साथ-साथ घर के दरवाजे की ओर बढ़ने लगे।

दरवाजा खोलने से पहले कार्ल ने अलैक्जेण्ड्रा को अपनी बाहों में

ले लिया और उसके होठों और उसकी आँखों को चूमने लगा।

वह उसके कन्धे पर झूल गई। "मैं बहुत थकी हुई हूँ। कार्ल, मैं इतने दिनों से बहुत अकेली थी।"

धन्य है वह देश जिसकी धरती में एक दिन अलैक्जेण्ड्रा जैसे हृदय समा जायँगे और फिर वे ही हृदय गेहूँ के पीले-पीले खेतों में, लहराती मकई में और युवक-युवतियों की आँखों में पैदा होकर चमकेंगे।